वार्षिक रिपोर्ट

1976–77

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

विषय-सूची

कृतज्ञता ज्ञापन

परिषद्, शिक्षा तथा समाज कल्याण के केन्द्रीय मंत्री द्वारा परिषद् के कार्यों में गहरी रुचि लेने के लिए अत्यन्त कृतज्ञ है। परिषद्, शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय को उनके द्वारा प्रतिवेदन वर्ष में समय-समय पर दी गयी सुविधाओं के लिए भी आभारी है। परिषद् उन सभी विशेषज्ञों के प्रति कृतज्ञ है जो उसकी समितियों में रह कर अपना बहुमूल्य समय उसके कार्यों के लिए देते रहे हैं और अन्य कई प्रकार से परिषद् की सहायता करते रहे हैं। परिषद् उन सभी संगठनों व संस्थाओं और विशेषकर राज्य-शिक्षा-विभागों के प्रति भी कृतज्ञ है, जिन्होंने उसके कार्यकलापों को चालू रखने में सहयोग दिया है। परिषद् यूनेस्को, यूनीसेफ, यू० एन० डी० पी० और ब्रिटिश कौंसिल की भी कृतज्ञ है, जिन्होंने सहायता प्रदान की है।

1

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् इसका कार्य और भूमिका

1.1 परिचय

शिक्षा के—विशेष रूप में स्कूल शिक्षा के रूप-परिवर्तन के प्रयोजन से स्वातंत्र्य-पूर्व युग में भारत सरकार द्वारा स्थापित आधा दर्जन से अधिक संस्थाओं के कार्य-कलापों को समन्वित करके रा० शै० अ० और प्र० प० की स्थापना दिनांक 1 सितम्बर, 1961 को की गई थी। तथापि यह गतिहीन नहीं रही। इसने समय-समय पर नई चुनौतियों का प्रत्युत्तर दिया है, और यह नई राष्ट्रीय आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप स्वयं का विकास और पुनर्रचना करती रही है।

रा० शै० अ० और प्र० प० सोसायटीज पंजीकरण अधिनियम (सन् 1860 के अधिनियम 21) के अन्तर्गत पंजीकृत संस्था है। संस्था के विवरण-पत्र में अंकित है कि :

(1) परिषद् का उद्देश्य शिक्षा के—विशेष रूप में स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में अपनी नीतियों और प्रमुख कार्यक्रमों के अनुपालन में शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय को सहायता और सलाह देना होगा।

(2) इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए परिषद् निम्नलिखित कार्यक्रमों और कार्यकलापों में से एक अथवा सभी को कर सकती है :

- (अ) शिक्षा के सभी क्षेत्रों में अनुसंधान करना अथवा करवाने के लिए सहायता, बढ़ावा और समन्वय प्रदान करना।
- (आ) सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन प्रशिक्षण का, खासतौर से उच्च-स्तर पर, आयोजन करना।
- (इ) शैक्षिक अनुसंधान में लगे हुए देश के संस्थानों के लिए विस्तार-सेवाओं का, अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण का और स्कूलों के लिए विस्तार-सेवाओं का आयोजन करना।
- (ई) सुधरी हुई विधियों और प्रयोगों को स्कूल में विकसित और प्रचारित करना।

1.2 संरचना

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए परिषद् की संरचना जिस प्रकार से की गई है वह सारणी I में दिखाई गई है। मोटे तौर पर परिषद् के दो पक्ष या खण्ड हैं—

(क) सचिवालय जो समन्वय और परिचर्या की व्यवस्था करता है और (ख) विविध संघटक या अंगीभूत जो स्कूल शिक्षा के विविध पक्षों में सुधार लाने के काम करते हैं।

संघटकों या अंगीभूतों में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की स्थिति सबसे प्रतिष्ठापरक है। इसकी स्थापना अनुसंधान के विकास, प्रशिक्षण एवं विस्तार-सेवाओं की व्यवस्था के लिए हुई है। देश के स्कूलों को शिक्षा की गुणवत्ता के सुधार के लिए काम करने वाला यह एक प्रमुख संस्थान है। इसके अन्तर्गत अनेक विभाग हैं जिन्हें सारिणी I में दिखाया गया है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के अन्तर्गत अंगीभूतों का जो विभाजन किया गया है, उसके अनुसार अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर एवं मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय आ जाते हैं। इन चारों का कार्यक्षेत्र अध्यापक-प्रशिक्षण का है—सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन दोनों ही रूपों में। इस क्षेत्र में वे देश के लिए अगुवा बन कर काम करते हैं। उन्हीं की बनाई लीक पर देश के अन्य स्कूल चलते हैं। इन महाविद्यालयों ने अध्यापक-प्रशिक्षण में न केवल एक समाकलित मार्ग बनाया है अपितु कई ऐसे कोर्स भी चालू किए हैं, जो लीक से हट कर हैं।

शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र को भी क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय का दर्जा मिला हुआ है। यह शैक्षिक प्रौद्योगिकी की सभी शाखाओं-प्रशाखाओं के क्षेत्र में काम कर रहा है। इसने 'साइट' (सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरीमेण्ट—उपग्रह शैक्षणिक दूरदर्शन प्रयोग) को भी सक्रिय सहयोग प्रदान किया है।

वह संघटक या अंगीभूत जो राष्ट्रीय परिषद् और राज्य शैक्षिक एजेंसियों के बीच मजबूत कड़ी का काम कर रहा है, क्षेत्रीय सलाहकारों का कार्यालय है। ऐसे कार्यालय फिलहाल अठारह हैं उनके पते परिशिष्ट-क में दिए गए हैं। वे रा० शै० अ० प्र० प० की नीतियों और कार्यक्रमों का राज्यों में प्रचार और प्रसार करते हैं, साथ ही वहाँ से मूल्यांकन और सुधार के लिए सामग्री भी भेजते हैं।

1.3 कार्यविधि

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की कार्यविधि पूर्णत: जनतंत्रीय प्रणाली पर आधारित है। परिषद् के लिए निर्णय लेने की जो कार्यप्रणाली है उसके अन्तर्गत अनेक समितियां आ जाती हैं। इनको सारणी II में दिखाया गया है। सर्वोच्च निकाय 'परिषद्' है जिसके अध्यक्ष केन्द्रीय शिक्षा मंत्री हैं और सभी राज्यों/संघ क्षेत्रों के शिक्षा मंत्री सदस्य हैं। परिषद् वर्ष में कम से कम एक बार अवश्य अपनी बैठक बुलाती है। रा० शै० अ० प्र० प० के मामलों का प्रशासन एक छोटे शासी निकाय द्वारा होता है जिसे कार्यकारी समिति कहते हैं। यह समिति सामान्यतया स्थायी समितियों और कार्यक्रम सलाहकार समिति के माध्यम से अपने कार्य करती है। इन समितियों के सदस्यों की सूचियाँ परिशिष्ट-ख में दी गयी हैं। इन समितियों द्वारा किए गए महत्त्वपूर्ण निर्णय परिशिष्ट-ग में दिए गए हैं।

परिषद् के सभी कार्यक्रमों को देखने-भालने और परिषद् के विभिन्न कार्यक्रमों के लिए मार्गदर्शी रेखाओं व प्राथमिकताओं का निर्धारण करने के लिए मुख्य

शैक्षणिक निकाय कार्यक्रम सलाहकार समिति है। कार्यक्रम सलाहकार समिति द्वारा निर्धारित मार्गदर्शन को ध्यान में रखकर ही विभिन्न अन्य समितियों और मंडलों द्वारा परिषद् के कार्यक्रमों पर विचार किया जाता है। सर्वप्रथम विचार और अनुमोदन कार्य रा० शि० सं० के प्रत्येक विभाग/एकक के विभागीय सलाहकार मण्डल को करना होता है। कर्मचारी वर्ग द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रमों का विभागीय सलाहकार मण्डल द्वारा अनुमोदन हो जाने के बाद परिषद् की प्राथमिकताओं को दृष्टि में रखते हुए अन्तर्विभागीय समन्वय और मूल्य-निर्धारण के प्रयोजन से अनुमोदन के द्वितीय स्तर पर, उस पर शैक्षणिक समिति/समन्वय समिति/शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) विचार करती है।

शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति डीन (अनुसंधान) की अध्यक्षता में निश्चित अनुसंधान कार्यक्रम पर विचार कर उसे स्वीकृत करती है। रा० शै० अ० प्र० प० के अनुसंधान कार्यक्रमों के अलावा यह बाहर के अनुसंधान प्रस्तावों को भी शैक्षणिक और वित्तीय सहायता हेतु स्वीकार करती है।

शैक्षणिक समिति डीन (शैक्षणिक) की अध्यक्षता में शैक्षणिक विभागों और एककों के विकासात्मक और प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर विचार करती है और उनमें समन्वय स्थापित करती है जबकि समन्वय समिति, जिसके अध्यक्ष डीन (समन्वय) होते हैं, सेवा और उत्पादन विभागों के कार्यक्रमों पर विचार करती है। क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के लिए भी एक समन्वय समिति है। इसके प्रमुख भी डीन (शैक्षणिक) हैं। इसकी स्थापना इसलिए हुई है कि सभी क्षेत्रीय महाविद्यालयों के कार्यक्रमों में समन्वय बना रहे।

परिषद् के कार्यों का वर्गीकरण मोटे रूप में, अनुसंधान, प्रशिक्षण, विकास, मूल्यांकन और प्रचार के अन्तर्गत किया जा सकता है। इसकी उपलब्धियों को पाठ्यचर्या, शिक्षा की विधियों और सहायक (साधनों), शिक्षा-सामग्री (पाठ्यपुस्तकों, अध्यापकदर्शिकाओं, किटों, जरनलों आदि सहित) प्रशिक्षित कार्मिकों (उदाहरणार्थ अध्यापक-प्रशिक्षकों, अध्यापकों, विशेषज्ञों आदि सहित) के रूप में समझा जा सकता है।

1.4 कर्मचारी वर्ग

परिषद् में शैक्षणिक और अशैक्षणिक कर्मचारी वर्ग का पर्याप्त बड़ा भाग है। शैक्षणिक कर्मचारी वर्ग न्यूनाधिक रूप में केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के समान ही अधिशासित होता है जबकि अशैक्षणिक कर्मचारी वर्ग केन्द्रीय मंत्रालयों के समान बनाए गए नियमों के अन्तर्गत है। वर्ष सन् 1976-77 में, परिषद् के मुख्य कार्यकर्ता निम्नलिखित हैं :

निदेशक : प्रोफेसर रईस अहमद

संयुक्त निदेशक : प्रोफेसर शिब के० मित्र

सचिव : (श्रीमती) जे० अंजनि दयानन्द (सितम्बर 7, 1976 तक)
श्री बी० आर० द्रवीड़ (उसके बाद)

डीन : (शाखाध्यक्ष)

1. अनुसंधान : प्रोफेसर शिब के० मित्र

2. शैक्षणिक : " आर० सी० दास

3. समन्वय : डा० आर० जी० मिश्र

भूमिका

भारत की स्कूली शिक्षा में रा० शै० अ० प्र० प० को एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। उपयुक्त शैक्षिक सामग्री का निर्माण और अध्यापक-अनुस्थापन के कार्यक्रमों का आयोजन करके केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार मण्डल द्वारा प्रारम्भ की गयी शिक्षा नीतियों का अनुपालन करना परिषद् सम्भव करती है। वर्षों के अनुभव के साथ-साथ इसने अपना महत्त्व और दर्जा भी बढ़ा लिया है। आज यह शिक्षा के विविध क्षेत्रों में कौशल हासिल कर चुकी है।

वर्तमान संधिकाल में भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय परिषद् की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो उठी है जब देश शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन की प्रक्रिया में से गुजर रहा है। परिषद् देश में शिक्षा के रूपान्तरण में प्रोत्साहन और तीव्रता लाने के लिए मुख्य रूप से जिम्मेवार है। इसने समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा को ढालने के लिए स्कूली शिक्षा को 10+2 प्रणाली की जरूरतों से मेल खाते हुए पाठ्यक्रम का संशोधन प्रारम्भ कर दिया है और राष्ट्रीय उद्देश्यों की उपलब्धि में जुट गया है।

गुणात्मक सुधार के लिए शैक्षिक अनुसंधान अपरिहार्य है। यह परिषद् के प्रमुख उद्देश्यों में से है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों में किए जाने वाले अनुसंधान के अलावा भी परिषद् ने बाहर के अनुसंधान को बढ़ावा दिया है। परिषद् अपने यहाँ और बाहर के शोध-अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए एरिक के माध्यम से वित्तीय सहायता देती रही है। एरिक ने 1974-77 की अवधि में बाहर की एजेन्सियों द्वारा प्रवर्तित 75 परियोजनाओं को वित्त दिया है जिनमें कुल रु० 7,24,000.00 खर्च हुए हैं। 1976-77 के दौरान जिन शोध परियोजनाओं को परिषद् ने स्वीकृत किया है और वित्त दिया है, उनकी सूची **परिशिष्ट-घ** में दी गई है। आगे के अनुभागों में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की अनुसंधान योजनाओं के बारे में यथास्थान दिया गया है। विभागीय अनुसंधान परियोजनाओं पर कुल खर्च, 1976-77 में, रु० 5,36,000,00 था।

शैक्षिक विकास के क्षेत्र में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का विशिष्ट स्थान है। परिषद् ने आदर्श पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया है। मूल प्रत्ययात्मक साहित्य का विकास किया है और विज्ञान किटों का उत्पादन किया है। इस क्षेत्र में परिषद् का योगदान अक्षुण्ण है। वास्तव में नए पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में तो परिषद् ने अभूतपूर्व भूमिका निभाई है।

राष्ट्रीय परिषद् नए परिवर्तनों को अध्यापकों तक प्रशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रमों द्वारा पहुँचाती है। ये कार्यक्रम किसी भी प्रकार से कम महत्त्व के नहीं हैं।

सारणी I

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की संरचना

रा० शै० अ० प्र० प०

- सचिवालय
  - स्थापना अनुभाग
  - कार्यक्रम अनुभाग
  - भर्ती अनुभाग
  - क्षे० शि० म० एकक
  - परिसर एवं कल्याण अनुभाग
  - समिति एवं संसद अनुभाग
  - सामान्य अनुभाग
  - क्रय अनुभाग
  - चौकसी (सतर्कता)
  - जन सम्पर्क
  - लेखा शाखा
- संघटक या अंगीभूत
  - राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान
    - (शैक्षणिक विभाग)
      - स्कूल शिक्षा विभाग
      - विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
      - सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
      - अध्यापक शिक्षा विभाग
      - शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा-आधार विभाग
    - (एकक/प्रकोष्ठ)
      - राष्ट्रीय प्रतिभा खोज एकक
      - सर्वेक्षण एवं आधार सामग्री
      - प्रक्रियन एकक
      - नीति नियोजन एवं मूल्यांकन एकक
      - पुस्तकालय तथा प्रलेखन एकक
      - कार्य अनुभव और शिक्षा व्यवसायीकरण एकक
      - परीक्षा सुधार एकक
      - परीक्षा अनुसंधान एकक
      - प्रारम्भिक पाठ्यचर्या विकास प्रकोष्ठ
      - पत्रिका प्रकोष्ठ
    - (सेवा/उत्पादन विभाग)
      - पाठ्यपुस्तक विभाग
      - शिक्षण साधन विभाग
      - प्रकाशन विभाग
      - कार्यशाला (वर्कशॉप) विभाग
  - क्षे० शि० म०
    - अजमेर
    - भोपाल
    - भुवनेश्वर
    - मैसूर
  - शैक्षिक प्रौद्योगिकी केन्द्र
  - क्षेत्रीय सलाहकार के कार्यालय
    - अहमदाबाद
    - इलाहाबाद
    - कलकत्ता
    - गौहाटी
    - चंडीगढ़
    - जयपुर
    - त्रिवेन्द्रम
    - दिल्ली
    - पटना
    - पूना
    - बंगलौर
    - भोपाल
    - भुवनेश्वर
    - मद्रास
    - हैदराबाद
    - अगरतला
    - इम्फाल
    - श्रीनगर

परिषद् के विभिन्न विभागों द्वारा प्रशिक्षण तथा विस्तार और अनुसंधान तथा विकास के क्षेत्र में किए गए कार्यों का विवरण आगे के पृष्ठों में यथास्थान मिलेगा।

स्कूली शिक्षा के सुधार का काम परिषद् स्वयं तो करती ही है, साथ ही वह देश के उन पेशेवर शैक्षिक संगठनों की मदद भी करती है जो स्कूली शिक्षा से सम्बन्धित कामों को हाथ में लेते हैं। वित्तीय सहायता के इस काम को परिषद् पिछले कई वर्षों से करती आ रही है। 1976-77 के दौरान परिषद् द्वारा विभिन्न पेशेवर संगठनों को प्रदान की गयी वित्तीय सहायता का विवरण **परिशिष्ट-ङ** में मिलेगा।

भारत सरकार अन्य देशों की सरकारों से जिन द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के लिए हस्ताक्षर करती है, परिषद् उनका अनुपालन करने वाली एजेंसियों में से एक है। इस प्रकार, परिषद् अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप विशिष्ट शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करने के लिए अन्य देशों को शिष्टमंडल भेज कर और विकासशील राष्ट्रों से विदेशी राष्ट्रीय व्यक्तियों को प्रशिक्षण देकर अन्य देशों के साथ शैक्षिक विचारों का दु-तरफा प्रवाह विनियमित करती है।

सारणी II

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की कार्यविधि
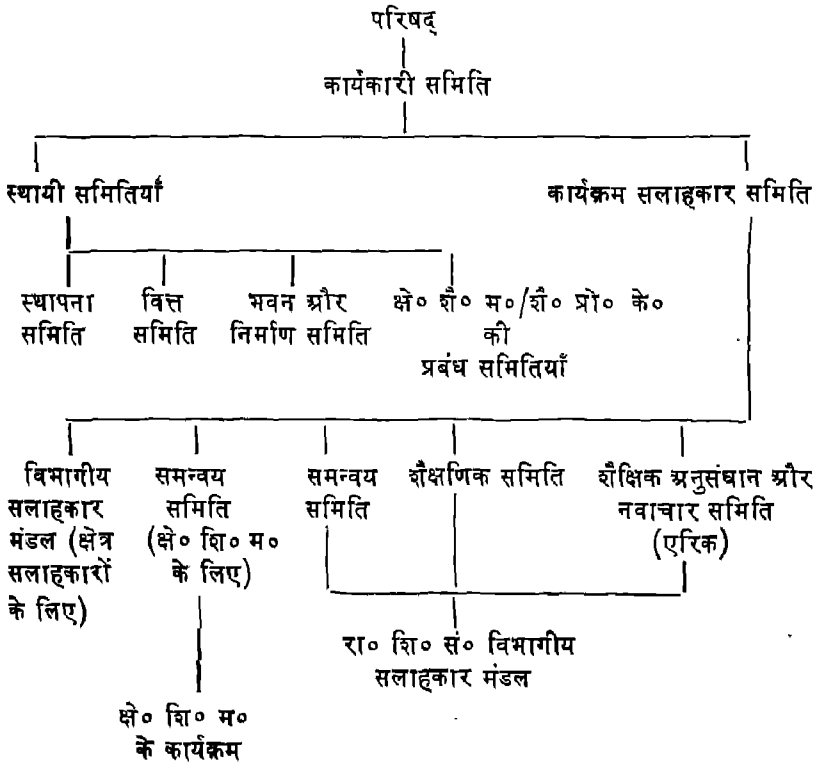
परिषद् उन विदेशी व्यक्तियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था करती है जो विभिन्न द्विपक्षी सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अन्तर्गत मन्त्रालय द्वारा अथवा यूनेस्को द्वारा प्रवर्तित होते हैं। समय-समय पर यह अपने अधिकारियों को विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए भेजती भी है। परिषद् की शैक्षिक गतिविधियों को देखने के लिए विदेशी अतिथि एवं शिष्टमण्डल प्रायः ही यहाँ आया करते हैं। इस प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान के विस्तृत विवरण **परिशिष्ट-च** में मिलेंगे।

रा० शै० अ० और प्र० प० स्कूली शिक्षा में गुणात्मक सुधार के उद्देश्य से पाठ्यपुस्तकों, अध्यापकदर्शिकाओं, पूरक पठन-सामग्री, अनुसंधान मोनोग्राफी, शैक्षिक सर्वेक्षणों, पत्रिकाओं आदि को तैयार और प्रकाशित करती है। इन सामग्रियों के विवरण *भाग 2.8 में दिए गए हैं।*

2

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान

2.1 विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग

"दस-वर्षीय स्कूल पाठ्यचर्या—एक रूपरेखा" नामक राष्ट्रीय दस्तावेज में दर्शायी दार्शनिकता और उद्देश्यों को कार्यरूप देने में ही विभाग का 1976-77 वर्षावधि का मुख्य कार्य रहा है। शिक्षा की नई 10+2 पद्धति से सम्बन्धित अपनाए गए कार्यक्रमों का ब्यौरा निम्नलिखित है :

(अ) पाठ्यचर्या विकास :

(1) तेईस पाठ्यपुस्तकों और दो अध्यापकदर्शिकाओं (13 अंग्रेजी व 12 हिन्दी) का विकास किया गया है। सूची नीचे दी गई है :

श्रेणी	पाठ्यपुस्तक	रूपान्तरण
1 व 2		(अं०=अंग्रेजी, हि०=हिन्दी)
(पर्यावरण सम्बन्धी अध्ययन पर अध्यापकदर्शिका)	—	अं० हि०
3	पर्यावरण सम्बन्धी अध्ययन	अं० हि०
6	एकीकृत (इंट्रीग्रेटेड) साइंस	अं० हि०
6	गणित	अं० हि०
9	गणित	अं० हि०
9-10	1. भौतिकी	अं० हि०
	2. रसायन	अं० हि०
	3. जीव विज्ञान	अं० हि०
11	1. भौतिकी	अं० हि०
	2. रसायन	अं० हि०
	3. जीव विज्ञान	अं० हि०
	4. गणित	अं० हि०
	5. विज्ञान और समाज	अं०

ये पुस्तकें केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली से सम्बन्धित स्कूलों में 1977 शैक्षणिक वर्ष से पढ़ायी जा रही हैं।

(2) दस-वर्षीय स्कूल के लिए विज्ञान-पाठ्यचर्या के प्रायोगिक अंशकृत में एक नई दृष्टि अपनाई जाने वाली है जिसमें उपलब्ध पर्यावारिक स्रोत, विज्ञान कार्यकलापों/प्रयोगों में सस्ती देशी सामग्री का निर्माण व उपयोग विचारणीय होगा।

प्रयास किया जा रहा है कि विज्ञान को भौतिकी, रसायन तथा जीव-विज्ञान की पृथक्-पृथक् अवयवों में सोचने की अपेक्षा विज्ञान के एक सम्पूर्ण रूप पर ही विचार किया जाए।

(आ) ग्रीष्मकालीन विज्ञान संस्थान

मई, जून, जुलाई 1976 में आयोजित ग्रीष्म विज्ञान संस्थाओं का मुख्य ध्यान उन राज्यों की सहायता करना था जो शिक्षा की 10+2 पद्धति का अनुसरण कर रहे थे अथवा उस पद्धति को लागू करने का विचार कर रहे हैं।

कुल मिला कर, ऐसे 120 ग्रीष्म विज्ञान संस्थान आयोजित हुए जिनमें लगभग 5,000 अध्यापकों को अनुस्थापित किया गया था। ग्रीष्म संस्थानों की संख्या का विधा-अनुसार ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है :

विषय	ग्रीष्म विज्ञान संस्थानों की कुल संख्या	राज्य-स्तर की संस्थानों की संख्या	शिक्षा की 10+2 पद्धति के अधीन संख्या
भौतिकी	27 (1088)	12 (531)	15 (557)
रसायन	28 (1174)	13 (595)	15 (579)
जीव विज्ञान	27 (1077)	12 (492)	15 (585)
गणित	35 (1562)	16 (733)	19 (829)
विज्ञान	3 (125)	3 (125)	—

(कोष्ठकों में दी गई संख्या उन अध्यापकों की है जिन्हें प्रशिक्षित किया गया)

(इ) विकासात्मक परियोजनाएँ

(क) **स्रोत और समस्याएँ**—कक्षा में पढ़ाने वाले अध्यापकों हेतु गुटके (हैण्डबुक) विकसित करने वाली यह एक शोधकारी परियोजना है। "एरिक" द्वारा समर्पित इस परियोजना ने निम्नलिखित कदम उठाए :

(1) कक्षा 1 से 12 के पाठ्य-विवरणों का, जो रा० शै० अ० प्र० प० द्वारा तैयार किए गए हैं, और राज्यों के पाठ्य-विवरणों का विश्लेषण।

(2) इस विश्लेषण में विषय-वस्तु की पहचान, आधारभूत सिद्धान्त, मूल संस्थानात्मक उद्देश्य, और जिन मूल्यों व योग्यताओं की प्राप्ति करनी है, उन्हें समाविष्ट किया गया है।

(3) पर्यावरण सम्बन्धी अवस्था, स्थिति और अध्यापक को तात्कालिक पर्यावरण का उपयोग करने की आवश्यकता का यादृच्छिक नमूना बनाने के लिए प्रश्नावली की तैयारी करना। पाठ्य-विवरण के विश्लेषण के आधार पर प्रश्नावली का प्रारूप तैयार किया गया था।

(4) कई संदर्भ-सामग्रियों को देखा-भाला गया था और कुछ संग्रहीत की गई थीं। इनमें जरनल, पत्र-पत्रिकाएँ, पुनर्मुद्रण और समाचार-पत्रों की कतरने हैं।

(5) उन विभिन्न संस्थानों से सम्पर्क किया गया था जहाँ पर्यावरण-अध्ययन चल रहे हैं। 'वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फंड' से एक दल विभाग में भ्रमण हेतु आया था और उससे विचार-विमर्श किया गया। 'मैन एण्ड बायोस्फीअर प्रोग्राम' के साथ सम्पर्कों के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के साथ चर्चा की गई थी। विभिन्न अन्य अभिकरणों से संपर्क करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

(ख) **शिक्षण-साधन**—"पर्यावरण के माध्यम से विज्ञान शिक्षण" शीर्षक फिल्म शिक्षण साधन विभाग के सक्रिय सहभाग से पूरी की गई। दो अन्य फिल्में "अण्डर-स्टैंडिंग एनिमल्स" और "सैल फिजियालोजी एंड फन्क्शन", विकास के अन्य चरणों में थीं। इनके अतिरिक्त, कुछ फिल्में हिन्दी में भी (डब) प्रदान की गई हैं।

(ई) राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी

जवाहरलाल नेहरू स्मारक निधि के सहभागी होकर 14 से 23 नवम्बर, 1976 तक तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली में छठी राष्ट्रीय बाल विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की गयी। वहाँ प्रदर्शित की गई अधिकांश वस्तुएँ राज्य-स्तरों से तथा 1975 में आयोजित विभिन्न क्षेत्रीय प्रदर्शनियों में से थीं।

साथ ही, भूतान के प्रतिभागियों ने भी प्रदर्शनी में भाग लिया।

दिल्ली में राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी के अतिरिक्त, रा० शै० अ० प्र० प० ने विभिन्न राज्यों और संघ क्षेत्रों में 23 राज्य-स्तरीय प्रदर्शनियों के आयोजन में भी सहायता प्रदान की।

प्रतिभागियों के लाभ के लिए दो प्रसिद्ध भाषणों का आयोजन किया गया था। टी० आई० एफ० आर० के प्रोफेसर जे० वी० नर्लीकर ने "ब्रह्माण्ड किस प्रकार है?" विषय पर बड़ा प्रेरक भाषण दिया। मद्रास विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सी० वी० सुब्रामनियम ने "मौल्ड्स, मिल्ड्यूस, मशरूम और आप" पर विचार व्यक्त किए।

(उ) अन्य संगठनों के साथ सहभाग

1. सितम्बर-अक्तूबर, 1976 में सभी राज्यों और संघ क्षेत्रों से संसाधन व्यक्तियों को अनुस्थापित करने के लिए राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद और राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, त्रिवेन्द्रम में दो कार्यक्रम किए गए थे। विभिन्न राज्यों, क्षे० शि० महाविद्यालय, भोपाल और किशोर भारती के लगभग 60 विशेषज्ञों ने इन पाठ्यक्रमों में भाग लिया था। कार्यक्रम के प्रतिभागियों ने कक्षा 1-II हेतु पर्यावरण सम्बन्धी अध्ययन की अध्यापक पुस्तिका की विषय-वस्तु भी विकसित की। इन कार्यक्रमों में सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग के शैक्षणिक कर्मचारी वर्ग तथा यूनिसेफ के अधिकारियों ने भी सहयोग किया।
2. उत्तर प्रदेश माध्यमिक संघ के लगभग 200 अध्यापकों को हरिद्वार में जून, 1976 में आयोजित एक संगोष्ठी में शिक्षा की 10+2 पद्धति के अन्तर्गत विज्ञान शिक्षा कार्यक्रमों की जानकारी दी गई।

3. 130 प्राथमिक अध्यापकों के एक समूह को भी नगरनिगम, दिल्ली और भारतीय स्कूल-पूर्व शिक्षा संघ के सहभाग से पर्यावरणात्मक अध्ययन के उपागम पर प्रशिक्षित किया गया था।
4. विभाग के शैक्षणिक-सदस्यों ने शिक्षा विभाग, दिल्ली प्रशासन द्वारा आयोजित स्कूली दूरदर्शन कार्यक्रम में सहायता प्रदान की।

(ऊ) विदेशी शैक्षिक अधिकरणों के साथ सहभाग

ग्रामीण विकास में विज्ञान शिक्षा पर एक मापांक लेखन कार्यशाला का आयोजन नवम्बर-दिसम्बर, 1976 में 'विकास हेतु शैक्षिक नवाचार' के एशियाई केन्द्र, बैंकाक के सहभाग के साथ रा० शै० अ० और प्र० प० में किया गया था।

यूनेस्को द्वारा समर्थित इस कार्यशाला में अफगानिस्तान, भारत, मलेशिया और श्रीलंका ने प्रतिनिधित्व किया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य यह था कि ग्रामीण परिस्थितियों में प्राथमिक विज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करने का विशेषज्ञों को एक अवसर मिल सके और वे विकासशील देशों में सीखने वालों की आवश्यकताओं तथा देहाती जीवन के अनुरूप एक कार्यकारी पैकेज विकसित कर सकें। निम्नलिखित बारह अनुदेशात्मक मापांक तैयार किए गए थे :

(1) बाढ़ और तुम, (2) घर में वनस्पति उगाने का कौशल, (3) वर्गीकरण की विज्ञान प्रक्रिया, (4) अपनी चारों ओर सफ़ाई और सुन्दरता रखना, (5) आओ, हम अपने स्कूल को स्वच्छ और सुन्दर बनाएँ, (6) धरती का खारापन और तुम्हारी फसलें, (7) घर में मुर्गीखाना रखना, (8) वर्गीकरण का प्रक्रियन कौशल सिखाना, (9) खोई मुस्कान (अवशोषण), (10) आओ, हम प्रकृति और इसके साधनों को सुरक्षित रखें, (11) मापने की प्रक्रिया सिखाना, (12) बाइसिक के माध्यम से विज्ञान।

2.2 सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग

सामाजिक विज्ञानों और भाषाओं के शिक्षण में आधुनिक पाठ्यचर्या, पाठ्य-विवरण, पाठ्यपुस्तक तथा अन्य अनुदेशात्मक सामग्री के विकास में इस विभाग को सीधे रूप में सम्मिलित किया गया है। विभाग में विकसित सामग्रियों पर विभिन्न राज्यों में अभिविन्यास कार्यक्रमों का आयोजन किया जा चुका है ताकि सामाजिक विज्ञानों और भाषाओं के शिक्षण में निकट समय में हुए स्थानों और उपागमों से शैक्षिक कार्यकर्त्ताओं को परिचित कराया जा सके। इसके अतिरिक्त, शुद्ध और अनुप्रयुक्त अनुसंधान अध्ययन भी किए गए हैं ताकि विभाग अपने कार्यों को अधिक दक्षतापूर्वक कर सके।

(अ) सम्पादकीय मण्डलों की स्थापना

जबसे नई पद्धति के अन्तर्गत 10-वर्षीय स्कूल-शिक्षा की रूपरेखा विकसित की जा रही थी, तभी से अनुभव किया जा रहा था कि शिक्षा की नई दार्शनिकता का अनुपालन करने के लिए पाठ्य-विवरण और अनुदेशात्मक सामग्री, विशेष रूप में

पाठ्यपुस्तकें तैयार की जानी चाहिए। वरिष्ठ विश्वविद्यालय प्रोफेसरों और अन्य प्रतिष्ठित विद्वानों का इस कार्य में सहयोग लिया गया था। निम्नलिखित सम्पादकीय मण्डलों ने विभाग को सहायता प्रदान की :

	विषय	अध्यक्ष का नाम
1.	हिन्दी मातृभाषा के रूप में	डा० एच० एल० शर्मा
2.	हिन्दी द्वितीय भाषा के रूप में	डा० एस० शिवमंगल सिंह सुमन
3.	अंग्रेजी	प्रो० रमेश मोहन
4.	संस्कृत	डा० के० राघवन पिल्लै
5.	सामाजिक अध्ययन (कक्षा VI-VIII)	डा० वी० बी० सिंह
6.	इतिहास (कक्षा IX-XII)	डा० आर० एस० शर्मा
7.	भूगोल (कक्षा IX-XII)	प्रो० मुनीस रजा
8.	नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र आदि (कक्षा IX-XII)	प्रो० माल्कम एस० आदिशेषैया
9.	राजनीति शास्त्र (कक्षा XI व XII)	प्रो० रशीदुद्दीन खान
10.	अर्थशास्त्र (कक्षा XI व XII)	प्रो० जी० एस० मल्ला
11.	समाजशास्त्र (कक्षा XI-XII)	प्रो० एस० सी० दुबे

विभाग के कुछ वरिष्ठ सदस्य इन मंडलों के साथ कार्यरत हैं जिनकी आवधिक बैठकें (i) विभाग में विकसित पाठ्य-विवरणों को अन्तिम रूप देने और (ii) मंडलों द्वारा प्रदत्त मार्गदर्शी रूप रेखाओं के अनुसार पाठ्यपुस्तकों के लेखन हेतु लेखकों को नियुक्त करने के लिए होती रहीं। इस प्रकार तैयार की गई पाठ्यपुस्तकों की अन्तिम जिम्मेवारी संपादकीय मण्डल की रही।

(आ) प्रकाशन

इस वर्ष में निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों को अन्तिम रूप दिया गया और उन्हें प्रकाशन हेतु प्रेस में भेजा गया :

कक्षा-6

1. एनशिएण्ट इण्डिया
2. प्राचीन भारत
3. अफ्रीका और एशिया
4. अवर सिविक लाइफ
5. हमारा नागरिक जीवन
6. देश और उसके निवासी
7. टैक्स्टबुक इन संस्कृत

कक्षा 9-10

1. "जनरल ज्योग्राफी आफ दि वर्ल्ड", पार्ट I कक्षा 9 के लिए।
2. "सिटीजनशिप ऐज्यूकेशन : वी एण्ड अवर गवर्नमेण्ट" कक्षा 9 व 10 के लिए।

3. "अवर इकोनौमी" कक्षा 9-10 के लिए अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक
4. "प्रतिभा"—सेमिस्टर 1 व 2 की कक्षा 9 हेतु संस्कृत में पाठ्यपुस्तक
5. "पूरक पाठमाला" कक्षा 9-10 के लिए हिंदी में
6. "भारतीय अर्थव्यवस्था" कक्षा 9-10 हेतु अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक (हिंदी रूपान्तर)
7. "हम और हमारी सरकार"—कक्षा 9-10 की 'नागरिक शिक्षा' का हिंदी रूपान्तर

कक्षा 11-12

1. "एलिमेंटरी स्टेटिस्टिक्स इन इकोनौमिक्स" कक्षा 11 के लिए
2. "इंग्लिश रीडर-कोर" कक्षा 11-12 के लिए अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तक
3. "एनशिएण्ट इंडिया" कक्षा 11 के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक
4. "प्रतिनिधि एकांकी" कक्षा 11-12 के लिये हिन्दी पाठ्यपुस्तक
5. "संस्कृत काव्य तरंगिणी" कक्षा 11 के लिए संस्कृत पाठ्यपुस्तक
6. "ज्योग्राफी वर्कबुक" कक्षा 11-12 के लिए
7. "फील्ड एण्ड लेबोरेटरी टेकनीक्स इन ज्योग्राफी" कक्षा 11-12 के लिए

माध्यमिक स्कूलों के लिये 'माडर्न इंडिया' शीर्षक पाठ्यपुस्तक के हिन्दी रूपान्तरण की तैयारी पूरी की जा चुकी है। यह पुस्तक अक्तूबर, 1976 में छपी। प्रो० विपिन चन्द्र द्वारा तैयार किया गया मूल अंग्रेजी रूप पहले 1971 में प्रकाशित हुआ था और फिर उसका पुनर्मुद्रण हो चुका है। हिन्दी रूपान्तरण दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनौमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के श्री गिरीश मिश्र द्वारा तैयार किया गया है।

इस विभाग ने डा० एम० जी० चतुर्वेदी और बी० वी० मोहले द्वारा तैयार किया गया "पोजीशन आफ लैंग्वेज इन स्कूल करिकुलम इन इंडिया" नामक शोध-प्रबन्ध भी प्रकाशित किया है।

प्रतिवर्ष 10 दिसम्बर को मनाए जाने वाले 'मानव अधिकार दिवस' की स्मृति में इस विभाग ने डा० डी० एस० मुले द्वारा तैयार की गई "मानव अधिकारों की विश्व घोषणा" पुस्तिका प्रकाशित की है। इस पुस्तिका की प्रतियाँ देश भर के सभी उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में विभिन्न राज्यों और संघ क्षेत्रों में परिषद् के क्षेत्र सलाहकारों के माध्यम से बँटवाई गई थीं।

(इ) राष्ट्रीय स्मारकों पर परियोजनाएँ

रा० शै० अ० और प्र० प० ने, शिक्षा मंत्रालय के आदेश पर, स्कूली बच्चों के लिए "देश के विभिन्न भागों में स्थित स्मारकों के संरक्षण" से सम्बन्धित कार्य-क्रम के लिए सामग्री तैयार करने हेतु "भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण" के साथ मिल-जुल कर एक परियोजना प्रारम्भ की।

उक्त उद्देश्य-पूर्ति के लिए स्थापित उप-समिति ने निम्नलिखित कार्य करने का निश्चय किया :

(1) उपयुक्त रूप में छिद्रिल, पूरक पुस्तकों का सैट तैयार किया जाए जिसमें इन स्मारकों के चित्र व रूपरेखांकन हो,

(2) अति प्राचीन युगों से ही भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के स्मृति-चिह्नों के रूप में इन स्मारकों के महत्त्व को ऐतिहासिक पाठ्य-विवरणों और पाठ्यपुस्तकों में प्रमुख रूप से दर्शाया जाए, और

(3) ऐसे स्कूलों की सहायता से स्मारकों के संरक्षण के उपाय करना जो अपने चारों ओर उपलब्ध स्मारकों के अध्ययन व संरक्षण की परियोजनाएँ प्रारम्भ कर सकें।

उपरोक्त संख्या (1) के सम्बन्ध में यह निश्चय किया गया है कि यह छिद्रिल पुस्तक तीन खण्डों की होगी जिसमें, मोटे रूप से, भारतीय इतिहास के प्राचीन, मध्य और आधुनिक कालखण्डों का वर्णन होगा। प्रथम खण्ड के प्रकाशन हेतु सामग्री एकत्र कर ली गई है। जहाँ तक उपरोक्त संख्या (2) का सम्बन्ध है, नया इतिहास पाठ्य-विवरण तैयार करते समय ध्यान रखा गया था कि अति प्राचीन युगों से ही भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के स्मृति-चिह्नों के रूप में भारतीय स्मारकों के महत्त्व पर विशेष जोर दिया जाए। उपरोक्त (3) के सम्बन्ध में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक से अनुरोध किया है कि वे एक प्रबन्ध (मोनोग्राफ) तैयार करदें।

(ई) नागरिक शिक्षा में सुधार हेतु व्यवहारिक कार्यकलापों पर अभिविन्यास कार्यक्रम

स्कूली शिक्षा की नई 10+2 पद्धति प्रारम्भ होने के साथ ही विभाग ने व्यवहारिक गतिविधि कार्यक्रमों के परियोजना कार्य को नागरिक शिक्षा पाठ्यचर्या के अंश के रूप में समाविष्ट करना प्रारम्भ कर दिया है। इस कार्यक्रम में जरूरी है कि प्रत्येक विद्यार्थी प्रतिवर्ष ऐसे व्यवहारिक कार्यकलापों में भाग ले और इन परियोजनाओं में से प्रत्येक पर एक रिपोर्ट अथवा सारांश लिखे। यह विभाग नागरिक कार्यकलापों के विकास पर अनुसंधानात्मक अध्ययन के अंश के रूप में इन नमूनों को दिल्ली के 20 चुने हुए स्कूलों में परीक्षण के तौर पर प्रयोग कर रहा है। राज्य शिक्षा संस्थान, दिल्ली इस परियोजना में साथ काम कर रही है। चुने हुए स्कूलों के नागरिक-शास्त्र के अध्यापकों का एक एक-दिवसीय अभिविन्यास विभाग में सितम्बर 14, 1976 को किया गया था।

(उ) महिलाओं की स्थिति के अनुरूप मूल्यों के परिचयांकन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

10+2+3 के अन्तर्गत साहित्य में सम्मिलित करने के लिए "महिलाओं की स्थिति के अनुरूप मूल्यों के परिचयांकन" पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी ए० एन० सिन्हा सामाजिक अध्ययन संस्थान, पटना में अप्रैल 2-4, 1976 में हुई थी।

(ऊ) राज्यों/अन्य एजेन्सियों के साथ सहभाग-सहयोग

विभाग ने कई शिक्षा प्राधिकरणों/संगठनों को परामर्श-दान किया। विकास कार्यक्रमों यथा सामाजिक विज्ञानों और भाषाओं के क्षेत्रों में पाठ्य-विवरणों के विकास व संशोधन, 10+2 पद्धति के अन्तर्गत नए पाठ्य-विवरणों से संबधित गुटकों (हैण्डबुकों) और पाठ्यचर्या-दर्शिकाओं की तैयारी, तथा उनकी तैयारी में लगे हुए संसाधन व्यक्तियों के हेतु अभिविन्यास पाठ्यक्रमों में राज्य शिक्षा संस्थान, दिल्ली, हरियाणा, केरल और मध्यप्रदेश, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, आन्ध्र प्रदेश, अन्नामलाई विश्वविद्यालय, दिल्ली नगर निगम और नई दिल्ली नगरपालिका समिति के शिक्षा विभागों आदि से सहभाग का विशेष उल्लेख किया जाना चाहिए।

(ए) विदेशी सहभाग/सहयोग

1. जनसंख्या शिक्षा पर यूनेस्को परियोजना

सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग ने यूनेस्को की सहायता से "कोआपरेटिव डवलपमैंट आफ लर्निंग यूनिट्स इन पापूलेशन ऐज्यूकेशन" पर एक परियोजना आरम्भ की है। शिक्षा-विद्यालय, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में मई, 1976 में एक सप्ताह-भर की राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई थी। कार्यशाला ने खोज उपागम के अनुसरण पर अध्ययन सामग्री विकसित की।

देश भर में से आठ स्कूलों को छाँटा गया है। वे देश के औद्योगिक, शहरी, दहाती और जन-जाति क्षेत्रों में से हैं। यही वे स्कूल हैं जहाँ, विकसित की गई इस सामग्री को अन्तिम रूप देने और विचारार्थ यूनेस्को भेजने से पूर्व, एक महीने तक इस पर परीक्षण किया जाएगा।

2. पर्यावरण-अध्ययन पर कार्यशाला

विभाग के प्रतिनिधियों ने सितम्बर, 1976 में इलाहाबाद में आयोजित उत्तरी भारत हेतु पर्यावरण-अध्ययन पर एक कार्यशाला का गठन करने में प्रतिभाग किया और पर्यावरण-अध्ययन में कक्षा 1 व 2 के एकीकृत पाठ्य-विवरण पर अनुदेशात्मक सामग्री के विकास में सहायता की। यह कार्यशाला विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग ने यूनिसेफ के सहभाग में आयोजित की थी। इस कार्यशाला के परिणाम पर दक्षिण भारत के लिए संसाधन व्यक्तियों के एक अन्य दल के साथ त्रिवेन्द्रम में सितम्बर, अक्तूबर 1976 में विचार-विमर्श किया गया था।

2.3 अध्यापक शिक्षा विभाग

(अ) राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की स्थापना भारत सरकार, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय के संकल्प सं० 7-6-71 रूल्स—2 दिनाँक 21 मई, 1973 द्वारा की गई थी। इस परिषद् के कार्य निम्नलिखित हैं :

(1) सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन प्रशिक्षण, अध्यापक शिक्षा हेतु पाठ्यचर्या

का मूल्यांकन और पाठ्यचर्या संशोधन में प्रगति की सावधिक समीक्षा सहित अध्यापक शिक्षा से सम्बन्धित सभी बातों में भारत सरकार को सलाह देना,

(2) राज्य सरकारों द्वारा परिषद् को सम्बोधित किसी भी मामले पर उनको सलाह देना,

(3) अध्यापक शिक्षा से सम्बन्धित केन्द्र और राज्य दोनों की सुनिश्चित योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करना,

(4) अध्यापक शिक्षा में पर्याप्त मानक सुनिश्चित करने के लिए सरकार को सलाह देना और

(5) भारत सरकार द्वारा परिषद् को सौंपी गयी अन्य कोई बात।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् अपनी विभिन्न स्थायी समितियों के माध्यम से कार्य करती है। स्थायी समितियाँ निम्नलिखित हैं :—

(1) स्कूल-पूर्व अध्यापक शिक्षा समिति,
(2) प्रारम्भिक अध्यापक शिक्षा समिति,
(3) माध्यमिक अध्यापक शिक्षा समिति,
(4) तकनीकी, व्यावसायिक और कार्य अनुभव शिक्षा समिति,
(5) सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा समिति,
(6) अध्यापक शिक्षा मानक समिति,
(7) शारीरिक रूप से विकलाँग और मानसिक रूप से पिछड़े हुए लोगों के लिए विशेष स्कूलों हेतु अध्यापक निर्माण समिति,
(8) अध्यापक शिक्षा में विदेशी उपाधियों/डिप्लोमा के समानक निर्धारण करने वाली समिति।

इन समितियों के कार्य का समन्वय एक संचालन समिति द्वारा किया जाता है। संचालन समिति राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की सामान्य साधारण सभा से पहले एक या दो बार मिलती है।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की सामान्य साधारण सभा वर्ष में एक बार प्रत्येक वित्त वर्ष की समाप्ति के आसपास होती है। अन्य स्थायी समितियों की बैठकें वर्ष में एक या दो बार आवश्यकतानुसार होती हैं।

1976-77 वर्ष में निम्नलिखित बैठकें हुई थीं :

1. अध्यापक शिक्षा पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की नामिका और राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की सम्बन्धित समितियों के सदस्यों का संयुक्त अधिवेशन :

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की मार्च 4, 1976 को सम्पन्न हुई तीसरी वार्षिक साधारण सभा की बैठक में की गयी सिफारिश के अनुसार विभिन्न स्तरों पर अध्यापक-प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय अध्यापक परिषद् की विभिन्न समितियों द्वारा बी० एड० और एम० एड० के लिए तैयार की गई पाठ्यचर्या को इस सभा द्वारा विकसित किया जाना था।

यह संयुक्त अधिवेशन 9 और 10 जून, 1976 को नई दिल्ली में हुआ जिसमें लगभग 80 प्रतिभागी सम्मिलित हुए । इसने बी० एड० और एम० एड० के विभिन्न पक्षों पर अपनी सिफारिशें दी थीं । इस संयुक्त अधिवेशन ने यह भी सुझाव दिया था कि एक छोटी समिति अध्यापक शिक्षा पर एक उपागम-पत्र तैयार कर ले । यह उपागम पत्र प्रारम्भ लेखन समिति द्वारा 6 दिसम्बर, 1976 को अन्तिम रूप में अनुमोदित कर दिया गया था । इस उपागम-पत्र पर उस राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा सम्मेलन में आगे विचार-विमर्श किया गया जो नई दिल्ली में 18 व 19 फरवरी, 1977 को हुआ था । राष्ट्रीय सम्मेलन ने इस पत्र पर सविस्तार विचार किया और सिफारिश की कि इस पत्र को शिक्षा नीति में परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए पुनः संशोधित किया जाए । सम्मेलन ने यह भी सुझाव दिया कि अध्यापक शिक्षा में समुदाय के साथ काम करने पर पूरे सुझाव देने के लिए एक समिति बनायी जाए । यह दल मार्च 24, 1977 को मिला और इसने अपनी सिफारिशें दीं । इस समिति की सिफारिशें संशोधित प्रारूप में सम्मिलित की गयी थीं ।

2. स्कूल-पूर्व अध्यापक शिक्षा समिति

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की स्कूल-पूर्व अध्यापक शिक्षा समिति की एक बैठक नई दिल्ली में दिनाँक 19 अगस्त, 1976 को हुई थी । इसने स्कूल-पूर्व अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं की मान्यता हेतु मार्गदर्शी रूपरेखाएँ विकसित करने के लिए एक उप-समिति बना दी । समिति ने स्कूल-पूर्व अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी-अध्यापकों के लिए पाठ्यपुस्तकें और गुटके (हैण्डबुक) तैयार करने के लिए एक सम्पादकीय-मंडल बना देने का भी सुझाव दिया । इन पाठ्यपुस्तकों और गुटकों की तैयारी के लिए सामग्री जमा कर ली गई है और मुद्रण से पूर्व इसे सम्पादकीय मंडल के समक्ष अन्तिम रूप में अनुमोदनार्थ प्रस्तुत कर दिया जाएगा । राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की प्राथमिक अध्यापक शिक्षा समिति दिनाँक सितम्बर, 8, 1976 को मिली थी और इसने कार्य-भार की समस्या पर विचार किया था ।

स्कूल-पूर्व अध्यापक शिक्षा की उप-समिति की बैठक नई दिल्ली में दिनाँक अगस्त 26, 1976 को स्कूल-पूर्व अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं की मान्यता हेतु मार्गदर्शी रूपरेखाएँ विकसित करने और विद्यमान प्रारम्भिक अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या में एकीकरण हेतु स्कूल-पूर्व अध्यापक प्रशिक्षण के चुने हुए तत्त्वों का भी पता लगाने के लिए हुई थी ।

3. प्राथमिक अध्यापक शिक्षा समिति

प्राथमिक अध्यापक शिक्षा समिति की तीसरी बैठक दिनाँक सितम्बर 8, 1976 को नई दिल्ली में हुई थी । समिति ने प्राथमिक अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थाओं की मान्यता हेतु मार्गदर्शी रूपरेखाओं का सुझाव दिया । ये मार्गदर्शी रूपरेखाएँ कुछ खास संशोधनों सहित स्वीकार कर ली गईं । यह सुझाव भी दिया गया था कि दूर-दराज देहाती क्षेत्रों में स्थित एक अध्यापक वाले स्कूलों के कार्मिकों को छुट्टियों की अवधि में एक महीने का सेवा-कालीन प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम डा० डी० वी० चिक्करमाने

तैयार कर दें । इस सम्बन्ध में अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा सम्पादन हेतु एक पैम्फलेट की सिफारिश की गई थी, कि राज्य-स्तर पर अपने प्रमुख कार्मिकों को प्रशिक्षण देने के लिए सभी राज्य शिक्षा संस्थानों को यह पैम्फलेट परिचालित किया जाए । तदनुसार पाठ्यक्रम का संपादन किया गया था और अब इसे आवश्यक कार्यवाही हेतु सभी राज्य शिक्षा संस्थानों को परिचालित कर दिया गया है ।

4. तकनीकी, व्यावसायिक और कार्य-अनुभव शिक्षा समिति

तकनीकी, व्यावसायिक और कार्य-अनुभव शिक्षा समिति की तीसरी बैठक नवम्बर 22, 1976 को नई दिल्ली में हुई थी । समिति ने एक छोटा कार्य दल भी नियुक्त किया जो उन मार्गदर्शी रूपरेखाओं का निरूपण करेगा जिनमें जमा दो स्तर पर व्यावसायिक धारा हेतु अध्यापक तैयारी की वैकल्पिक नीति समाविष्ट हो सकती है ।

5. सेवा-कालीन अध्यापक शिक्षा समिति

सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा समिति की दूसरी बैठक दिनाँक अक्तूबर 30, 1976 को नई दिल्ली में हुई थी । समिति ने सुझाव दिया कि आकाशवाणी (आल इण्डिया रेडियो) के सहभाग से राज्य शिक्षा संस्थान, केरल द्वारा विकसित प्राथमिक स्कूल अध्यापकों हेतु पत्राचार-पाठ्यक्रम पर एक विशद-टिप्पणी उपलब्ध की जाए जिसे अन्य राज्यों, रा० शै० अ० प्र० प० के पत्राचार पाठ्यक्रम प्रकोष्ठ और राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की सेवा-कालीन अध्यापक शिक्षा समिति के सदस्यों में परिचालित किया जाए । यह पहले ही कर लिया गया है । समिति इस बात से भी सहमत हुई थी कि उन अध्यापकों के लिए 75 दिवसीय अवधि का एक अनुस्थापन कार्यक्रम जरूरी था जो नई 10+2 स्कूली-पद्धति में कक्षा 11 व 12 में शिक्षण करेंगे और जिन्हें पहले किसी भी प्रकार का अध्यापन-प्रशिक्षण नहीं दिया गया है ।

6. अध्यापक शिक्षा मानक समिति

अध्यापक शिक्षा मानक समिति की दूसरी बैठक दिनांक नवम्बर 27, 1976 को नई दिल्ली में हुई थी । समिति ने सुझाव दिया कि चूँकि अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थाओं में केन्द्रीयकृत प्रवेशों की प्रणाली से सम्बन्धित जानकारी सभी राज्यों/संघ क्षेत्रों से नहीं आई थी, इसलिए अभीष्ट यही था कि जिन राज्यों/संघ क्षेत्रों ने उत्तर नहीं दिया था उनसे पुनः जानकारी देने को कहा जाए । यह कार्य जारी है ।

(आ) ललित कलाओं की समालोचना

शिक्षा मन्त्रालय ने इस विभाग को देश में शिक्षा महाविद्यालयों के कर्मचारी वर्गों हेतु ललित कला समालोचना की पुनश्चर्याओं को आयोजित करने का कार्य सौंपा । समीक्षाधीन अवधि में ऐसी दो पुनश्चर्याएँ सितम्बर 22 से अक्तूबर 12, 1976 तक आयोजित की गई थीं । इनमें से एक महिला विद्यालय, लखनऊ में हुई थी जिसमें 13 राज्यों के 44 प्रतिभागी उपस्थित थे । दूसरी पुनश्चर्या दिनांक 30 मार्च

से अप्रैल 19, 1977 तक शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, पटियाला में हुई थी जिसमें 12 राज्यों के 26 प्रतिभागी उपस्थित थे।

(इ) दस-वर्षीय स्कूल पाठ्यचर्या के अनुपालन की अनुवर्ती कार्यवाही

कुछ समय तक विभाग ने 10-वर्षीय स्कूली पाठ्यचर्या के अनुपालन के सम्बन्ध में अनुस्थापन कार्यक्रमों का समन्वय किया है। राज्यों को प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए अनुस्थापन पाठ्यक्रम आयोजित करने हेतु अनुदान दिए गए थे।

(ई) अनुसंधान परियोजनाएँ

1. राज्य में अध्यापक-आवश्यकता का पूर्वानुमान लगाने के लिए प्रतिदर्श विकसित करना

इस परियोजना के सम्बन्ध में दिनांक 7 अप्रैल, 76 को हरियाणा राज्य के 11 जिला शिक्षा अधिकारियों का सम्मेलन आधार-सामग्री के संग्रह से प्रश्नावली को अन्तिम रूप देने और अध्ययन व समय-सूची नीति के बारे में अनुस्थापित करने के लिए आयोजित किया गया था।

2. बी० एड० व्यवहारिक कार्य के निर्धारण हेतु मूल्यांकन-साधन का विकास

देश के सभी महाविद्यालयों में बी० एड० व्यवहारिक कार्य के निर्धारण हेतु प्रयुक्त मूल्यांकन-साधनों को एकत्र और कार्यकलाप अनुसार वर्गीकृत कर लिया गया है। इस सामग्री को माध्यमिक स्तर पर अध्यापक-प्रशिक्षकों को उस कार्यशाला के समक्ष प्रस्तुत कर दिया गया जो 21 से 26 फरवरी, 1977 तक शिक्षा महाविद्यालय, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद में हुई थी। इस कार्यशाला को यह लाभ भी दिया गया था कि इसमें हैदराबाद, मद्रास और भुवनेश्वर में पहले सम्पन्न अध्यापक-प्रशिक्षकों की कार्यशालाओं द्वारा स्वतन्त्र रूप में विकसित मूल्यांकन-साधनों का परामर्श कर सकें। इस कार्यशाला ने शिक्षा महाविद्यालयों द्वारा स्नातक-पूर्व स्तर पर प्रायः आयोजित किए जाने वाले विभिन्न व्यवहारिक कार्यकलापों के निर्धारण के लिए 17 निर्धारण-मापनियों को विकसित किया।

(उ) राज्यों में अध्यापक शिक्षा का विकास

अध्यापक शिक्षा विभाग ने प्राथमिक और माध्यमिक, दोनों ही स्तरों पर अध्यापक शिक्षा संस्थाओं के सर्वमुखी विकास के लिए आशु अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम प्रारम्भ किया है। प्राथमिक अध्यापक शिक्षा स्तर पर इस कार्य के लिए राजस्थान और आंध्र प्रदेश के राज्यों को चुना गया था जबकि माध्यमिक स्तर पर कार्य के लिए आन्ध्र प्रदेश को चुना गया था।

1. आशु अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (प्राथमिक स्तर पर)

अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थानों के 32 प्रधानाचार्यों का एक सम्मेलन दिनाँक 10 से 14 जनवरी, 1977 तक राज्य शिक्षा संस्थान, उदयपुर, राजस्थान में आयोजित किया गया था। सम्मेलन का मुख्य आशय विद्यार्थी-शिक्षण में सुधार था।

आन्ध्र प्रदेश में 12 अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थानों के प्रधानाचार्यों के दो सम्मेलन आयोजित किए गए थे। पहले का आयोजन दिनांक 6 से 8 अक्तूबर, 1976 तक राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् हैदराबाद में अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थानों के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित समस्याओं—यथा शारीरिक सुविधाओं, पाठ्यचर्या, विधि, कर्मचारी वर्ग, प्रवेश और प्रशासन,—पर विचार-विमर्श करने के लिए किया गया था ताकि सक्रियात्मक समाधान सुझाए जा सकें और जरूरी सिफारिशें की जा सकें। दूसरा सम्मेलन आन्ध्र प्रदेश की अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थानों हेतु नई पाठ्यचर्या विकसित करने के लिए दिनाँक 21 से 26 मार्च, 1977 तक एस० वी० यूनिवर्सिटी, शिक्षा विभाग, तिरूपति में आयोजित किया गया था। यह पाठ्यचर्या राज्य द्वारा 1978-79 शैक्षणिक सत्र से ग्रहण कर ली जाएगी।

2. आशु अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (माध्यमिक स्तर पर)—आन्ध्र प्रदेश

अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा दिनाँक 6 से 11 सितम्बर, 1976 तक सैंट ऐन्न शिक्षा महाविद्यालय में शिक्षा महाविद्यालयों के प्रधानाचार्य, विभागों के प्रोफेसर और अध्यक्ष, शिक्षा के शाखाध्यक्ष, तथा आन्ध्र प्रदेश में तीनों विश्वविद्यालयों के शिक्षा-अध्ययन मंडलों के अध्यक्षों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया था। शिक्षा-महाविद्यालयों के सभी प्रधानाचार्यों और अध्यापक-प्रशिक्षकों की एक अन्य कार्यशाला राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा विकसित अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या रेखाँकन द्वारा सिफारिश किए गए सिद्धान्तों के अनुसरण में आन्ध्र प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों हेतु नई बी० एड० पाठ्यचर्या का विकास करने के लिए दिनाँक 21 से 26 मार्च, 1977 तक एस० वी० यूनिवर्सिटी, शिक्षा विभाग में आयोजित की गई थी। यह पाठ्य-विवरण शैक्षणिक सत्र 1978-79 से आन्ध्र प्रदेश के सभी पाँचों विश्वविद्यालयों में लागू हो जाएगा।

3. अध्यापक शिक्षा का गुणात्मक सुधार

विभाग ने विद्यार्थी-शिक्षण, मूल्याँकन आदि जैसे अध्यापक शिक्षा के एक पक्ष-विशेष के गुणात्मक सुधार हेतु—प्राथमिक अथवा माध्यमिक स्तर पर कुछ एकाकी कार्यक्रमों को प्रारम्भ किया है। माध्यमिक अध्यापक शिक्षा स्तर पर विद्यार्थी-शिक्षण और इसके मूल्याँकन की समस्याओं पर विचार करने के लिए प्रधानाचार्यों और अध्यापक-प्रशिक्षकों के दो सम्मेलन आयोजित किए गए थे। पहला सम्मेलन उत्तर प्रदेश में कुमाऊँ और गढ़वाल विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध महाविद्यालयों के लिए गोपेश्वर में 17 से 22 मई, 1976 तक हुआ था और इसमें 34 प्रतिभागी उपस्थित रहे। दूसरा सम्मेलन नार्थ-ईस्ट हिल यूनिवर्सिटी से सम्बद्ध शिक्षा महाविद्यालयों के लाभार्थ शिलांग में किया गया था। यह 23 से 29 सितम्बर, 1976 तक हुआ था और इसमें 20 प्रतिभागी सम्मिलित थे।

गोपेश्वर संगोष्ठी के बाद एक अन्य संगोष्ठी डी० ए० वी० महाविद्यालय देहरादून में 3 से 7 जनवरी, 1977 तक हुई थी और इसमें कुमाऊँ व गढ़वाल विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध महाविद्यालयों के 27 प्रतिभागी उपस्थित थे।

4. मूल्यांकन प्रयोगों का सुधार

विभाग ने माध्यमिक अध्यापक शिक्षा स्तर पर दिनांक 25 से 30 अक्तूबर, 1976 तक उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में शिक्षा महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों के लिए एक संगोष्ठी का आयोजन किया था, और इस संगोष्ठी में क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर के 19 अध्यापक-प्रशिक्षक सम्मिलित हुए थे। इस संगोष्ठी ने जिसमें 19 अध्यापक-प्रशिक्षक उपस्थित थे, स्नातक-पूर्व और स्नातकोत्तर स्तरों पर शिक्षा पाठ्यक्रमों के नियम और प्रयोग के मूल्यांकन के सिद्धान्तों पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने बी० एड० कार्यक्रम के तीन बीज पाठ्यक्रमों के लिए नमूने के प्रश्न-पत्र विकसित किए और विद्यार्थी शिक्षण सहित प्रयोगात्मक कार्यकलापों के निर्धारण हेतु मूल्यांकन-साधनों को अन्तिम रूप दिया।

(ऊ) प्रशिक्षण और विस्तार

1. अध्यापक शिक्षा विभाग ने सेन्टर फॉर एडवान्स्ड स्टडीज़ इन ऐज्यूकेशन, एम० एस० यूनिवर्सिटी, बड़ौदा के सहभाग में माइक्रोटीचिंग में प्रयोग किए हैं। इस सम्बन्ध में, विद्यार्थी-शिक्षण में गुणात्मक सुधार हेतु माइक्रोटीचिंग व अनुरूप तकनीक ग्रहण के वास्ते अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए कुछ अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किए गए हैं। ऐसे ही एक पाठ्यक्रम का आयोजन दिनांक 22 से 25 मार्च, 1977 तक शिक्षा-विभाग, इन्दौर विश्वविद्यालय में आयोजित किया जा चुका है।

2. मध्यप्रदेश की बी० टी० संस्थानों के प्रधानाचार्यों का एक सम्मेलन दिनांक 27 से 31 दिसम्बर, 1976 तक भोपाल में आयोजित किया गया था। प्रधानाचार्यों को स्कूल-स्तर पर 10+2 कार्यक्रम प्रयोग करने की जरूरतों और सुधारों, तथा प्राथमिक अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रम में इसके निहितार्थ के बारे में अनुस्थापित किया गया था।

3. अध्यापक शिक्षा विभाग ने दिनांक 13 सितम्बर से 17 सितम्बर, 1976 तक राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान परिसर, नई दिल्ली में माध्यमिक अध्यापक-प्रशिक्षण महाविद्यालयों के विज्ञान विधि मास्टरों हेतु सेवाकालीन पाठ्यक्रम आयोजित किया जिसमें क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के 24 अनुभवी अध्यापक-प्रशिक्षकों ने भाग लिया था। इसका प्रयोजन 10+2 पाठ्यचर्या के अनुसार कक्षा 9, 10, 11 और 12 के लिए भौतिकी, रसायन और जीव-विज्ञान में पाठ्यक्रम विकसित करना था जिससे अध्यापक-प्रशिक्षक बी० एड० स्तर पर प्रभावी रूप में अध्यापन करने योग्य हो सकें।

4. विभाग ने विधियों और सामग्रियों पर दो कार्यशालाएँ आयोजित कीं। इनमें से पहली कार्यशाला 15 दिसम्बर से 24 दिसम्बर, 1976 तक केरल के प्राथमिक अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए थी, और दूसरी कार्यशाला 15 से 24 फरवरी, 1977 तक हुई जिसमें बिहार के 46 प्राथमिक अध्यापक-प्रशिक्षकों ने भाग लिया। इन कार्यक्रमों में अध्यापक-प्रशिक्षकों को दस-वर्षीय स्कूली पाठ्यचर्या से सम्बन्धित

नई विधियों व सामग्रियों तथा माध्यम से परिचित कराया गया। इस प्रशिक्षण की अवधि में ही उन लोगों ने शिक्षण-साधनों का विकास भी किया जिनका प्रदर्शन पाठ्यक्रम के अन्त में किया गया था।

(ए) वितरण-केन्द्र

यह विभाग प्राथमिक और माध्यमिक दोनों ही स्तरों पर अध्यापक शिक्षा से सम्बन्धित नवाचार परीक्षित अच्छे प्रयोगों, आशुक्रियाओं और अपनाए गए नए अभ्यासों के बारे में जानकारी संग्रह करता है ताकि उसे अनुग्रहण हेतु अन्य संस्थाओं को दिया जा सके। विभाग दोनों ही स्तरों पर अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थानों की आ-तिथि सूचियाँ अपने पास रखता है। विभाग हर पाँचवें वर्ष अध्यापक शिक्षा का सर्वेक्षण आयोजित करता है और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आँकड़े अनुरक्षित रखता है।

नवाचारों और प्रयोगों के बारे में ऐसी महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रसारित करने के लिए विभाग द्वारा अपनाई गई एक विधि 'संगोष्ठी पठन कार्यक्रम' है। प्राथमिक और माध्यमिक दोनों ही स्तरों पर अध्यापक-प्रशिक्षकों से अनुरोध किया जाता है कि लेखों के रूप में उन्होंने जो भी मौलिक कार्य किया हो उसकी सूचना दें और उसे राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए प्रस्तुत करें। इस प्रतियोगिता के विजयी लेखों के रचनाकारों को रु० 500·00 प्रत्येक का प्रतीक-पुरस्कार दिया जाता है और उनको अपने लेख पर विचार प्रस्तुत करने के लिए एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में आमंत्रित किया जाता है। समीक्षाधीन वर्ष में एक ऐसी संगोष्ठी राज्य शिक्षा महाविद्यालय, पटियाला में 24 से 26 मार्च, 1977 तक हुई थी जिसमें सात माध्यमिक अध्यापक-प्रशिक्षकों और 18 प्राथमिक अध्यापक-प्रशिक्षकों ने भाग लिया था।

2.4 शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग

(अ) अनुसंधान

1. दिल्ली में कुछ स्कूलों में गृह-कार्य के भार के कुछ पक्षों का अध्ययन

इस अध्ययन का उद्देश्य गृह-कार्य के भार का शीघ्र किन्तु गहन अध्ययन और विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि से इसके सम्बन्ध का पता लगाना था। इस नमूने में 162 विद्यार्थी, 108 माता-पिता, 60 अध्यापक और दिल्ली संघ क्षेत्र के छः स्कूल सम्मिलित थे। महत्त्वपूर्ण उपलब्धियां और निष्कर्ष निम्नलिखित थे : (1) ऊँचे अंक पाने वाले हमेशा गृह-कार्य पूरा करते हैं (2) बहुत सारे माता-पिता अनपढ़ होने के कारण, विषयों और व्यावसायिक समस्याओं के बारे में ज्ञान के अभाव में विद्यार्थियों को समय नहीं दे पाते, (3) बच्चों को घरों में व्यस्त रखने, विद्यार्थियों पर दबाव व जोर के शैक्षणिक महत्त्व की दृष्टि से गृह-कार्य के अच्छे व बुरे दोनों ही पक्ष हैं, और (4) गृह-कार्य पर एक दीर्घकालीन नीति तैयार की जानी चाहिए।

रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी गई है।

2. श्रेष्ठ रूढ़िवादी योग्यता वाले लड़कों के समायोजन प्रतिमान का अध्ययन

श्रेष्ठ रूढ़िवादी योग्यता वाले लड़कों के औसत लड़कों के साथ गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, भावात्मक और स्कूल समायोजनों के क्षेत्रों से सम्बन्धित समायोजन प्रतिमानों में अन्तरों के महत्त्व का निश्चय करने के लिए बारह प्राकल्पनाओं की परीक्षा की गई थी। श्रेष्ठ रूढ़िवादी योग्यता वाले लड़कों की सामाजिक-आर्थिक अवस्थाओं और शैक्षिक उपलब्धियों के सम्बन्ध में समायोजन प्रतिमानों में अन्त-वर्ग अन्तरों का भी अध्ययन किया गया था। इस अध्ययन ने औसत लड़कों और श्रेष्ठ रूढ़िवादी योग्यता वाले लड़कों के समायोजन प्रतिमानों में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं दर्शाया।

यह कार्य पूरा किया जा चुका है।

3. विकास मानक परियोजना

यह परियोजना 1970 में प्रारम्भ हुई थी। इस अध्ययन का मोटे रूप में उद्देश्य शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार करने के लिए $5\frac{1}{2}$ से 11 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के विकास को समझना था। वातावरण की प्रक्रिया की परिवर्तनशीलता घरों और स्कूलों में बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि, संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास में सम्बन्धों की खोज-बीन करना इस परियोजना का विशिष्ट उद्देश्य था। यह अध्ययन सात केन्द्रों अर्थात् दिल्ली, बम्बई, त्रिवेन्द्रम, वाराणसी, राँची, बंगलौर और हैदराबाद में किया गया था। अधिकांश केन्द्रों की अन्तिम रिपोर्टें पूरी हैं।

4. भारत में प्राथमिक श्रेणी के बच्चों में विज्ञान और गणित की धारणाओं का विकास

इस अध्ययन के अन्तिम चरण की अवधि में विस्तृत अध्ययन के लिए (1) संख्या (2) लम्बाई (3) क्षेत्रफल (4) परिमाप (5) वज़न (6) बल और (7) ऊर्जा की सात मूल धारणाएँ चुनी गई थीं। इस चरण में विज्ञान और गणित धारणाओं के अभिग्रहण पर भाषा-विकास के प्रभाव का अध्ययन भी किया गया था। रिपोर्ट लिखी जा रही है।

5. बच्चों को अभिप्रेरित करने में समूह-प्रक्रिया की प्रकृति और कार्यों का अध्ययन

इस अध्ययन का लक्ष्य शिक्षण-अवबोधन प्रक्रिया में सुधार करने की दृष्टि से अभिप्रेरणा और समूह प्रक्रिया में सम्बन्ध का पता करना है। इस अध्ययन की उपलब्धियाँ व्यावसायिक अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए उपयोगी होंगी।

यह परियोजना दो बाहरी केन्द्रों के सहभाग में प्रारम्भ की गई है। इनमें से एक केन्द्र कलकत्ता में है और दूसरा त्रिवेन्द्रम में।

विशिष्ट पृष्ठभूमि, सामाजिक और व्यक्तित्व-परिवर्तनशीलता के आधार पर प्राकल्पनाओं के तीन सैट तैयार किए गए हैं। एक विश्लेषक मनोविज्ञान व्यक्तित्व सूची विकसित करने का प्रस्ताव है।

6. पहली पीढ़ी अधिगम पर सहकारी अनुसंधान

इस परियोजना का उद्देश्य पहली पीढ़ी के अधिगम कर्त्ताओं की मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक विशिष्टताओं का अध्ययन करना है। इस विभाग के अतिरिक्त, विभिन्न विश्वविद्यालयों के चार सहकारी केन्द्र भी इस कार्य को कर रहे हैं। यह अध्ययन तीन श्रेणी स्तरों अर्थात् 1, 5 व 10वीं श्रेणी पर करने का प्रस्ताव है।

परीक्षणों और उपकरणों को अन्तिम रूप देने का कार्य विभाग में पूरा किया जा चुका है।

7. 6-11 आयु वर्ग में देहाती बच्चों के शैक्षिक विकास पर सामाजिक-सांस्कृतिक क्षति का प्रभाव

इसका उद्देश्य अनुसूचित जाति-गैर अनुसूचित जाति, बालक-बालिकाओं, ऊँचे-नीचे सामाजिक-आर्थिक स्तरों से सम्बन्धित और शैक्षिक दूरदर्शन से प्रभावित व उसके सम्पर्क में न आए हुए लोगों के शैक्षिक विकास से सम्बन्धित परिवर्तनशीलताओं में सम्बन्ध का अध्ययन करना है।

अभी तक मात्र एक ही राज्य से प्राप्त आधार-सामग्री का विश्लेषण किया जा सका है। इस भाग पर एक संक्षिप्त रिपोर्ट उपलब्ध है।

(आ) शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन 1976-77 में डिप्लोमा कोर्स

इसका उद्देश्य मार्गदर्शन ब्यूरो, उच्च और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों तथा प्रशिक्षण महाविद्यालयों के लिए मार्गदर्शन-विशेषज्ञ (परामर्शदाता) प्रशिक्षित करना है। यह एक पहले से चला आ रहा कार्यक्रम है और इसका 1976-77 का सत्र दिनांक 2 अगस्त, 1976 से 1 मई, 1977 तक रहा। दिल्ली, कर्नाटक, केरल, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान और उत्तरप्रदेश के 27 प्रशिक्षणार्थियों ने यह पाठ्यक्रम पूरा किया। इस पाठ्यक्रम में छः सैद्धांतिक पत्र, स्कूलों में व्यवहारिक कार्य और लिखित काम सम्मिलित हैं।

(इ) विकासात्मक परियोजनाएं

(1) प्राथमिक और माध्यमिक श्रेणियों में उपचारी अनुदेश हेतु विज्ञान में कार्यक्रमित अवबोधन सामग्री का विकास

इस परियोजना का मुख्य लक्ष्य उपचारी अनुदेश हेतु विज्ञान में कार्यक्रमित अवबोधन सामग्री का विकास करना है। इस कार्य के एक अंश के रूप में भौतिकी में कुछ विशेष चुने हुए विषयों पर बहुमाध्यमी कार्यक्रम विकसित करने की लिखित सामग्री तैयार कर ली गई है।

(2) देहाती क्षेत्र में 11-14 वर्ष आयु-वर्ग की लड़कियों की अनौपचारिक शिक्षा हेतु अवबोधन सामग्री का विकास

यह कार्य वर्ष 1976-77 के पिछले अर्धभाग में प्रारम्भ हुआ। पहली समस्या आवश्यकता पर आधारित पाठ्यचर्या विकसित करने की थी। कई अभिकरणों द्वारा

तैयार की गई पाठ्यचर्या और फिल्म-स्क्रिप्टों की समीक्षा विशेषज्ञों की दो बैठकों में की गई थी।

(3) पूरक पठन सामग्री की तैयारी

इसका उद्देश्य पूर्व-प्राथमिक और निचली प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए हिंदी में पूरक पठन सामग्री प्रदान करना था। इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर सचित्र कक्षा पुस्तकों की दस कक्षाओं के प्रथम प्रारूप तैयार किए गए हैं।

(4) नगर निगम नर्सरी स्कूल के साथ विकास-कार्य

इसका उद्देश्य इन स्कूलों को निदर्शन एवं प्रायोगिक स्कूलों के स्तर तक ऊँचा उठाने के लिए आशु मध्यवर्ती कार्य करना और इस प्रकार नगर निगम में प्रतिदर्श स्कूलों का क्रमशः एक बड़ा जाल बिछा देने की दिशा में पहला कदम उठाने में नगर निगम की सहायता करना था।

प्रथम वर्ष की समाप्ति पर एक मूल्यांकन अध्ययन किया गया था। अघचिनी स्कूल ने निकट पर्यावरण के प्रति सुधरे स्कूल की तत्परता, बुद्धि और जानकारी की दृष्टि से बेहतर उपनतियाँ प्रदर्शित कीं। एम० एम० टी० सी० स्कूल ने उपलब्ध भवन, उपकरण और स्कूल वातावरण के श्रेष्ठतर उपयोग के मामले में सुधार प्रदर्शित किया। विभाग को एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी गई है।

(5) मार्गदर्शन सेवाओं के लिए उपागम-पत्र

शिक्षा की नई पद्धति के अन्तर्गत सामान्य और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा हेतु मार्गदर्शन सेवाएँ ठीक से संगठित करने के लिए उपागम-पत्र तैयार किया गया था। पत्र में (1) शिक्षा में मार्गदर्शन, (2) व्यावसायिक मार्गदर्शन (3) शैक्षिक मार्गदर्शन (4) सामाजिक मार्गदर्शन और (5) अनुपालन पर विचार किया गया था। इस पत्र की परीक्षा आठ विशेषज्ञों ने की थी जिन्होंने मार्गदर्शन और परामर्श देने में कार्यक्रमों के निरूपण से सम्बन्धित अन्य विषयों पर भी विचार-विमर्श किया था।

(6) स्कूल स्तर पर मनोविज्ञान में पाठ्यपुस्तकों का विकास

कक्षा 9, 10 व 12 की तीन पाठ्यपुस्तकों की पाण्डुलिपियाँ तैयार की गई थीं और इनकी समीक्षा की गई थी। वे ये हैं : (1) अण्डरस्टैंडिंग ह्यूमन बीहेवियर, (2) साइकोलोजी—एन इण्ट्रोडक्शन टु ह्यूमन बीहेवियर (3) चाइल्ड साइकोलोजी।

"अण्डरस्टैंडिंग ह्यूमन बीहेवियर" पर पाठ्यपुस्तकों हेतु टीचर्स मैनुअल का ग्रंथाकार भी तैयार कर लिया गया है।

(7) मार्गदर्शन के क्षेत्र में सामग्री का विकास

निम्नलिखित सामग्री तैयार की गई :

(1) व्यावसायिक सूचना सामग्री पर सटीक ग्रंथ सूची तैयार की गई।

(2) राज्य स्तरीय अभिकरणों के लिए आदिप्रारूप के रूप में नई 10+2 पद्धति में स्कूली मार्गदर्शन सेवा की भूमिका का प्रचार करने वाले छः

मार्गदर्शन पोस्टरों के एक सैट को अन्तिम रूप दे दिया गया है (3) पूर्वकाल में प्रकाशित मार्गदर्शन साहित्य सामग्रियों का संशोधन-कार्य प्रारम्भ किया गया।

(ई) राज्यों/अन्य अभिकरणों के साथ सहभाग/सहयोग

विभाग ने निम्नलिखित संस्थाओं और स्थानों पर संसाधन व्यक्तियों के रूप में कार्य करने के लिए अपने अधिकारियों को प्रतिनियुक्त किया :

(1) व्यावसायिक मार्गदर्शन संस्थान, राज्य शिक्षा संस्थान, गुजरात
(2) व्यावसायिक मार्गदर्शन और चयन संस्थान, महाराष्ट्र सरकार
(3) राज्य शिक्षा संस्थान, अगरतला, त्रिपुरा
(4) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान कैम्पस, नई दिल्ली में सम्पन्न आई० सी० एस० एस० आर० अनुसंधान प्रणाली विज्ञान पाठ्यक्रम
(5) इण्डिया इण्टरनेशनल सेण्टर में सम्पन्न आई० सी० एस० एस० आर० सेमिनार आन आइडेंटिटी एण्ड अडल्टहुड
(6) विश्व स्वास्थ्य संगठन, नई दिल्ली
(7) वस्तुनिष्ठ प्रकार परीक्षा संरचना पर संघ लोक सेवा आयोग के कार्यक्रम
(8) प्रतिरक्षा मन्त्रालय, नौसेना अकादमी, कोचीन
(9) दिल्ली प्रशासन : नवयुग स्कूल प्रवेश
(10) अधचिनी ग्राम और एम० एम० टी० सी० कालोनी में नई दिल्ली म्यूनिसिपल कमेटी के स्कूल।

2.5 स्कूल शिक्षा विभाग

(अ) प्राथमिक शिक्षा का व्यापकीकरण

विभाग की कार्य-योजना में ध्यान का मुख्य केन्द्र औपचारिक और अनौपचारिक, दोनों ही प्रकार के अध्ययनों और क्रिया (वास्तविक) कार्यक्रमों के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा के व्यापकीकरण पर था। औपचारिक शिक्षा के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा के व्यापकीकरण की दिशा में निदेशित कार्य-श्रेणी के अन्तर्गत शिक्षा के लिए समाकलित उपागम, एक अध्यापक वाले स्कूलों में बहु-कक्षा शिक्षण, सामाजिक रूप से उपयोगी उत्पादक कार्य (कार्य अनुभव) प्रारम्भ करने के कार्यक्रम शुरू किए गए थे। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य पाठ्यचर्या को जीवन के अधिक उपयुक्त बनाना था जिससे बेहतर पंजीयन और धारण हो जाए।

उन बच्चों के लिए जो उपयुक्त आयु में स्कूलों में नाम दर्ज नहीं करा पाए और वे जो प्राथमिक स्तर तक अपनी शिक्षा पूरी किए बिना ही स्कूल छोड़ गए उनके लिए अनौपचारिक शिक्षा पर मार्गदर्शी परियोजनाएँ पाँच केन्द्रों में आरम्भ की गई थीं जिनमें जनसंख्या नमूनों की विविधताएँ थीं अर्थात् उनमें पहाड़ी जनसंख्या, अनुसूचित जनजातियाँ, अनुसूचित जातियाँ, देहाती जनता और शहरी गंदी

बस्तियों के लोग सम्मिलित थे। समुदाय और बच्चों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों को कम करने के लिए समुदाय की सामाजिक, परिस्थितिगत और आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप सामाजिक रूप में उपयोगी उत्पादक-कार्य प्रारम्भ करने के लिए विशेष प्रयास किए गए थे। इसे शिक्षा का माध्यम भी बना दिया गया था ताकि कार्य और शिक्षा साथ-साथ चल सकें और जिसके कारण इन केन्द्रों की धारणा-शक्ति बढ़े तथा नाम दर्ज कराने के लिए पर्याप्त अभिप्रेरणा दी जा सके। इन मार्गदर्शी परियोजनाओं का निरूपण विभिन्न राज्यों को कामचलाऊ नमूने पेश करना था जिनको वे अपनी आवश्यकताओं के अनुसार ग्रहण कर लें/अनुकूलन कर लें।

अधिकाँश प्राथमिक स्कूल अध्यापक पाठ्यचर्या, प्रभावकारी अध्यापन-अवबोधन प्रक्रियाओं, अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों, एकीकृत शिक्षा, एक अध्यापक वाले स्कूल में बहु-कक्षा-अध्यापन की प्रणालियों आदि से विरले रूप में ही अवगत होते हैं। इसके अतिरिक्त, उनके प्राथमिक शिक्षा के व्यापकीकरण की प्रणालियों का, और स्वास्थ्य, कृषि और समुदाय आदि जैसे विभिन्न अभिकरणों को इनमें कैसे शामिल किया जाए—इसका भी ज्ञान नहीं होता। ऐसे अध्यापकों को इन प्रणालियों में अनुस्थापित करने और उनको ऐसा ज्ञान अर्जन कराने के लिए एक विशाल कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। उन लोगों को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो आदि जैसी संस्थाओं के भ्रमण पर भी ले गए थे जिनसे उनको एकीकृत शिक्षा का कुछ विचार/ज्ञान प्राप्त हो सके। इन अभिविन्यासों ने अध्यापकों को पर्याप्त रूप में अभिप्रेरणा दी है क्योंकि इन कार्यक्रमों के अत्यधिक बहुगुणे प्रभाव होते हैं। नाम दर्ज कराने पर इन कार्यक्रमों के प्रभाव का एक नमूना-अध्ययन किया गया था जिसने दर्शाया कि नमूना-स्कूलों में पंजीयन 30 प्रतिशत बढ़ गया था।

(आ) राष्ट्रीय एकीकरण परियोजना

शिक्षा मंत्रालय से वित्तीय सहायता प्राप्त इस परियोजना के अन्तर्गत अध्यापक शिविरों का आयोजन किया गया था जहाँ इस बात पर बल दिया था कि सच्ची, वास्तविक शिक्षा (धर्म-निरपेक्षता) सर्वधर्म-समभाव, प्रजातंत्र, सहिष्णुता और पारस्परिक गुणज्ञान के मूल्यों का बीजारोपण करने के अतिरिक्त राष्ट्रीय एकीकरण और अन्तर्राष्ट्रीय समय का सृजन करेगी। राष्ट्रीय एकीकरण पर छात्रों के शिविरों का आयोजन भी विभिन्न सरकारों के सक्रिय सहयोग और सहभाग के साथ किया गया था। बच्चों की जीवन-आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा को बनाकर औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा के व्यापकीकरण पर यथेष्ट बल दिया गया था।

(इ) पठन तत्परता परियोजना

श्रेणी 1 व 2 के बच्चों के लिए महत्त्वपूर्ण कार्यों में से एक कार्य बच्चों की पठन-योग्यता का विकास करना है। हमारे अनुसंधान दर्शाते हैं कि घटिया स्तर की पठन योग्यता से घटिया समझ हो जाती है और इसका परिणाम कक्षा से हट जाना होता है। विभिन्न स्कूल विषयों में पठन योग्यता और उपलब्धि का पारस्परिक सम्बन्ध

पता करने के लिए विशद पठन परियोजना पर विभाग ने अपना काम जारी रखा। पठन परीक्षण तैयार किए गए और उनके मानक बनाए गए। पठन प्राप्तांकों और स्कूल विषयों में उपलब्धि से सम्बन्धित आँकड़े जमा किए गए और उनका विश्लेषण किया गया। बच्चों की पठन-योग्यता का स्तर पता करने के लिए प्राथमिक स्कूलों को ये परीक्षण उपयोगी रहेंगे। परीक्षणों के उपयोग के लिए निदेशों की नियम-पुस्तिकाएँ भी तैयार की गई थीं। अध्यापकों द्वारा उपयोग के लिए पठन पर एक गुटका भी तैयार किया गया है।

(ई) संगोष्ठी पठन परियोजना

प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों में नवाचार कक्षा-क्रियाकलापों को बढ़ावा देने की दृष्टि से पूर्व-वर्षों की ही भाँति संगोष्ठी पठन कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। इस प्रतियोगिता में पन्द्रह सर्वोत्तम अध्यापकों को पुरस्कार और प्रमाण-पत्र दिए गए थे।

(उ) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के साथ सहभाग/सहयोग

विभाग ने, उपरोक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त के० मा० शि० बोर्ड से सम्बद्ध उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के प्रधानाचार्यों और शिक्षा अधिकारियों के लिए पाँच अभिविन्यास-कार्यक्रमों का आयोजन किया। इन अभिविन्यास-कार्यक्रमों का आयोजन नई पाठ्यचर्या के संदर्भ में किया गया था। यह कार्य शिक्षा और समाज-कल्याण एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के कहने पर किया गया था।

(ऊ) यूनेस्को के साथ सहभाग/सहयोग

विभाग ने स्कूलों में नवाचार का संग्रह और प्रसार किया। इस क्षेत्र में कई स्वैच्छिक संगठन और संस्थाएँ भी कार्य करते रहे हैं। विभाग ने अध्यापकों द्वारा व्यापक उपयोग के लिए इनका संग्रह, जाँच और विश्लेषण किया। यूनेस्को के कहने पर, भारत में शिक्षा में नवाचारों के संग्रह के लिए तत्कालीन संयुक्त निदेशक, रा० शै० अ० और प्र० प० की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई थी। रा० शि० सं० के कुछ अन्य विभागों ने भी हमारा सहभाग किया और व्यक्ति-अध्ययन प्रणाली के माध्यम से 16 नवाचारों का अध्ययन किया गया। एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई जिसमें सम्बन्धित राज्यों के शिक्षा विभागों ने भाग लिया। संगोष्ठी की रिपोर्ट और "भारत में शिक्षा में नवाचार" शीर्षक की एक पुस्तिका का प्रकाशन और बृहत्तर उपयोग हेतु वितरण किया गया था।

2.6 शिक्षण साधन विभाग

शिक्षण साधन विभाग देश में राष्ट्रीय स्तर पर श्रव्य-दृश्य शिक्षा के विकास का प्रतीक है। इसका जोर श्रव्य-दृश्य शिक्षा, शिक्षण साधनों और फिल्मों, फिल्म-स्ट्रिपों, फ्लेनेलग्राफ स्टडी किटों आदि के रूप में सम्बद्ध सामग्री के क्षेत्र में अध्यापक-प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण पर रहा है। यह विभाग फिल्मों और फिल्मस्ट्रिपों जैसे श्रव्य-दृश्य साधनों के संग्रह, प्रसार और देश में विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं को इन्हें प्रदान

करने में भी लगा हुआ है। विभाग विभिन्न शिक्षण-साधनों की प्रभावकारिता में अनुसंधान-अध्ययन भी करता है। विभाग द्वारा 1976-77 में किए गए प्रमुख कार्यकलापों/कार्यक्रमों का उल्लेख नीचे किया जाता है :

(अ) प्रशिक्षण कार्यक्रम

1. श्रव्य-दृश्य शिक्षा में तीन सप्ताह का पाठ्यक्रम

विभाग ने 21 सितम्बर 1976 से 11 अक्तूबर 1976 तक तीन सप्ताह का श्रव्य-दृश्य शिक्षा में एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया जिसमें सारे भारत के माध्यमिक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 25 अध्यापक-प्रशिक्षकों ने भाग लिया। पाठ्यक्रम का जोर इन प्रतिभागियों को सस्ते शिक्षण साधनों की तैयारी में और आधुनिक प्रौद्योगिकी में नई तकनीकों को सीखने में भी सविस्तार प्रशिक्षण देने में था जो अवबोधन स्थितियों के शिक्षण में उपयोग हो सके।

2. श्रव्य-दृश्य शिक्षा में त्रि-साप्ताहिक क्षेत्रीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम—गंगटोक (सिक्किम में)

विभाग ने शिक्षा निदेशालय, गंगटोक के सहभाग में गंगटोक (सिक्किम) में श्रव्य-दृश्य शिक्षा में एक त्रि-साप्ताहिक क्षेत्रीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया। सारे सिक्किम से बुलाए गए पच्चीस अध्यापक उपरोक्त पाठ्यक्रम में उपस्थित हुए। पाठ्यक्रम का समापन 13 दिसम्बर, 1976 को हुआ।

3. त्रि-साप्ताहिक तकनीकी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

विभाग ने 6-28 फरवरी तक, 1977 के मध्य श्रव्य-दृश्य उपकरण के संचालन, अनुरक्षण और मरम्मत में एक त्रि-साप्ताहिक तकनीकी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया जिसमें संघ क्षेत्र दिल्ली के 20 अध्यापकों ने भाग लिया। प्रशिक्षणार्थियों को मूल उत्पादन एकक, दूरदर्शन, और दूरदर्शन स्टूडियो, विज्ञान भवन भी ले गए थे।

(आ) राज्यों/अन्य अभिकरणों के साथ सहभाग/सहयोग

(1) विभाग द्वारा तकनीकी अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थान, चण्डीगढ़ के सहभाग में मई, 1976 में श्रव्य-दृश्य शिक्षा पर एक कार्यशाला आयोजित की गई थी जिसमें श्रव्य-दृश्य शिक्षा के विभिन्न पक्षों में 27 अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया गया था।

(2) विभाग ने राज्य शिक्षा संस्थान, दिल्ली को दिनांक 13 सितम्बर से 18 सितम्बर, 1976 तक दिल्ली के वाणिज्य अध्यापकों हेतु एक संगोष्ठी एवं कार्यशाला आयोजित करने में सहायता की।

(3) विभाग ने सीमा सुरक्षा बल अकादमी, टेकमपुर को दिनांक 16 जनवरी से 22 जनवरी, 1977 तक राज्य पुलिस कार्यालयों और अन्य अधीनस्थ कार्यालयों हेतु श्रव्य-दृश्य शिक्षा पर एक "कार्यशाला" आयोजित करने में सहायता की।

(4) विभाग ने (दिल्ली विश्वविद्यालय के) लेडी इरविन कालेज को दिनांक 24 जनवरी से 29 जनवरी, 1977 तक "एम० एस० सी० की छात्राओं (समुदाय स्रोत और प्रबन्ध) हेतु एक साप्ताहिक कार्यशाला" का आयोजन करने में सहायता की जिसमें देहाती विकास कार्यक्रम में संचार-साधनों (माध्यम), फ्लैशकार्ड, फ्लैनल ग्राफ, कठपुतली आदि पर प्रयोग किए गए।

(5) गाँधीग्राम ग्रामीण स्वास्थ्य और परिवार नियोजन संस्थान, मदुराई के एक श्रव्य-दृश्य अधिकारी को दिनांक 21 फरवरी से 28 फरवरी, 1977 तक श्रव्य-दृश्य शिक्षा के विभिन्न पक्षों में अभिविन्यास प्रशिक्षण दिया।

(6) विभाग ने राज्य शिक्षा संस्थान, दिल्ली को दिनांक 28 फरवरी, 1977 से 4 मार्च, 1977 तक वाणिज्य अध्यापन पर एक कार्यशाला आयोजित करने में पुनः सहायता की।

(इ) उत्पादन कार्यक्रम

(1) समीक्षाधीन अवधि में "अण्डरस्टैंडिंग ऐनिमल्स" शीर्षक 16 एम० एम० की फिल्म का उत्पादन किया गया।

(2) 'राजस्थान' शीर्षक एक 35 एम० एम० फिल्मस्ट्रिप का उत्पादन किया गया।

(3) निम्नलिखित फिल्मों को हिन्दी रूप में डब कराया गया था :

1. कैमिस्ट्री किट
2. टीचिंग आफ साइन्स थ्रू एन्वार्यरनमैंट : रौक्स एण्ड सौइल

(4) 1976-77 में निम्नलिखित फिल्मों का उत्पादन प्रारम्भ किया गया था :

1. विज्ञान का इतिहास : 12 फिल्मों की एक श्रृंखला
2. रा० शै० अ० और प्र० प०
3. इलास्टीसिटी

(ई) अनुसंधान परियोजनाएं

(1) विभाग ने 1960-1972 तक आयोजित प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की एक मूल्यांकन-रिपोर्ट संकलित की है।

(2) विभाग ने श्रव्य-दृश्य उपकरणों और सामग्रियों की अखिल भारतीय निर्देशिका का संशोधित संस्करण प्रारम्भ किया था। उपरोक्त निर्देशिका उन विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं और अन्य संगठनों की आवश्यकताओं की पूर्ति करेगी जो श्रव्य-दृश्य सामग्रियों और उपकरणों के विभिन्न प्रकारों के स्रोतों के बारे में जानकारी और परामर्श माँगते, खोजते हैं।

(3) शिक्षण साधन विभाग के उत्पादनों और आदिप्रारूपों के मूल्यांकन पर कार्य प्रारम्भ किया गया था।

(उ) विदेशों/अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों के साथ सहभाग/सहयोग

1. अफगान राष्ट्र के व्यक्तियों का प्रशिक्षण

इण्डो-अफगान सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत चार अफगान अध्यापकों को दिनांक 5 अप्रैल से 29 जून, 1976 तक श्रव्य-दृश्य शिक्षा के विभिन्न पक्षों में प्रशिक्षण दिया गया था।

2. यूनेस्को की 30वीं वर्षगांठ का समारोह

विभाग ने अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा एकक (रा० शै० अ० प्र० प०) द्वारा दिनांक 4-5 नवम्बर, 1976 तक को शिक्षण साधन विभाग में आयोजित यूनेस्को की 30वीं वर्षगांठ के समारोहों का स्मरणोत्सव मनाने के लिए यूनेस्को एसोशिएटैड स्कूल्स के सेमिनार में प्रदर्शनी व सजावट की व्यवस्था करने में अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा एकक (रा० शै० अ० प्र० प०) की सहायता की।

2·7 पाठ्यपुस्तक विभाग

(अ) राष्ट्रीय एकीकरण की दृष्टि से पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन

पाठ्यपुस्तक विभाग, रा० शै० अ० और प्र० प० ने शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय के कहने पर, राष्ट्रीय एकीकरण की दृष्टि से भारत में अंग्रेजी माध्यम स्कूलों की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन का एक कार्यक्रम किया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत इस वर्षावधि में अंग्रेजीमाध्यम स्कूलों में उपभोग में लाई जा रही बंगाली और असमिया की पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन किया जा चुका है। अन्य विषयों में पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन विगत वर्षों में पहले ही किया जा चुका है।

(आ) राज्यों/अन्य अभिकरणों के साथ सहभाग/सहयोग

पाठ्यपुस्तक विभाग देश में अन्य संगठनों का सहयोग समय-समय पर लेता रहता है। विभाग ने महाराष्ट्र राज्य स्कूल शिक्षा मंडल और महाराष्ट्र पाठ्यपुस्तक उत्पादन व पाठ्यचर्या अनुसंधान ब्यूरो की पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन कराने में शैक्षणिक और वित्तीय सहायता प्रदान की। अंग्रेजी, मराठी, सामान्य विज्ञान, भौतिकी, रसायन, जीव-विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र विषयों की पाठ्यपुस्तकों का विशद मूल्यांकन किया गया था। मूल्यांकन रिपोर्टें उपयुक्त आवश्यक कार्यवाही हेतु संबंधित शिक्षा प्राधिकारियों के पास भेज दी गई थीं।

(इ) विकासात्मक कार्यक्रम

(1) विभाग विभिन्न विषयों में पाठ्यपुस्तकों की तैयारी और मूल्यांकन के लिए सिद्धान्तों और कार्यविधि हेतु संप्रत्ययात्मक साहित्य विकसित करता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, विभाग ने नागरिक शास्त्र में पाठ्यपुस्तकों की तैयारी और मूल्यांकन के लिए सिद्धान्तों और कार्यविधि पर एक विवरणिका को अन्तिम रूप दिया। अर्थ-

शास्त्र, व्याकरण, अंग्रेजी में पूरक पाठमालाओं, मातृ-भाषा में पाठ्यपुस्तकों, द्वितीय भाषाओं में पाठ्यपुस्तकों, पर्यावरण अध्ययन (सामाजिक अध्ययन) और भाषा में अभ्यास-विकास में पाठ्यपुस्तकों की तैयारी और मूल्यांकन के लिए सिद्धान्तों और कार्यविधि पर विवरणिकाओं का विकासकार्य भी चल रहा है।

(2) इस वर्ष, विभाग ने विज्ञान, गणित, नागरिक शास्त्र और पर्यावरण अध्ययन (सामाजिक अध्ययन) पर पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन हेतु उपकरण विकसित कर लिए हैं।

(3) विभाग ने प्राकृतिक विज्ञानों, गणित, सामाजिक विज्ञानों और भाषाओं में पाठ्य-विवरणों के मूल्यांकन हेतु कसौटी और उपकरण तैयार किए।

(4) विभाग ने प्राकृतिक विज्ञानों, गणित, सामाजिक विज्ञानों और भाषाओं में पाठ्यपुस्तकों के पूर्व-परीक्षण के लिए उपकरण विकसित किए हैं।

(5) विभाग अंग्रेजी में अच्छी पठन सामग्री की एक सटीक ग्रंथ सूची तैयार कर रहा है।

(ई) अनुसंधान परियोजनाएँ

विभाग ने "स्कूल पाठ्यचर्या (कक्षा 9-10) का तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक अनुसंधान-अध्ययन पूरा कर दिया और समीक्षाधीन वर्ष में निम्नलिखित अनुसंधान-अध्ययनों पर कार्य जारी रखा।

(1) हिन्दी भाषी क्षेत्रों से संबंधित प्राथमिक कक्षाओं की शब्दावली का संकलन और भाषिक विश्लेषण।

(2) माध्यमिक कक्षाओं की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित हिन्दी साहित्य के विभिन्न रूप—अनुदेशात्मक उद्देश्यों और बच्चों की रुचि की दृष्टि से उनकी प्रभावकारिता का अन्वेषण।

(3) जिन राज्यों में कक्षा 10 की समाप्ति पर लोक-परीक्षाएँ होती हैं उन राज्यों के विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञानों, अंग्रेजी और हिन्दी पाठ्य-विवरणों में प्रतिबिम्बित मानकों का तुलनात्मक अध्ययन।

(4) मातृभाषायी पाठ्यपुस्तकों का तुलनात्मक अध्ययन।

(5) भूगोल की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों का महत्त्व।

(6) इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में सामग्री का अध्ययन, जो
   (1) राष्ट्रीय एकीकरण को खतरे में डालती है
   (2) राष्ट्रीय एकीकरण का संवर्धन करती है।

(7) पाठ्यपुस्तकों के विकास का एक अध्ययन और परिवर्तनशील समाज के संदर्भ में औपचारिक शिक्षा में उनकी भूमिका (स्वतंत्रता पश्चात् की अवधि पर विशेष बल देते हुए प्राचीन काल से आधुनिक काल तक)।

(उ) मूलपाठ-विषयक सामग्री का राष्ट्रीय केन्द्र

यह विभाग मूल पाठ-विषयक सामग्री के एक राष्ट्रीय केन्द्र का अनुरक्षण भी करता है जहाँ सभी राज्यों की पाठ्यपुस्तकें, पाठ्य-विवरण और अन्य पठन सामग्री रखी गई है। समीक्षाधीन अवधि में राज्यों द्वारा प्रकाशित नई पाठ्यपुस्तकों और पूरक पाठशालाओं को इस केन्द्र में संग्रहीत कर दिया गया है।

2·8 प्रकाशन विभाग

प्रकाशन विभाग का काम शिक्षा के क्षेत्र में प्रकाशनों की व्यापक सामग्री यथा स्कूल स्तर की पाठ्यपुस्तकों, अभ्यास पुस्तिकाओं, अध्यापक दर्शिकाओं, पूरक पठन सामग्रियों, अनुसंधान मोनोग्राफस् और रिपोर्टों, शिक्षा की पत्र-पत्रिकाओं, पैम्फलेट और विवरणिकाओं का प्रकाशन और वितरण है।

समीक्षाधीन अवधि में प्रकाशन विभाग का एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य 1977-78 सत्र की कक्षा 1, 3, 5, 9 और 11 के लिए नई 10+2 पद्धति लागू करने के कार्यक्रम के प्रथम चरण में नई पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन कार्य में रा० शै० अ० प्र० प० के साथ निजी क्षेत्र के प्रकाशकों का सहयोग प्राप्त करना था। चूंकि पाठ्यपुस्तकों के 56 प्रथम संस्करणों का उत्पादन और वितरण करना था, इसलिए परिषद् ने निश्चय किया कि प्रकाशन विभाग के सीमित साधनों को देखते हुए इन पाठ्यपुस्तकों की बड़ी संख्या मुद्रण, प्रकाशन और वितरण के लिए प्रयोग के तौर पर निजी क्षेत्र के प्रकाशकों को दे दी जाए। तदनुसार, 56 शीर्षकों में से 48 के प्रकाशन और वितरण के अधिकार निजी क्षेत्र के प्रकाशकों को दे दिए गए। शेष 8 शीर्षकों और बची हुई स्कूल कक्षाओं के लिए पुरानी पद्धति की पाठ्यपुस्तकों के पुनर्मुद्रण का कार्य स्वयं प्रकाशन विभाग ने किया।

समीक्षाधीन अवधि में निजी क्षेत्रों के प्रकाशकों को दी गई 48 नई पाठ्य-पुस्तकों के साथ ही विभाग ने स्वयं भी 155 शीर्षक (मूल संस्करण, और संशोधित संस्करण/पुनर्मुद्रण सहित) प्रकाशित किए। प्रकाशित पुस्तकों की सूची परिशिष्ट-छ में दी गई है। श्रेणी अनुसार विवरण नीचे दिया गया है।

श्रेणी	प्रकाशित पुस्तकों की संख्या
पुस्तकें	68
अध्यापक दर्शिकाएँ/और अभ्यास पुस्तिकाएँ	11
पूरक पाठमालाएँ	11
अनुसंधान मोनोग्राफ्स और अन्य विकासात्मक सामग्री और रिपोर्ट	39
सावधिक पत्र-पत्रिकाएँ	26
कुल	155

प्रकाशन विभाग ने समीक्षाधीन वर्ष में रु० 75·45 लाख की बिक्री की। इसी के साथ सीधे निर्यात आर्डरों के माध्यम से अमेरिकी 730·60 डालर की बिक्री भी की गई।

हमारे राष्ट्रीय वितरक, प्रकाशन प्रभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली ने अपने नई दिल्ली, बंबई और कलकत्ता बिक्री केन्द्रों से उत्तरी, पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों में परिषद् के प्रकाशनों की बिक्री और वितरण को जारी रखा। दक्षिणी क्षेत्र और गुजरात का कार्य प्रकाशन विभाग ने किया। यही विभाग निर्यात आर्डरों का सीधा निबटान भी करता रहा।

परिषद् की सभी पत्र-पत्रिकाओं का वितरण और बिक्री भी विभाग द्वारा ही सीधी की जाती रही।

विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के विकासशील देशों के साथ तकनीकी और आर्थिक सहयोग कार्यक्रम के अन्तर्गत रु० 6632·35 मूल्य के परिषद् के प्रकाशन कन्सूलेट जनरल आफ इण्डिया, सिडनी, आस्ट्रेलिया के माध्यम से टोंगा सरकार को भेजे गये थे।

विभाग ने रा० शै० अ० प्र० प० के प्रकाशनों का प्रचार करने के लिए पुस्तक मेलों और प्रदर्शनियों में भाग लेना जारी रखा। विभाग ने नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली द्वारा अहमदाबाद में जनवरी 1977 में आयोजित आठवें राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भाग लिया। इसने नेशनल बुक ट्रस्ट के माध्यम से परिषद् के चुने हुए प्रकाशनों को भेज कर क्वालालम्पुर, बैंकाक, अंकारा, मेक्सिको सिटी, सुवा (फिजी), हाँगकाँग, काहिरा, बोलगोना (इटली), बेलग्रेड में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेलों/प्रदर्शिनियों में, इसी समीक्षाधीन वर्ष में भाग लिया।

विभाग ने व्यावसायिक अध्ययन महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देना भी जारी रखा। समीक्षाधीन वर्ष में, उपरोक्त महाविद्यालय के स्नातक-पूर्व (पुस्तक-प्रकाशन के) छात्रों को प्रकाशन-व्यवसाय में व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया गया था।

विभाग ने 1976-77 में रा० शै० अ० और प्र० प० के प्रकाशनों को मूल रूप में ग्रहण कर लेने/अनुकूलन कर लेने की कापीराइट अनुमति निम्नलिखित अधिकरणों को दी :

(1) जम्मू और कश्मीर स्कूल शिक्षा बोर्ड, जम्मू व कश्मीर
(2) शिक्षा निदेशालय (विज्ञान शाखा), नई दिल्ली
(3) गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद
(4) गुजरात राज्य स्कूल पाठ्यपुस्तक मंडल, अहमदाबाद
(5) पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीयकरण एकक, इलाहाबाद
(6) मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम, भोपाल
(7) हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा मंडल, शिमला

(8) राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, हरियाणा, गुड़गाँवा
(9) राज्य शिक्षा संस्थान, हरियाणा, गुड़गाँवा

2.9 कार्यशाला (वर्कशाप) विभाग

(अ) किटों और किट-मदों का विकास

(1) 9, 10, 11 व 12 के लिए किटों का विकास :

नए पाठ्य-विवरण के लिए उपकरण और इलैक्ट्रोनिक-किटों का विकास किया जा रहा है। पाठ्य-विवरण की अपेक्षाओं को समझा गया है और कुछ सरल व कम दाम वाले इलेक्ट्रोनिक सर्किटों को, जो इलेक्ट्रौनिक्स में मूल धारणाओं को दर्शाते हैं और बेसिक ट्यूब (डिओड और ट्रिओड), बेसिक सेमी-कंडक्टर्स सर्किटों (रैक्टिफायर, एम्प्लीफायर, ओस्सीलेटर, मोड्यूलेटर आदि) जैसे इलैक्ट्रौनिक-यन्त्रों का उपयोग बताते हैं, जमा कर लिया गया है। साथ ही लाइट डिपेन्डैंट रेज़िस्टर, ट्वाय मोटर, थर्मोस्टैट्स, रिले, गैस ट्यूब, डिओड, सिम्पल स्विचिंग सर्किट्स, बाइनरी सर्किट्स आदि प्रयोग करने वाले विविध सर्किट्स भी विकसित किए गए हैं।

(2) प्राथमिक विज्ञान शिक्षण के लिए उपकरण का विकास

प्राथमिक विज्ञान किट का पुनः नमूना बनाकर पहले वाले नमूने की लागत काफी कम कर दी गई है। अन्ध-विद्यालय के उपयोग के लिए चुम्बकीय कम्पास, वाटर व्हील, मेजरिंग सिलैंडर, वाटर पम्प, स्प्रिंग बेलेंस और डैसीमीटर क्यूब वैसल के विशेष नमूने विकसित किए गए हैं।

(3) परम्परागत उपकरणों के स्थान पर कम खर्चीले विकल्पों का विकास

निम्नलिखित मदों का विकास किया गया था :

1. स्ट्रैपिंग बेलैंस
2. आप्टीकल माइक्रोमीटर
3. आप्टीकल बैंच
4. स्प्रिंग बैलैंस
5. सिंगल पैन बैलैंस
6. लीवर अप्पैरेटस
7. इंक्लाइंड प्लेन
8. सैल होल्डर व स्विच
9. ओवर फ्लो जार
10. कामन बैलैंस
11. वाटर टाइमर
12. करंट रि-वर्सर
13. लाइनियर ऐक्सपैंशन अप्पैरेट्स
14. हीटिंग सोर्स

15. टेलिग्राफ़
16. हीटिंग स्टैंड और फनल स्टैंड
17. वायर टैस्ट ट्यूब होल्डर
18. ट्रिपौड स्टैंड
19. विलोसिटी आफ़ साउंड अप्पैरेटस
20. "यू" ट्यूब मैनोमीटर
21. शार्ट इंटरवल टाइमर
22. इलैक्ट्रिक मोटर
23. डेफ्लोग्रेटिंग स्पुन
24. कार्बन आर्क फर्नेस
25. साल्टर वाटर रिह्योस्टैट
26. किप्स गैस जेनेरेटर
27. ड्रौपिंग फनल
28. सिम्पल माइक्रोमीटर
29. माइक्रो प्रोजैक्टर
30. कम्पाउंड माइक्रोस्कोप
31. साइरन डिस्क
32. सैंटर आफ़ ग्रेविटी अप्पैरेट्स
33. रोटेशन मशीन
34. कन्डक्टीविटी आफ़ हीट
35. कंपोजीशन आफ़ फोर्सेस
36. डिप्पिंग नीडल

(आ) किटों और किट-पदों का उत्पादन

(1) विभाग ने यूनिसेफ की आवश्यकतानुसार प्राथमिक विज्ञान किटों के विशाल उत्पादन का कार्य किया।

(2) इस समीक्षावधि में, यूनिसेफ को आपूर्ति आर्डर से भिन्न एक हजार एक सौ दो प्राइमरी विज्ञान किटों का उत्पादन भी किया गया था। इन में से 900 किट निम्नलिखित दो राज्यों को भेजे गए थे :

1. हिमाचल प्रदेश — 400 किट
2. अरुणाचल प्रदेश — 500 किट

(3) विभाग ने अन्य प्रकार के किट भी विभिन्न राज्यों को भेजे :

1. भौतिकी 1 किट 76
2. भौतिकी 2 किट 45
3. भौतिकी 3 किट 77
4. जीव-विज्ञान डिमौन्स्ट्रेशन किट 46
5. रसायन डिमौन्स्ट्रेशन किट 46

(4) भौतिकी 1, भौतिकी 2, भौतिकी 3, जीव-विज्ञान डिमौन्स्ट्रेशन, रसायन डिमौन्स्ट्रेशन किटों वाला एक सैट विदेश मंत्रालय के माध्यम से आदिस अबाबा, इथोपिया भेजा गया था।

(इ) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के अन्य विभागों का अनुरक्षण व सेवा कार्य

विभाग ने रा० शि० संस्थान के विभिन्न विभागों में अनेकों पार्टीशन (लकड़ी की विभाजक दीवारें) लगाए। इसके अतिरिक्त, विभाग ने बुक-स्टैंड, चार्ट-बक्स, स्वागत-कक्ष, सूचना-पट्ट आदि जैसे कई विविध निर्माण भी किए। इसने रा० शि० संस्थान में लकड़ी-मरम्मत के भी अनेक काम किए। विभाग ने एक शैड, और रा० शि० संस्थान परिसर में केन्द्रीय विद्यालय की कक्षाओं के लिए स्टील-ढाँचों की संरचना भी की। विभाग ने रा० शै० अ० और प्र० प० के नाम-पट्ट बनाने का कार्य भी किया।

विभाग ने परिसर के सभी एयर-कूलरों, एयर-कन्डीशनरों, वाटर-कूलरों और पंखों की मरम्मत व अनुरक्षण-कार्य भी किया। विभाग ने रा० शि० संस्थान के सभा-भवन और सम्मेलन-कक्ष में जन-सम्बोधन-विधि यंत्रों की मरम्मत व सेवा को भी बनाए रखा। इसने रा० शि० संस्थान के सभा-भवन और सम्मेलन-कक्ष में पंखे लगाए। विभाग रा० शि० संस्थान के वाहनों का अनुरक्षण करता रहा था और इन वाहनों की मरम्मत के छोटे व बड़े दोनों ही कामों को स्वयं ही करता रहा। विभाग के गिलोटिन शियर और हाइड्रोलिक प्रैस की मेजर ओवर हालिंग भी की गई थी।

(ई) शिक्षु प्रशिक्षण

कार्यशाला विभाग शिक्षु अधिनियम, 1961 के अन्तर्गत विभिन्न व्यवसाय-विधाओं में प्रशिक्षण देता है। इस योजना के अन्तर्गत, इस वर्षावधि में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के सात शिक्षुओं और एक स्नातक इन्जीनियर को प्रशिक्षित किया गया था।

(उ) विज्ञान प्रदर्शन पर कार्य

विभाग ने तीनमूर्ति भवन पर हुई राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी के आयोजन में विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग के साथ योगदान और पूर्ण सहयोग किया। पहले वर्षों की ही भाँति, कार्यशाला विभाग ने अनेक प्रदर्शनी वस्तुएँ तैयार कीं और दुकानें तैयार करने में विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग की सहायता की, तथा प्रदर्शनी के मुख्य-द्वार की रचना की।

(ऊ) अन्य विविध कार्य

(1) विभाग ने +2 स्तर पर विभिन्न व्यवसायों के लिए पाठ्यचर्या तैयार की। विभिन्न व्यवसायों पर प्रारूप तैयार किए गए थे और उन पर, परिषद् द्वारा इस कार्य के लिए निर्मित समिति के समक्ष कई बार विचार-विमर्श के बाद इनको अन्तिम रूप दिया गया और प्रस्तुत किया गया।

(2) कार्यशाला ने विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग द्वारा निम्नलिखित दो पुस्तकें प्रकाशित करने में सहभाग किया—

(क) कार्यशाला अनुदेशकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

(ख) स्थानीय साधनों का प्रयोग करके विज्ञान का शिक्षण।

2.10 शिक्षा व्यावसायीकरण एकक

(अ) व्यावसायीकरण पर राष्ट्रीय प्रलेख

एकक ने उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायीकरण पर एक प्रारूप तैयार किया जिसे जून, 1976 में राष्ट्रीय सम्मेलन के बाद संशोधित कर दिया गया था।

(आ) जिला व्यावसायिक सर्वेक्षण

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के सहभाग में गंगानगर, दुर्ग, मैसूर और कटक जिलों में चार व्यावसायिक सर्वेक्षण किए गए थे। द्रुत सर्वेक्षण आयोजित करने के लिए राज्यों को मार्गदर्शन निरूपण हेतु नवम्बर, 1976 में एक कार्यशाला का आयोजन भी किया गया था।

(इ) व्यावसाय विषयों में पाठ्य-विवरणों की तैयारी

एकक ने कृषि, वाणिज्य, इन्जीनियरी, गृह विज्ञान, पैरामेडिकल विज्ञानों के प्रमुख क्षेत्रों में 25 व्यावसायों के पाठ्य-विवरण और पर्यटन व फोटोग्राफी जैसे अन्य कई पाठ्यक्रम तैयार किए। ये सूचियाँ केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली प्रशासन और केन्द्रीय विद्यालय संगठन को दे दी गई हैं। ये पाठ्य-विवरण कुछ राज्यों को भी भेजे गये थे। कर्नाटक ने रा० शै० अ० और प्र० प० द्वारा प्रस्तावित प्रणाली को अभी तक मूल रूप में ग्रहण कर लिया है। तमिलनाडु 1978 से व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ करने हेतु एक विशद योजना पर कार्य कर रहा है।

2.11 परीक्षा अनुसंधान एकक

परीक्षा अनुसंधान एकक की स्थापना परिषद् द्वारा अप्रैल, 1975 में परीक्षा सुधार और प्रतिभा पहचानने के लिए परीक्षा विकास के कार्यक्रमों हेतु अनुसंधान आधार प्रस्तुत करने के वास्ते की गई थी। समीक्षाधीन अवधि में इसने निम्नलिखित कार्यक्रमों को अपनाया:

(अ) बुद्धि का गैर शाब्दिक परीक्षण

इस परियोजना के अन्तर्गत, मान्य आवासीय माध्यमिक स्कूलों में राष्ट्रीय गुण छात्रवृत्ति योजना के सम्बन्ध में प्रति वर्ष एक परीक्षण तैयार किया जाता है और शिक्षा व समाज कल्याण मन्त्रालय को दे दिया जाता है। समीक्षाधीन अवधि में दो परीक्षण तैयार किए गए थे और मन्त्रालय को मई, 1976 व सितम्बर, 1976 में दे दिए गए थे।

(आ) सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण

इस परियोजना के अन्तर्गत, रा० शै० अ० प्र० प० की राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना की कक्षा 10 के लिए प्रति वर्ष एक परीक्षण तैयार करना होता है। समीक्षाधीन अवधि में, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा, 1977 के लिए सामान्य मानसिक योग्यता का एक परीक्षण तैयार किया गया था।

(इ) प्राथमिक स्कूल शिक्षा के भाव परिणामों का माप

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक स्कूल शिक्षा की समाप्ति पर छात्रों के भाव गुणों (रुचियों, दृष्टिकोणों, मूल्यों) को मापने हेतु उपकरणों/प्रक्रियाओं का विन्यास विकसित करना है। प्राथमिक स्कूल भाषा पाठ्यपुस्तकों की भाव अन्तर्वस्तु का विश्लेषण कार्य चल रहा है।

(ई) स्कूल पर्यावरण का निर्धारण

इसका मुख्य उद्देश्य स्कूल पर्यावरण मापने के लिए एक उपकरण विकसित करना है। इस परियोजना को 'एरिक' द्वारा एक मार्गदर्शी योजना के रूप में स्वीकार किया गया था जिसके अन्तर्गत तीन स्कूल आते हैं—एक नगर पालिका का, एक केन्द्रीय और एक ग्रामीण स्कूल। कार्य चल रहा है।

(उ) विभेद अभिक्षमता परीक्षण माला

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य हिंदी क्षेत्र के स्कूलों की कक्षा 8 के छात्रों की विकसित योग्यताओं को मापने के लिए उपकरण विकसित करना है। इस माला में ग्यारह परीक्षण हैं जिनका प्रयोग किया जा चुका है और एकांश विश्लेषण के आधार पर जिन्हें अन्तिम रूप दिया जा चुका है। ये परीक्षण मार्गदर्शन और निदर्शन में उपयोग हेतु हैं।

(ऊ) विज्ञान प्रतिभा में अध्ययन

इस परियोजना का उद्देश्य विज्ञान प्रतिभा में स्कूलों से अलग हो जाने वाले छात्रों की दर का, अलग होने के कारणों का, परीक्षा परिणामों का अध्ययन करना और इस योजना के लिए चुने गए लोगों व जिन्होंने इसके लिए आवेदन दिए उनकी पृष्ठभूमि में कारणों का ब्यौरे सहित विश्लेषण करना है। इन दोनों अध्ययनों की रिपोर्ट तैयार करली गई हैं।

(ए) सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन और बच्चों में सृजनात्मक क्रियात्मकता में परिवर्त्तन

इस परियोजना का उद्देश्य सृजनात्मक व्यवहार में लौकिक परिवर्तन के प्रभावों का अध्ययन करना है। सृजनात्मकता के परीक्षण और अन्य उपकरण तैयार कर लिए गए हैं, तथा इस अध्ययन के लिए आधार-सामग्री जमा की जा रही है।

(ऐ) सीरम मूत्राम्ल, बुद्धिजीव और व्यक्तित्व

यह अध्ययन संज्ञानात्मक योग्यताओं और व्यक्तित्व के जैव रासायनिक आधार

का पता लगाने का प्रयास करेगा। इसके लिए उपकरण तैयार कर लिए गए हैं। रक्त नमूना जमा करने के लिए प्रबन्ध किए जा रहे हैं।

(ओ) माध्यमिक शिक्षा मण्डल, राजस्थान, अजमेर द्वारा कक्षा 9, 10 व 11 के लिए अपनाई गई विशद आन्तरिक निर्धारण योजना का मूल्यांकन

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य कठिनाइयों को समझना और इस योजना के प्रभावी अनुपालन हेतु इन कठिनाइयों का हल करने के लिए साधनों और उपायों को समझना है।

समीक्षाधीन अवधि में, योजना पर उपयुक्त साहित्य का अध्ययन किया गया था और मण्डल के शैक्षणिक कर्मचारी वर्गों से परामर्श किया गया था। तब, अध्ययन हेतु उपकरणों का निश्चय किया गया था। उपकरण तैयार किए गए थे और इसका प्रथम पूर्व परीक्षण सितम्बर, 1976 में किया गया था।

2.12 परीक्षा सुधार एकक

इस एकक द्वारा 1976-77 की अवधि में किए गए महत्त्वपूर्ण कार्य निम्न-लिखित हैं :

(अ) विकास कार्यक्रम

(1) प्रश्न बैंकों का विकास :

प्रश्न बैंक तैयार करने के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भाषा और गणित शिक्षण करने वाले केन्द्रीय विद्यालय संगठन के 75 स्नातकोत्तर अध्यापकों के अभि-विन्यास के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गयी थी। वस्तुनिष्ठ निबन्ध प्रकार, लघु उत्तर प्रकार, और अति लघु उत्तर प्रकार के प्रश्नों के रूप में नमूने की दृष्टांत सामग्री विकसित की गई थी। इसके अतिरिक्त कक्षा 9 के लिए निर्धारित पाठ्य विवरणों के विभिन्न विषयों पर वस्तुनिष्ठ आधारित लगभग 1,000 प्रश्नों को भी तैयार किया गया था।

(2) श्रेणीकरण पर संगोष्ठी :

श्रेणीकरण पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई थी जिसमें सारे भारत से 20 विशेषज्ञों ने भाग लिया था। ये प्रतिनिधि परीक्षाओं से सम्बन्धित विभिन्न अभिकरणों से यथा विश्वविद्यालय अनुसन्धान आयोग, आई० आई० टी०, राज्य स्कूल बोर्डों, माध्यमिक शिक्षा बोर्डों, अध्यापक-प्रशिक्षण महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि से आये थे।

मुख्य सिफारिशें निम्नलिखित थीं :

(1) श्रेणीकरण 7 अंक मापनी पर किया जाना चाहिए।

(2) सफल या विफल (पास या फेल) की शब्दावली में परिणाम घोषित करने की प्रथा समाप्त कर देनी चाहिए।

(3) विद्यार्थियों को अपनी श्रेणियों को सुधारने के अवसर दिए जाने चाहिए ।

(4) फिलहाल श्रेणियों का निर्धारण अंकों के आधार पर किया जा सकता है ।

(5) प्रश्न-पत्रों की कोटि सुधारी जानी चाहिए ।

(6) अध्यापकों, प्रश्न-पत्र बनाने वालों और प्रशिक्षकों को श्रेणीकरण की नयी पद्धति में अनुस्थापित किया जाना चाहिए ।

(3) मूल्यांकन, प्रक्रियाओं पर संप्रत्ययात्मक सामग्री का विकास

निम्नलिखित मोनोग्राफों की एक श्रृंखला विकसित की गयी थी :

(1) सेमेस्टर पद्धति के अन्तर्गत मूल्यांकन, मानकों के अनुरक्षण हेतु मार्ग-दर्शी संकेत

(2) परीक्षा में श्रेणीकरण का तन्त्र

(3) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर मूल्यांकन (शैक्षणिक और व्यवसायिक विषय)

इनको राज्य स्तरीय शैक्षिक अभिकरणों, विशेष रूप में राज्य स्कूल शिक्षा बोर्डों/राज्य माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में परिचालित किया गया ।

(4) पश्चिम बंगाल कार्य शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित मूल्यांकन के नये उपागम पर अध्ययन

पश्चिम बंगाल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा अभी हाल में प्रारम्भ किए गये कार्य-शिक्षा में बाह्य परीक्षा का अध्ययन करने हेतु कलकत्ता में 10 स्कूलों का भ्रमण किया गया था और, शैक्षिक परियोजनाओं और उत्पादक परियोजनाओं की दृष्टि से कार्य-शिक्षा में मूल्यांकन योजना को क्रियात्मक रूप में देखा गया था । इनमें कमियों का पता लगाने के लिए अध्ययन पर एक रिपोर्ट तैयार की गयी थी और बोर्ड को उपर्युक्त सिफारिशें भेजी गयी थीं ।

(5) राजस्थान में स्वायत्त स्कूलों का गहन अध्ययन

राजस्थान के 2 स्कूल—वनस्थली विद्यापीठ और उदयपुर में विद्या भवन पूरी तरह स्वायत्त स्कूल हैं । तीसरे स्कूल, मरुधर केसरी विद्यालय (राणावास) में भी आन्तरिक निर्धारण की एक योजना विकसित की है और मूल्यांकन में नवीन पद्धतियों का विकास करने के लिए इन स्कूलों की मूल्यांकन पद्धति और स्वायत्त-प्रतिमान का अध्ययन किया गया था ।

(6) श्रेणी कक्ष अवबोधन परिमार्जन परियोजना

वस्तु-निष्ठ आधारित अनुदेश और मूल्यांकन के माध्यम से श्रेणी कक्ष में एकीकृत शिक्षण और परीक्षण के उपागम के सत्यापन और मान्यकरण के लिए श्रेणीकरण

अवबोधन परिमार्जन परियोजना शीर्षक एक परियोजना का विकास किया गया था और इसका दिल्ली के एक केन्द्रीय विद्यालय में कक्षा 7 में पूर्ण परीक्षण किया गया था। इन परिणामों का, जो अभी तक उत्साहवर्धक हैं, अनुसरण किया जाना प्रस्तावित है।

(7) हिन्दी, अंग्रेजी, जीव-विज्ञान, अर्थशास्त्र और भूगोल में परीक्षण विकास

विषय विशेषज्ञों और प्रशिक्षित नव-लेखकों के एक समूह द्वारा माध्यमिक स्तर के लिए एकक परीक्षण विवरणिकाएँ तैयार की गयी थीं। व्यापक प्रचार और उपयोग के लिए ये विवरणिकाएँ मुद्रणाधीन हैं।

(8) प्रकाशन

एकक द्वारा इस वर्ष निम्नलिखित प्रकाशनों को अन्तिम रूप दिया गया था :

(1) परीक्षण सामग्री का शिक्षण में उपयोग
(2) परीक्षा सुधार कार्य—कुछ उभरती उपनीतियाँ
(3) स्कूल विषय के निदेशात्मक उद्देश्य
(4) हंगरी में शिक्षा
(5) दिल्ली, मध्यप्रदेश और राजस्थान में स्कूल स्तर पर पत्राचार पाठ्यक्रम पर परियोजना रिपोर्ट
(6) भूगोल में एकक परीक्षण कक्षा 9 के लिए
(7) अंग्रेजी में एकक परीक्षण कक्षा 9 के लिए

(आ) भाषा-परीक्षण में अल्पकालिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

छात्र उपलब्धि में परीक्षण हेतु भाषा अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए भाषा परीक्षण में एक अल्पकालिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया था। इसमें 21 अध्यापक उपस्थित रहे।

(इ) राज्य/अन्य अभिकरणों के साथ सहभाग

(1) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड हेतु भाषा, सामाजिक अध्ययन, विज्ञान और गणित में 10+2 में प्रतिरूप प्रश्न-पत्रों के विकास के लिए कार्यकर समूह

हिन्दी, अंग्रेजी, भूगोल, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, इतिहास, नागरिकशास्त्र, भौतिकी, रसायन, जीव-विज्ञान और गणित में नमूने के प्रश्न-पत्र कक्षा 10 के लिए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सहभाग में विकसित किए गए थे।

रूपरेखा गणन-कुंजियाँ और प्रश्नानुसार विश्लेषण सहित पूरे प्रश्न-पत्र प्रत्येक वर्ग में तैयार किए गए थे। अध्यापकों और विद्यार्थियों के उपयोग के लिए प्रत्येक विषय में एक छोटी विवरणिका भी तैयार की गयी थी।

(2) स्वास्थ्य शिक्षा में मूल्यांकन की योजना

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सहभाग में स्वास्थ्य शिक्षा में आन्तरिक निर्धारण की योजना बनाने के लिए दिल्ली में एक कार्यशाला आयोजित की गयी

थी। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, स्वास्थ्य शिक्षा के मूल्यांकन के लिए इन मार्गदर्शी संकेतों का उपयोग करना चाहता है।

(3) कार्य-अनुभव में मूल्यांकन की योजना

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सहभाग में अध्यापकों के उपयोग के लिए उपागम, मूल्यांकन की कसौटी, उपकरण, तकनीक और मार्गदर्शी संकेतों को इंगित करते हुए कार्य-अनुभव में मूल्यांकन पर एक विशद योजना विकसित की गयी थी। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा अनुपालन हेतु इस योजना पर विचार किया जा रहा है।

(4) सिक्किम को परामर्श योगदान : अध्यापक-प्रशिक्षण का कार्यक्रम

शिक्षा विभाग, सिक्किम द्वारा अध्यापकों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में शैक्षिक मूल्यांकन पर पाठ्यक्रम का संयोजन एकक द्वारा किया गया था और संप्रत्ययात्मक तथा दृष्टान्त जानकारी एकक द्वारा ही दी गयी थी।

(5) सिक्किम के लिए मिडिल स्तर पर परीक्षण सामग्री का विकास

मिडिल स्कूल स्तर पर परीक्षण सामग्री का विकास शिक्षा विभाग, सिक्किम के सहभाग में किया गया था। सामग्री की तैयारी और अभिविन्यास सिक्किम में मिडिल स्कूल स्तर पर मूल्यांकन की पद्धति को सरल और कारगर बनाने के लिए और श्रेणी कक्ष शिक्षण व परीक्षण में परिमार्जन की शैली में अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए योजना के रूप में ही संचालित किया गया था। सभी विषयों में कक्षा 8 के लिए प्रश्न-पत्रों का एक सार-संग्रह महत्त्वपूर्ण परिणाम था।

(6) नागालैंड के प्रश्न-पत्र बनाने वालों के अभिविन्यास हेतु एक मूल्यांकन कार्यशाला

नागालैंड स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा परीक्षा सुधार कार्यक्रम के एक अंश के रूप में नागालैंड बोर्ड के प्रश्न-पत्र बनाने वालों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गयी थी। आयोजन रूपरेखा, रूपरेखा उत्तर, अंक देने की प्रणाली, और प्रश्नानुसार विश्लेषण सहित नमूने के प्रश्न-पत्र अंग्रेजी, अंगामी, भूगोल, वाणिज्य, लोक-प्रशासन, विज्ञान और गणित में और अ ओ (ए ओ) में तैयार किए गए थे, और शिक्षण निर्धारित प्रश्न-पत्रों की तैयारी और उपयोग पर एक विवरणिका विकसित की गई थी। नागालैंड शिक्षा बोर्ड विद्यार्थियों और अध्यापकों के मार्गदर्शन के लिए इन विवरणिकाओं को मुद्रित करने और स्कूलों में परिचालित करना चाहता है।

(ई) विदेशी सहभाग

(1) विदेशी नागरिकों के लिए शैक्षिक मूल्यांकन में अल्पकालिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत अफगानिस्तान के दस अध्यापकों-प्रशिक्षकों और प्रशासकों व नीति-निर्माताओं के लिए एक अल्पकालिक प्रशिक्षण पाठयक्रम आयोजित किया गया था। आठ सप्ताह के पाठ्यक्रम की अवधि

में वे मूल्यांकन के नए संप्रत्यय/स्कूल मूल्यांकन और नैदानिक परीक्षण में प्रशिक्षित किए गए थे।

भारत के राष्ट्रपति को इस वर्ग द्वारा स्वयं प्रस्तुत की गयी रिपोर्ट से निम्नलिखित उद्धरण का विशेष उल्लेख किया जाना समीचीन प्रतीत होता है :

"हम गम्भीर रूप से विचार किए जाने के लिए यह विनम्र सुझाव रखना चाहते हैं कि भारत अपनी निर्यात सूची पर शिक्षा को भी रख ले। शैक्षिक मूल्यांकन सहित विशेष रूप से परीक्षा सुधार को इसमें प्रथम स्थान दिया जाए।"

(2) भारत में परीक्षा सुधार पर एक-व्यक्ति अध्ययन

यूनेस्को के अनुरोध पर, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने भारत में परीक्षा सुधार पर एक-व्यक्ति अध्ययन का विकास प्रारम्भ किया। यह कार्य प्रोफेसर एच० एस० श्रीवास्तव, अध्यक्ष, परीक्षा सुधार एकक को सौंपा गया था। यह पुस्तक अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा ब्यूरो, जेनेवा द्वारा अंग्रेजी, फ्रैंच और स्पैनिश भाषा में प्रकाशित की जा रही है।

2.13 राष्ट्रीय प्रतिभा खोज एकक

एकक देश में प्रतिभा का पता लगाने और उसको प्रशिक्षित करने के लिए बनाई गई राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना की देखभाल करता है। 1976 तक यह योजना राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना के नाम से जानी जाती थी जिसके अन्तर्गत देश में 400 से अधिक केन्द्रों में आयोजित एक परीक्षा और उक्त परीक्षा में उनके निष्पादन के अनुसार चुने हुए उम्मीदवारों को तत्पश्चात् साक्षात्कार के आधार पर 350 छात्रवृत्तियाँ दी गई थीं। मध्यवर्ती वर्षों में दी जाती रहने के लिए विशिष्ट नियमों के अनुसार ये छात्र-वृत्तियाँ बी० एस० सी०, एम० एस० सी० और पी० एच० डी० स्तरों पर प्रतिपाद्य थीं। दस और छात्रवृत्तियाँ केवल गणित में अध्ययन के लिए ही दी गई थीं।

रा० शै० अ० और प्र० प० की कार्यकारिणी समिति ने समीक्षा समिति की सिफारिशों पर विचार किया और कुछ संशोधनों के साथ उनको दिसम्बर, 1976 में स्वीकार कर लिया। इन सिफारिशों के अनुसार, 1977 परीक्षा के लिए दो परीक्षाएँ ली जाएँगी : नई योजना के अन्तर्गत एक परीक्षा नई पद्धति के अन्तर्गत कक्षा 10 की समाप्ति पर होगी जिसका नाम राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना होगा। दूसरी परीक्षा सदा की भाँति राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना के अन्तर्गत होगी। पहले मामले में छात्रवृत्तियों की संख्या 350 और दूसरे में 100 होगी। 1977-परीक्षा, सिफारशों के अनुसार ही, मई मास में होगी। नई परीक्षा की मुख्य विशेषता यह होगी कि पुरस्कृत व्यक्ति मूल विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, इन्जीनियरी और चिकित्सा जैसे किसी भी पाठ्यक्रम में आगे अध्ययन जारी रखने में स्वतन्त्र होंगे जबकि राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना के अन्तर्गत उन पर मात्र मूल-विज्ञान ही अध्ययन करने का बन्धन है।

एकक ने 1976 में पुरस्कृत व्यक्तियों के नियमित अनुवर्ती कार्यक्रम को भी किया। स्नातक पूर्व स्तर पर पुरस्कृत व्यक्तियों को देश में उच्चतर अवबोधन के विभिन्न केन्द्रों में 12 ग्रीष्म-स्कूलों में रखा गया। स्नातकोत्तर पुरस्कृत व्यक्तियों को सदा की भाँति लब्ध-प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं और अनुसंधान परियोजनाओं के कार्यान्वयन हेतु अग्रिम अध्ययन केन्द्र पर भेजा गया था।

पहले ली गई परीक्षा के आधार पर 1976-77 वर्ष में दी गई छात्रवृत्तियों का पूरा विवरण नीचे सारणी में दिया गया है।

सारणी III

वर्ष 1976 में राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना के अन्तर्गत पुरस्कार के लिए चुने गए छात्रों का ब्यौरा

क्रम-संख्या	राज्य/प्रदेश का नाम	परीक्षा में बैठे उम्मीदवारों की संख्या	साक्षात्कार के लिए बुलाए गए	चुने गए उम्मीदवारों की संख्या	
				मूल विज्ञान	गणित
		1976	1976	1976	1976
	राज्य				
1.	आन्ध्र प्रदेश	869	62	14	—
2.	असम	73	10	6	—
3.	बिहार	287	31	14	—
4.	गुजरात	140	14	3	—
5.	हरियाणा	75	8	—	—
6.	हिमाचल प्रदेश	42	2	—	—
7.	जम्मू और कश्मीर	78	2	—	—
8.	कर्नाटक	360	55	5	—
9.	केरल	319	83	21	—

क्रम-संख्या	राज्य/प्रदेश का नाम	परीक्षा में बैठे उम्मीदवारों की संख्या	साक्षात्कार के लिए बुलाए गए	चुने गए उम्मीदवारों की संख्या	
				मूल विज्ञान	गणित
		1976	1976	1976	1976
10.	मध्य प्रदेश	831	30	9	—
11.	महाराष्ट्र	374	73	25	3
12.	मणिपुर	6	2	1	—
13.	मेघालय	4	1	—	—
14.	नागालैंड	—	—	—	—
15.	उड़ीसा	130	20	11	—
16.	पंजाब	200	4	1	—
17.	राजस्थान	891	82	29	—
18.	सिक्किम	—	—	—	—
19.	तमिलनाडु	775	69	17	—
20.	त्रिपुरा	10	—	—	—
21.	उत्तर प्रदेश	1566	65	19	—
22.	पश्चिमी बंगाल	712	134	67	2
	संघ क्षेत्र				
1.	अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह	9	—	—	—
2.	अरुणाचल प्रदेश	—	—	—	—

क्रम-संख्या	राज्य/प्रदेश का नाम	परीक्षा में बैठे उम्मीदवारों की संख्या	साक्षात्कार के लिए बुलाए गए	चुने गए उम्मीदवारों की संख्या	
				मूल विज्ञान	गणित
		1976	1976	1976	1976
3.	चंडीगढ़	30	5	2	—
4.	दादरा और नगर हवेली	—	—	—	—
5.	दिल्ली	901	262	99	1
6.	गोआ, दमन और दीव	5	2	—	—
7.	लक्षद्वीप	3	—	—	—
8.	पांडिचेरी	108	6	1	—
9.	मिजोरम	—	—	—	—
	जोड़	**8798**	**1022**	**347**	**6**

2.14 सर्वेक्षण और आधार-सामग्री प्रक्रियन एकक

एकक के 1976-77 की अवधि के मुख्य कार्यक्रम निम्नलिखित थे :

(अ) तृतीय अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण

शिक्षा और समाज कल्याण मन्त्रालय, नई दिल्ली ने 1973 में इच्छा प्रगट की थी कि रा० शै० अ० और प्र० प० तृतीय अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण आयोजित करे। सर्वेक्षण का वास्तविक कार्य नवम्बर, 1973 के तीसरे सप्ताह में शुरू हुआ। जबकि पहले के दो सर्वेक्षणों में बहुत कम मदों पर अति सीमित उद्देश्यों तक ही कार्य हुआ था, वर्तमान सर्वेक्षण प्रकृति में बहुत ही विशद था और इसमें सन्निहित अन्तर्वस्तु बहुत व्यापक थी।

समीक्षाधीन अवधि में प्राप्त राज्य सारणियों से कई राज्य/राष्ट्रीय सारणियों का संकलन किया गया था। पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर

अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थाओं, शारीरिक शिक्षा, शारीरिक रूप से विकलांगों की संस्थाओं, पूर्व प्रारम्भिक स्कूलों और शिक्षण संस्थाओं की सूचियों के बारे में तथा हिंदी बोलने वाले राज्यों के आश्रम स्कूल के बारे में सभी आधार-सामग्री का विश्लेषण एकक में किया गया था और विभिन्न पक्षों पर रिपोर्ट तैयार की गई थी।

(आ) अपव्यय और गतिहीनता

एकक ने शिक्षा और समाज कल्याण मन्त्रालय के अनुरोध पर, प्राथमिकता के आधार पर, अपव्यय और गतिहीनता पर एक अध्ययन आयोजित किया।

(इ) दिल्ली संघ क्षेत्र में व्यावसायीकृत उच्चतर माध्यमिक शिक्षा हेतु बीज-शक्ति

दिल्ली संघ क्षेत्र ने 10+2 पद्धति का अनुसरण कर लिया है, और कक्षा 10 के छात्रों के प्रथम समूह ने मार्च, 1977 में अपनी परीक्षा देनी थी। दिल्ली प्रशासन को +2 स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रम का प्रावधान करना था। किन्तु इस सम्बन्ध में उनके पास कोई सूचना नहीं थी कि कक्षा 10 के बाद इस पाठ्यक्रम को चुनने वाले विद्यार्थियों की संख्या का अनुपात क्या था। अतः दिल्ली प्रशासन ने रा० शै० अ० और प्र० प० से अनुरोध किया कि व्यावसायिक पाठ्यक्रम को चुनने वाले छात्रों के अनुपात का नमूना सर्वेक्षण करलें। यह सर्वेक्षण सितम्बर, 1976 के मध्य प्रारम्भ किया गया था और नवम्बर, 1976 के मध्य पूरा हुआ था।

(ई) आधार-सामग्री का प्रक्रियन

एकक के सामने तृतीय अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण से सम्बन्धित आधार-सामग्री के प्रक्रियन का बड़ा काम उपस्थित था। राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना का काम भी, जो वार्षिक विशेषता है, किया गया था। इसी के साथ, एकक ने रा० शै० अ० और प्र० प० के विभागों द्वारा आयोजित विभिन्न अनुसन्धान परियोजनाओं से सम्बन्धित आधार-सामग्री के प्रक्रियन के साथ-साथ रा० शै० अ० और प्र० प० के कर्मचारीवर्ग के सदस्यों और रिसर्च फैलो के पी० एच० डी० कार्य की आधार-सामग्री का प्रक्रियन भी किया था।

2.15 नीति, नियोजन और मूल्यांकन एकक

1976-77 अवधि में नीति-नियोजन और मूल्यांकन एकक ने राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और संगोष्ठियों के लिए अवस्थिति पत्रों की तैयारी और भारत में तथा बाहर शैक्षिक विकासों के अध्ययन को जारी रखा। अतिरिक्त उत्तरदायित्वों सहित अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा एकक को 9 फरवरी, 1977 से नीति, नियोजन और मूल्यांकन एकक में विलीन कर दिया गया था।

अन्तर्राष्ट्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के अन्तर्गत एकक ने 28 अफगान अध्यापिकाओं के लिए एक सात-सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। एकक ने विदेशी विशेषज्ञों के परिषद् भ्रमण की व्यवस्था भी की, जिनका ब्यौरा परिशिष्ट

में दिया गया है । एकक ने अकरा, घाना में 1977 में आयोजित 7वें कामन-वैल्थ सम्मेलन के लिए एक कन्ट्रीपेपर तैयार किया । परिषद् द्वारा सामाजिक, आर्थिक विकास के विभिन्न स्तरों पर भारत में और 6 अन्य देशों में पाठ्यचर्या भाग का एक तुलनात्मक अध्ययन तैयार किया गया था ।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान भाषण माला के अन्तर्गत निम्नलिखित भाषणों की व्यवस्था की गयी थी :

(1) प्रो० बी० डी० नाग चौधरी, : आचार-विज्ञान और शिक्षा
(2) प्रो० एस० सी० दुबे : मनुष्य, समाज और शिक्षा : एक वरीय भविष्य से सम्बन्धित कुछ प्रश्न

इन भाषणों का वैकल्पिक शैक्षिक भविष्य से सीधा सम्बन्ध है । विषय के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए एकक ने "वैकल्पिक शैक्षिक भविष्य" पर एक परियोजना शुरू की । एकक ने प्रथम चरण में निम्नलिखित 4 अस्थायी कागज तैयार किए हैं और उनको परिचालित किया है ।

(1) भारत में स्कूल जाने वाली जनसंख्या 1971-2026
(2) भारत में जनसंख्या विकास और शैक्षिक सुविधाएँ
(3) भारतीय शैक्षिक पद्धति : शीर्ष भारी और तल कमजोर
(4) शिक्षा पर संवैधानिक निर्देशों का अनुपालन : प्रगति, समस्याएँ और भावी योजनाएँ ।

2.16 पुस्तकालय और प्रलेखन एकक

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान का काफी बड़ा पुस्तकालय है । इसमें एक लाख से अधिक पुस्तकें और लगभग 5,000 पत्र-पत्रिकाओं के बंधे हुए अंक हैं । पुस्तकालय 260 भारतीय और विदेशी पत्र-पत्रिकाएँ वार्षिक चन्दा देकर प्राप्त करता है । कुछ पत्र-पत्रिकाएँ आदान-प्रदान के आधार पर भी प्राप्त होती हैं ।

1976-77 वर्षावधि में, पुस्तकालय में 2751 पुस्तकों की वृद्धि हुई थी जिनमें से 412 पुस्तकों को खरीदा गया था और 2339 पुस्तकें निःशुल्क प्राप्त हुई थीं ।

2.17 यूनिसेफ सहायता प्रदत्त परियोजनाएँ (प्राथमिक पाठ्यचर्या विकास प्रकोष्ठ सहित)

(अ) विज्ञान शिक्षा परियोजना (परियोजना—1)

यद्यपि विज्ञान शिक्षा परियोजना में यूनिसेफ सहायता की प्रमात्रा प्राथमिक स्कूल का एक बहुत छोटा प्रतिशत ही है तथापि इस परियोजना के उत्प्रेरक प्रभाव का परिणाम विभिन्न राज्यों में अपने ही साधनों से विज्ञान शिक्षा कार्यक्रमों का क्रमिक विकास रहा है । 10 राज्यों और 3 संघ क्षेत्रों ने अपने सभी प्राथमिक स्कूलों में नए परिष्कृत विज्ञान शिक्षा का व्यापक प्रचलन प्रारम्भ कर दिया है । राज्यों से प्राप्त रिपोर्ट से प्रतीत होता है कि विभिन्न राज्यों ने अपने ही साधनों से 63,200

प्राथमिक और 9,000 से अधिक मिडिल स्कूल किटों की व्यवस्था की है। उन्होंने अपने ही साधनों से 2 लाख प्राथमिक अध्यापकों और 1,28,000 मिडिल स्कूल अध्यापकों को प्रशिक्षित भी किया है।

चूंकि सभी प्राथमिक स्कूलों को विज्ञान किटों की आपूर्ति करना एक दुःसाध्य समस्या है, इसलिए प्राइमरी स्कूलों में विज्ञान शिक्षण के लिए स्थानीय साधनों से पर्यावरण और काम-चलाऊ प्रबन्ध का संप्रत्यय विकसित करके विभिन्न योजनाओं पर काम किया जा रहा है। प्राथमिक विज्ञान शिक्षण के लिए स्थानीय साधनों के प्रयोग हेतु सामग्री विकसित करने के लिए एक प्रस्ताविक कार्यशाला पहले ही आयोजित की जा चुकी है।

इस वर्ष कर्मचारी वर्ग की विभिन्न श्रेणियों के प्रशिक्षण और अभिविन्यास पर निम्नलिखित प्रकाशन तैयार कर दिए गए हैं, और विभिन्न प्रशिक्षण व अभिविन्यास कार्यक्रम हेतु मुद्रित कर दिए गए हैं।

(1) प्रणाली विशेषज्ञों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का संगठन
(2) कार्यशाला अनुदेशकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का संगठन
(3) स्कूलों के प्राथमिक निरीक्षकों और विज्ञान पर्यवेक्षकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का संगठन
(4) स्थानीय साधनों के प्रयोग द्वारा विज्ञान शिक्षण
(5) प्राइमरी स्कूलों के लिए आहार, स्वास्थ्य और पर्यावरण शिक्षा पर पाठ्यचर्या दर्शिका

प्राइमरी स्तर के लिए पाठ्य-विवरणों और अनुदेशात्मक सामग्री के विकास हेतु क्षेत्रीय केन्द्रों के विकास के लिए विज्ञान शिक्षा परियोजना का विस्तार, आहार, स्वास्थ्य, शिक्षा और पर्यावरण स्वच्छता के लिए है।

इसको प्राथमिक विज्ञान पाठ्यचर्या में एकीकृत करना है। पाँच क्षेत्रीय केन्द्र कोयम्बातूर, कलकत्ता, बड़ौदा, जबलपुर और लुधियाना में स्थापित किए गए हैं। सभी केन्द्रों ने अध्यापकों के लिए पाठ्यचर्या, निर्देशात्मक सामग्री और प्रशिक्षण सामग्री विकसित की है। उन्होंने 450 संसाधन व्यक्तियों और लगभग 3,300 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया है जो स्वयं भी प्रयोगात्मक स्कूलों के लिए संसाधन व्यक्तियों के रूप में कार्य करेंगे। इन प्रयोगात्मक स्कूलों की संख्या 4 केन्द्रों में 100 से 500 स्कूलों तक और कोयम्बटूर केन्द्रों में 3,000 हैं। इस वर्ष केन्द्रों के निदेशकों और कर्मचारी वर्ग का एक राष्ट्रीय सम्मेलन विचार और सामग्री के आदान-प्रदान के लिए और स्थिति का भावी कार्य के लिए योजना की दृष्टि से अनुमान लगाने के लिए किया गया है। राज्यों को आगामी शैक्षणिक वर्ष में चुने हुए स्कूलों में पूर्व-परीक्षण के लिए प्रयोगात्मक सामग्रियों को इस्तेमाल करना है।

विज्ञान शिक्षा कार्यक्रम का मूल्यांकन पिछले वर्ष प्रारम्भ किया गया था और चालू वर्ष में 5 चुने हुए राज्यों में जारी रहा। हरियाणा में विकसित और पूर्व परी-

क्षित उपकरणों में संशोधन किया गया और मध्य प्रदेश, केरल, पाण्डीचेरी, राजस्थान और मणिपुर की अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषा में अनूदित किया गया था। मूल्यांकन आधार-सामग्री का विश्लेषण चल रहा है।

(आ) प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीकरण परियोजना (परियोजना—2)

इस परियोजना का उद्देश्य शोषित बच्चों की शैक्षिक जरूरतों का समाधान करने वाली नवाचार पाठ्यचर्या का विकास करना है। चुनौती परियोजना के लिए चुने गए समुदायों में रहने वाले बच्चों की जरूरतों पर आधारित उपयुक्त निदेशात्मक सामग्रियों और नीतियों को विकसित करना है। यह परियोजना प्रयोगात्मक आधार पर 3 विभिन्न क्षेत्रों में स्थित 15 राज्यों के 30 प्रयोगात्मक स्कूलों में चालू की जा रही है। ये राज्य हैं : आन्ध्रप्रदेश, असम, बिहार, दिल्ली, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मिजोरम, उड़ीसा, राजस्थान, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने राज्यों में इस कार्य का संचालन करने के लिए एक प्राथमिक पाठ्यचर्या विकास प्रकोष्ठ बना दिया है। राज्य स्तर पर इस परियोजना के कार्यपालन, पर्यवेक्षण के लिए राज्य शिक्षा संस्थान या इसका समानक संगठन उत्तरदायी है।

प्रत्येक प्रतिभागी राज्य ने 3 अध्यापक-प्रशिक्षण स्कूलों को, 30 प्रयोगात्मक स्कूलों के अतिरिक्त छाँट लिया है जो इस परियोजना के अन्तर्गत रहेंगे। उन्होंने पाठ्यचर्या योजना और विवरण का विकास करना शुरू कर दिया है और पाठ्य-पुस्तकों, अध्यापक-दर्शिकाओं, अभ्यास-पुस्तिकाओं आदि अनुदेशात्मक सामग्री तैयार करनी शुरू कर दी है। इसकी योजना इस प्रकार बनायी गयी है कि कक्षा 1 और 2 के लिए सामग्री 1977-78 शैक्षणिक सत्र में प्रयोग हेतु तैयार हो जाएगी। तदनुरूप अध्यापक-प्रशिक्षकों, पर्यवेक्षकों के अभिविन्यास कार्यक्रम और प्रयोगात्मक स्कूलों के अध्यापकों का प्रशिक्षण आगामी गर्मियों में प्रारम्भ किया जाएगा।

(इ) समुदाय शिक्षा में विकासात्मक कार्यकलाप और प्रतिभाग (परियोजना—3)

इस परियोजना में ऊपर उल्लेख किए गए प्रत्येक प्रतिभागी राज्य को समुदाय की शिक्षा और कल्याण में काम करने वाले विभिन्न विभागों और स्वैच्छिक अभिकरणों के सहयोग से विभिन्न लक्ष्य वर्गों हेतु कार्यक्रमों और गतिविधियों को विकसित करने के लिए 2 सामुदायिक शिक्षा केन्द्रों की स्थापना करनी है। प्रत्येक राज्य ने एक समन्वय समिति का गठन कर दिया है। इस परियोजना में प्रथम पद समुदाय की आवश्यकताओं का सर्वेक्षण करना और समुदाय की विभिन्न सामाजिक, आर्थिक अवस्थाओं का पता लगाना है। इस सर्वेक्षण पर आधारित शैक्षिक कार्यकलापों की तैयारी और उनका निष्पादन करना है। राज्य शिक्षा संस्थान को अध्यापकों और सामुदायिक कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करना है और विभिन्न लक्ष्य-वर्गों के लिए अनु-

देशात्मक सामग्री विकसित करना है। समुदाय केन्द्रों ने बिहार, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, असम, मिजोरम और तमिलनाडु में कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है, और शेष प्रतिभागी राज्यों में अति शीघ्र ऐसे ही केन्द्रों की स्थापना किए जाने की आशा है।

2.18 पत्रिका प्रकोष्ठ

परिषद् की पत्रिकाओं के समन्वय और प्रकाशन कार्य की देखभाल करने के लिए पत्रिका प्रकोष्ठ का निर्माण नवम्बर, 1976 में किया गया था। प्रकोष्ठ ने 1976-77 वर्षावधि में निम्नलिखित अंक प्रकाशित किए :

(1) जनरल ऑफ इण्डियन ऐज्यूकेशन—मई, जुलाई, सितम्बर, नवम्बर 1976, जनवरी, मार्च, 1977.

(2) इंडियन ऐज्यूकेशन रिव्यू—अप्रैल, जुलाई, अक्तूबर 1976 और जनवरी, 1977.

(3) प्राइमरी टीचर (अंग्रेजी)—जुलाई, अक्तूबर 1976, और जनवरी, 1977.

(4) प्राइमरी शिक्षक (हिन्दी)—जुलाई, अक्तूबर 1976, और जनवरी, 1977.

(5) स्कूल साइन्स—जुलाई 1976, अक्तूबर 1976, और जनवरी, 1977.

3

शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र

मई 1973 में स्थापित यह केन्द्र 5 मुख्य क्षत्रों में कार्य करता रहा है जो निम्नलिखित है :

(1) शिक्षा की नयी और प्रभावी पद्धतियों का अध्ययन

(2) (अ) सौफ्ट-वेयर (ब) हार्ड-वेयर में अनुसन्धान और विकास कार्य

(3) शैक्षिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्षमताओं और सामर्थ्य हेतु प्रशिक्षण

(4) कार्यक्रमों, सामग्रियों और अवबोधन पद्धतियों का मूल्यांकन

(5) सूचना का संग्रह और प्रसार तथा सोफ्ट-वेयर और हार्ड-वेयर हेतु बैंकों का विकास तथा विस्तार कार्य ।

केन्द्र ने 1976-77 वर्ष की अवधि में अनेक कार्यक्रमों का किया जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं :

(अ) संघटक स्तर पर शुरू किए गए कार्यक्रम

(1) विज्ञान में प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के सेवा-कालीन प्रशिक्षण हेतु बहुमाध्यम पैकेज

(क) पैकेज का परिमार्जन

विज्ञान में प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण हेतु केन्द्र द्वारा तैयार किए गए बहु-माध्यम पैकेज को अक्तूबर 1975 में इसकी प्रथम संक्रिया पुनर्-निवेषण के आधार पर परिमार्जित किया गया है । इसमें स्वत: अध्ययन सामग्री का वैधीकरण, सभी विषयों पर गैर ब्यौरेवार गतिविधियों का वैधीकरण और विकास तथा रेडियो व दूरदर्शन कार्यक्रमों में से कुछ का संशोधन सम्मिलित था ।

राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठों के सहभाग में इस केन्द्र ने साइट राज्यों में अनेक अभिविन्यास व निदर्शन शिविरों का आयोजन किया जिनमें संसाधन व्यक्तियों और अध्यापक-प्रबोधकों को परिमार्जित बहु-माध्यम पैकेजों के उपयोग में अनुस्थापित किया गया था ।

साइट कार्यक्रम को वापस ले लेने से पूर्व यह परिमार्जित पैकेज दूसरी बार जुलाई 1976 में 15 दिन के लिए प्रस्तुत किया गया था । 22 हजार से अधिक प्राथमिक स्कूल अध्यापकों को एक साथ 6 साइट राज्यों में विज्ञान में अन्तर्वस्तु और प्रणाली विज्ञान में अनुस्थापित किया गया था ।

(ख) बहु-माध्यम पैकेज का विस्तार

साइट में बहु-माध्यम पैकेज़ के माध्यम से विज्ञान में प्राथमिक अध्यापकों के तीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सफलता से प्रोत्साहित होकर गैर साइट क्षेत्रों में निवेश को उपलब्ध करने और पैकेज का विस्तार करने के लिए आगे कार्य प्रारम्भ किया गया था। इस दिशा में पैकेज के 4 फिल्मों के अंग्रेजी रूपान्तर मार्च 1977 तक तैयार कर दिए गए थे। शेष फिल्मों को भी अंग्रेजी में रूपान्तरित किया जा रहा है। क्रिया पुस्तकों और अध्ययन सामग्रियों का भी अंग्रेजी में अनुवाद कर दिया गया है। साइट प्रयोग में प्रकाशित 3 अध्यापक-प्रबोधकों हेतु गुटकों के संशोधन और सम्पादन से सम्बन्धित कार्य भी चल रहा है। निकट भविष्य में ही एक अध्यापकीय-प्रबोधक गुटका भी प्रकाशित किया जाना प्रस्तावित है। पैकेज के 12 फिल्मों के एक सूचक पुटक (फोल्डर) के प्रकाशन पर भी कार्य प्रारम्भ किया गया है।

उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, चण्डीगढ़, जम्मू और कश्मीर, दिल्ली, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और केरल के अध्यापक-प्रशिक्षकों को बहु-माध्यम पैकेज से भली-भाँति परिचित कराने और उनको अनुस्थापित करने के लिए कार्यशाला की एक श्रृंखला इलाहाबाद, चण्डीगढ़ और पुणे में आयोजित की गयी थी। प्रत्येक कार्यशाला 4 दिन के लिए थी। बहु-माध्यम पैकेज का उपयोग करते हुए 2 प्रशिक्षण कार्यक्रम उत्तर प्रदेश में और मध्य प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों में आयोजित किया गया था। प्रत्येक कार्यक्रम 15 दिन का था।

उत्तर प्रदेश, गुजरात और मध्य प्रदेश की सरकारों ने केन्द्र की सहायता से विज्ञान में अपने अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए बहु-माध्यम पैकेज को अंगीकार करने/इसका अनुकूलन करने और उपयोगी बनाने की दिशा में कार्रवाई की।

(ग) बहु-माध्यम पैकेज का मूल्यांक

अध्यापकों के सेवा-कालीन प्रशिक्षण पर बहु-माध्यम पैकेज़ के समाघात का मूल्यांकन अक्तूबर 1975 में इसके प्रथम क्रम और जुलाई 1976 में इसके द्वितीय क्रम में ही किया गया था। पैकेज की अन्त:शक्ति का निर्धारण 1976 में एक प्रयोगात्मक अध्ययन में किया गया था। इन सभी अध्ययनों के परिणामों से विज्ञान की अन्तर्वस्तु में प्रणाली विज्ञान में अध्यापकों को पर्याप्त ज्ञान लाभ परिलक्षित हुए। विज्ञान में प्रयोग करने की उनकी अभिवृत्तियों में भी अभीष्ट दिशा में परिवर्तन हुआ।

(2) शैक्षिक प्रौद्योगिकी पर संगोष्ठी

शैक्षिक प्रौद्योगिकी पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी मैसूर में जून, 1976 में आयोजित की गई थी। शैक्षिक प्रौद्योगिकी में प्रमुख कार्यों और नीतियों का उल्लेख करती हुई एक रिपोर्ट प्रकाशित कर दी गयी है।

(3) पत्राचार व सम्पर्क कार्यक्रम

पत्राचार पाठों के सुधार, स्वतः शिक्षण सामग्रियों के लेखन, माध्यम निवेशों और सम्पर्क कार्यक्रमों के गठन से सम्बन्धित मामलों पर विचार करने के लिए

पत्राचार व सम्पर्क कार्यक्रम पर एक 4-दिवसीय कार्यक्रम मैसूर में फरवरी 1977 में आयोजित किया गया था। इसमें राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय से 2 प्रधानाचार्य और 22 विषय संयोजक व पाठ लेखकों ने भाग लिया।

प्राइमरी स्कूल पाठ्य-विवरण के विज्ञान के कठिन संप्रत्यय पर कार्य क्रमित अवबोधन सामग्रियों का एक पैकेज विकसित किया जा चुका है और दिल्ली के प्राइमरी स्कूल अध्यापकों पर इसका परीक्षण किया जा चुका है। उदयपुर में अध्यापक-प्रशिक्षण स्कूल में भी इसकी एक अन्य पूर्व-परीक्षा की जाएगी।

(4) शिक्षा की वैकल्पिक अवबोधन पद्धतियों का व्यवहार्यता अध्ययन

देहाती क्षेत्रों में प्राथमिक स्तर पर शिक्षा की वैकल्पिक और प्रभावी पद्धतियों का विकास करने के लिए 1974-75 में सामाजिक कल्याण और अनुसंधान केन्द्र, तिलोनिया, राजस्थान को सौंपे गये व्यवहार्यता अध्ययन का प्रथम चरण इसने पूरा कर दिया।

निदेशक द्वारा इस परियोजना का निर्धारण करने के लिए नियुक्त समिति ने इस परियोजना को एक और वर्ष तक चलाने की सिफारिश की है।

(5) स्कूलों के लिए शैक्षिक प्रसारण

जिला शैक्षिक परियोजना के अन्तर्गत आया जलगाँव (महाराष्ट्र) में प्राथमिक स्कूल प्रसारण पर अध्ययन पूरा कर लिया गया है। अध्ययन में स्कूलों में रेडियो कार्यक्रमों के अधिक स्वीकरण हेतु अवसंरचना और सक्रिय अध्यापकों के प्रतिभाग की जरूरत की ओर इंगित किया है।

(6) आधार-सामग्री बैंक और सोफ्ट-वेयर बैंक

केन्द्र में शैक्षिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काम कर रहे व्यक्तियों की एक निर्देशिका की तैयारी में कार्य प्रारम्भ कर दिया।

श्रव्य-दृश्य उत्पादन उपकरण के सर्वेक्षण से उपलब्ध जानकारी के आधार पर एक संस्थागत सूचीपत्र तैयार किया गया जिसमें क्लोज सर्किट टेलीविजन और विडियो टेपरिकार्डरों, फिल्म, स्लाइड, फिल्मस्ट्रिप और पारदर्शिता बनाने वाले उपकरण तथा अन्य उपकरणों की प्राप्यता दर्शित की गयी है।

केन्द्र ने खिलौनों, फिल्मों, प्रसारण सामग्रियों आदि के लिए एक केन्द्रक सोफ्ट-वेयर बैंक विकसित किया है। 4 क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षु कविताएँ कार्यक्रम के एक अंश के रूप में संग्रहीत की गयी हैं।

(आ) विशेष परियोजनाएँ

एरिक द्वारा वित्त सहायता प्रदत्त आडियोटेप परियोजना के अन्तर्गत इस केन्द्र ने आकाशवाणी में उपलब्ध अभि-लेखीय रिकार्डिंगों से स्कूली बच्चों के लिए शैक्षिक रुचि के 42 कार्यक्रम तैयार किए।

(इ) मंत्रालय के सहभाग से शुरू किए गए कार्यक्रम

शैक्षिक प्रौद्योगिकी में अभिविन्यास

जहाँ कहीं शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठों की स्थापना की जा चुकी है, उन 10 राज्यों में शैक्षिक प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित अधिकारियों के अभिविन्यास के लिए फरवरी 1977 में एक दो-सप्ताह की संगोष्ठी व कार्यशाला आयोजित की गयी थी।

(ई) अन्य संगठनों के सहभाग में शुरू किए गए कार्यक्रम

प्राथमिक स्कूली बच्चों पर साइट के समाघात के बारे में इसरो के सहभाग में एक अध्ययन किया गया था। निष्कर्षों का सारांश स्पेस एप्लीकेशन सेंटर, अहमदाबाद को भेजा जा चुका है।

जिन स्थानों पर दूरदर्शन ने शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया है अथवा प्रारम्भ करने वाला है उन क्षेत्रों में प्रशिक्षित शैक्षिक दूरदर्शन कथा लेखकों का एक पूल बनाने के योजनाबद्ध कार्यक्रम के रूप में, आशावान् शैक्षिक दूरदर्शन लेखकों के अभिविन्यास और चुनाव के लिए फरवरी 1977 में कलकत्ता में 15 दिन की एक अभिविन्यास व चयन शाला आयोजित की गयी थी।

(ऊ) विदेशी सहभाग से प्रारम्भ किए गए कार्यक्रम

(1) यू० एन० डी० पी० कार्यक्रम आई० एन० डी० 612 के अन्तर्गत नवम्बर 1976 से केन्द्र को श्री एल० गुडमैन की सेवाएँ चीफ टैक्नीकल एडवाइजर के रूप में प्राप्त रही हैं।

(2) क्लोज सर्किट टेलीविजन के लिए पोर्टा पैक, इलैक्ट्रोनिक कैमरे, स्वीचर व अन्य उप-साधनों सहित पर्याप्त उपकरण यूनेस्को से टी० वी० और आडियो-स्टूडियोज की स्थापना हेतु प्राप्त किये जा चुके हैं।

(3) प्रो० (श्रीमती) एस० शुक्ला इस अवधि में ओपन यूनिवर्सिटी, मिल्टन, कैन्स (यूनाइटेड किंगडम) में शैक्षिक टेलीविजन और रेडियो में मूल्यांकन और अनुसंधान पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में उपस्थित रही हैं।

(4) केन्द्र ने यूनेस्को व राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान संस्थान, जापान द्वारा क्रमशः प्रवर्तित इण्टर प्रोजेक्ट कन्ट्री स्टडी विजिट्स और एडवान्सड लैवल वर्कशाप, जापान में भाग लिया। इसका उद्देश्य एशियाई प्रशान्त क्षेत्र में विभिन्न देशों में शैक्षिक प्रौद्योगिकी के स्तर की प्रयोगात्मक स्थिति का अध्ययन और क्षेत्र में नवाचार अभ्यासों पर विचारों और अनुभवों का आदान-प्रदान करना था।

(5) शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र के कर्मचारी वर्ग के 2 सदस्य यू० एन० डी० पी० कार्यक्रम आई० एन० डी० 612 के अन्तर्गत मलेशिया और यूनाइटेड किंगडम में क्रमशः औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा हेतु ओडियन्स रिसर्च और टी० वी० उत्पादन में अल्पकालिक प्रशिक्षण के लिए भेजे गए थे।

(6) जापान अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग अभिकरण द्वारा प्रवर्तित एक कार्यक्रम में केन्द्र के एक प्रवक्ता ने टोक्यो प्रौद्योगिकी संस्थान, जापान में शैक्षिक प्रौद्योगिकी में 6 सप्ताह का एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पूरा किया।

4

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय

चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों की स्थापना स्कूल अध्यापकों में गुणात्मक सुधार के प्रयोजन से की गयी थी। ये चार महाविद्यालय अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित हैं। ये अपने-अपने क्षेत्रों में अध्यापक शिक्षा की देखभाल के लिए उत्तरदायी हैं। प्रत्येक क्षेत्रीय महाविद्यालय के साथ एक डेमोन्स्ट्रेशन स्कूल सम्बद्ध है। ये डेमोन्स्ट्रेशन स्कूल केन्द्रीय विद्यालयों जैसे ही पाठ्यक्रम प्रस्तुत करते हैं और केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के साथ सम्बद्ध हैं। ये स्कूल क्षेत्रीय महाविद्यालयों को शिक्षण में प्रयोग और नये अभ्यास करने की सुविधा देते हैं। ये संस्थाएँ वास्तव में क्षेत्रीय महाविद्यालय के लिए शैक्षिक प्रयोगशालाएँ हैं। क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय सेवा-कालीन और सेवा-पूर्व दोनों ही प्रशिक्षण कार्यक्रमों का गठन करते हैं। इन महाविद्यालयों की पाठ्यचर्या की योजना में अनेक परिवर्तन हुए हैं। ये परिवर्तन नीचे दी गयी रिपोर्ट में प्रतिबिम्बित हैं।

4.1 क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर, समीक्षाधीन वर्ष में शिक्षा के क्षेत्र में आगे प्रगति करता रहा। निम्नलिखित अध्ययनों के पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिए गए :

चार-वर्षीय विज्ञान पाठ्यक्रम

1. एक वर्ष बी० एस० सी० (आनर्स/पास) बी० एड०	53
2. तृतीय वर्ष बी० एस० सी० (आनर्स/पास) बी० एड०	47
3. अन्तिम वर्ष बी० एस० सी० (आनर्स/पास) बी० एड०	24

एक-वर्षीय बी० एड० पाठ्यक्रम

1. एक-वर्षीय बी० एड० विज्ञान	84
2. एक-वर्षीय बी० एड० वाणिज्य	31
3. एक-वर्षीय बी० एड० कृषि	8
4. एक-वर्षीय बी० एड० हिन्दी	42
5. एक-वर्षिय बी० एड० अंग्रेजी	33
6. एक-वर्षीय बी० एड० उर्दू	21
7. एम० एड० (विज्ञान शिक्षा)	11

महाविद्यालय एक ग्रीष्म स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम भी चलाता है जिसमें 37 महिलाएँ और 175 पुरुष अध्यापकों को प्रवेश दिया गया था।

यह पाठ्यक्रम दो स्तरों पर चलाया जाता है एक माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए और दूसरा प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के लिए। यह पाठ्यक्रम अब चल रहा है। महाविद्यालय के विस्तार सेवा विभाग ने 10+2 योजना के प्रचार-प्रसार में और अनुपालन में सहायता दी।

महाविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान विभाग को कार्यानुभव, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना और राजस्थान (गंगानगर जिला) के व्यावसायिक सर्वेक्षण के क्षेत्र में सहायता दी। अनौपचारिक शिक्षा का एक सम्मेलन भी आयोजित किया गया था। महाविद्यालय निम्नलिखित प्रकाशन करता है :

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय न्यूज़ लैटर
शिक्षा में उपनीतियाँ

4.2 क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय भोपाल की स्थापना 1964 में हुई थी और यह तब से पश्चिमी क्षेत्र में शिक्षा के सभी राज्य विभागों के सहभाग में काम कर रहा है। यह महाविद्यालय भोपाल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है। वर्तमान समय में इसके कार्य-कलापों का केन्द्र 10+2 योजना का अनुपालन रहा है।

महाविद्यालय के विभिन्न विभाग सेवा-कालीन गतिविधियों, अनुसन्धानों, सामग्री के उत्पादन में और विस्तार कार्यक्रम में व्यक्त रहे हैं।

वैज्ञानिक विभाग ने नए कार्यक्रमों की योजना बनायी है, जो शिक्षा में एम० एस० सी० तक जाती है। भाषा विभाग भाषा प्रयोगशाला और जन-जाति क्षेत्रों के लिए कार्यक्रमों की सामग्री तैयार करने में व्यस्त रहा है। शिक्षा विभाग ने माइक्रो-शिक्षण, मार्ग-दर्शन और निदर्शन के क्षेत्र में कार्य किया है। श्रव्य-दृश्य विभाग प्रभावकारी रूप से सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय संग्रहालय द्वारा दिए गए विषय-किटों को इस्तेमाल कर रहा है।

पत्राचार शिक्षा का एक नया विभाग शिक्षा की नयी पद्धति के अन्तर्गत शिक्षण कार्य करने के लिए अध्यापकों को पूरी तरह तैयार कर देने हेतु पत्राचार शिक्षा चलाने के लिए बनाया गया है। विभाग ने पश्चिमी क्षेत्र के माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए पत्राचार व सम्पर्क कार्यक्रमों का आयोजन प्रारम्भ कर दिया। पत्राचार पाठ (1) भौतिक विज्ञान (2) जैव विज्ञान (3) गणित (4) सामाजिक विज्ञान-I (इतिहास और नागरिक शास्त्र) (5) सामाजिक विज्ञान-II (भूगोल और अर्थशास्त्र) (6) अंग्रेजी (7) हिन्दी (8) कला और संस्कृति के क्षेत्रों में तैयार किए गए। मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और गोवा के 3382 अध्यापक उक्त विधा में पत्राचार शिक्षा तैयार कर रहे हैं। राज्य सरकारों ने इस कार्यक्रम के लिए निश्चित अवधि में अध्यापकों को प्रतिनियुक्त करने में बहुत शीघ्र कार्यवाई की है और

इस कार्यक्रम की सफलता के लिए पूरा सहयोग दिया है। विषयानुसार और राज्यों के अनुसार पंजीयन निम्नलिखित सारणी में सविस्तार दिखाया गया है :

सारणी IV

पत्राचार व सम्पर्क पाठ्यक्रम हेतु पंजीयत अध्यापक-प्रशिक्षार्थियों की संख्या दर्शाने वाला ब्यौरा

राज्य का नाम	भौतिक विज्ञान	जैव विज्ञान	गणित	सामाजिक विज्ञान I	सामाजिक विज्ञान II	अंग्रेजी	हिन्दी	कला और संस्कृति	जोड़
मध्य प्रदेश	189	186	177	183	179	190	8	10	1122
महाराष्ट्र	198	160	215	127	114	253	73	—	1140
गुजरात	158	—	234	180	—	274	160	69	1075
गोवा	47	15	34	26	26	55	50	3	256
कुल	592	361	660	516	319	772	291	82	3593

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राथमिक अध्यापक-प्रशिक्षकों का पंजीयन चल रहा है और 300 अध्यापक-प्रशिक्षक इस कार्यक्रम के लिए पंजीकृत किए गए हैं। अभी तक तीन सम्पर्क सत्र आयोजित किए गए हैं।

यह महाविद्यालय विज्ञान, भाषा, कृषि, कला, वाणिज्य, कार्य-अनुभव और बी० एड० (ग्रीष्म स्कूल व पत्राचार पाठ्यक्रम) एवं चार-वर्षीय बी० एस० सी०, बी० एस० सी०(आनर्स), बी० एड० और बी० ए० (आनर्स) बी० एड० पाठ्यक्रम चलाता रहा है। इस वर्ष उपरोक्त पाठ्यक्रमों के प्रथम और द्वितीय वर्षों में प्रवेश बन्द कर दिए गए हैं। कार्य-अनुभव को अनिवार्य बना दिया गया है। एम० एड० प्राथमिक शिक्षा और बी० एड० (अति शैशव) शिक्षा में विकसित दो नए पाठ्यक्रम हैं और एम० एस० सी० (एड) अगले वर्ष प्रारम्भ किए जाने वाली योजना के अन्तर्गत तीसरा पाठ्यक्रम है, जिसमें स्कूली उच्च शिक्षा अनुसंधान एवं भोपाल विश्वविद्यालय से अनुमति ले ली गयी है।

समीक्षाधीन वर्ष में विस्तार और सेवा-कालीन कार्य तेज कर दिया गया है। 10+2 पद्धति के विशेष सन्दर्भ में विभिन्न विषय क्षेत्र में आठ सेवाकालीन कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। कार्मिकों के लिए विशेष पाठ्यक्रम आयोजित करने के राज्य सरकारों के अनुरोधों को स्कूल कार्यकलापों पर प्रभाव के अनुगामी प्रमाणों सहित उनको सन्तोष पहुँचाने वाली अवस्था तक पूर्ण कर दिया गया है। इस वर्ष आयोजित सेवा-कालीन कार्यक्रमों में से कुछ निम्नलिखित हैं :

(1) क्षेत्र के समन्वय कर्ताओं की एक बैठक क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय भोपाल में 14 और 15 जून 1976 को हुई थी।

(2) भोपाल में एक अन्तर-वस्तु पाठ्यक्रम पणजी में 8 से 18 अक्टूबर 1976 तक हुआ था।

(3) जीव-विज्ञान में एक अन्तर-वस्तु पाठ्यक्रम पणजी में 11 से 20 अक्टूबर 1976 तक हुआ था।

(4) गोवा राज्य के शैक्षिक अध्यापकों का एक सम्मेलन पणजी में 11 से 20 अक्टूबर 1976 तक हुआ था।

(5) गणित अध्यापकों का एक सम्मेलन इस महाविद्यालय में 5 से 8 नवम्बर 1976 तक हुआ था।

(6) 10+2 (प्राथमिक शिक्षा) पर एक सम्मेलन इस महाविद्यालय में 24 से 27 नवम्बर 1976 तक हुआ था।

(7) भौतिकी में स्नातक-पूर्व स्तर तक एक सम्मेलन इस महाविद्यालय में दिनांक 21 से 26 मार्च 1977 तक हुआ था।

(8) पर्यावरण विज्ञान पर एक कार्यशाला महाविद्यालय में दिनांक 21 से 26 मार्च 1977 तक आयोजित की गयी थी।

वर्ष के अन्तर्गत अन्तर्वास कार्यक्रम पूरी तरह सफल रहा है जिसमें सहयोगी स्कूलों के अध्यापक पर्याप्त संख्या में अभिविन्यास कार्यक्रम में भाग लेते रहे हैं, और मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात के विभिन्न स्कूलों में विद्यार्थी शिक्षण आयोजित किया गया है। इसमें विद्यार्थी अध्यापकों को अपने कार्य के सभी क्षेत्र में अनुभव प्राप्त हुआ है।

4.3 क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा देश के पूर्वी भाग में माध्यमिक शिक्षा में सुधार लाने के लिए व्यापक कार्यक्रम के भाग के रूप में तृतीय पंचवर्षीय योजना में क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर की स्थापना हुई थी। यह पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा, असम, नागालैण्ड, मणिपुर, त्रिपुरा, अण्डमान और निकोबार द्वीप, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, मिजोरम और मेघालय के राज्यों की आवश्यकता की पूर्ति करता है।

यह महाविद्यालय उत्कल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है, और इसका प्रबन्ध राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की शासी-निकाय द्वारा किया गया है। शासी-निकाय द्वारा निर्मित एक प्रबन्ध समिति को प्रशासन की ऐसी शक्तियाँ प्राप्त हैं जो समय-समय पर शासी-निकाय द्वारा उसे दे दी जाती हैं। उपकुलपति, उत्कल विश्वविद्यालय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष हैं और महाविद्यालय के शासन-अधिकारी सदस्य सचिव के रूप में कार्य करते हैं।

(अ) विस्तार कार्यक्रम

इस महाविद्यालय द्वारा पूर्वी क्षेत्र में विभिन्न राज्यों के प्रमुख व्यक्तियों के लिए अनेक अभिविन्यास संगोष्ठियाँ/पाठ्यक्रम आयोजित किए गए थे। कार्यक्रमों

का उद्देश्य राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा तैयार की गई दस-वर्षीय स्कूल पाठ्यचर्या में प्रधान व्यक्तियों को अनुस्थापित करना था जिससे कि वे भी अपने-अपने राज्य स्कूलों में नयी पाठ्यचर्या के प्रभावकारी अनुपालन के लिए योजना बना सकें। निम्नलिखित कार्यक्रम इस वर्ष आयोजित किए गए :

1. बिहार के प्रमुख व्यक्तियों के लिए दिनांक 5-4-1976 से 7-4-1976 तक पटना में एक अभिविन्यास संगोष्ठी आयोजित की गई थी जिसमें 31 प्रतिभागियों ने भाग लिया था।
2. दस-वर्षीय स्कूली पाठ्यचर्या के अन्तर्गत भौतिक विज्ञानों और जीव-विज्ञानों के शिक्षण पर माध्यमिक शिक्षा मण्डल, उड़ीसा के सहभाग में इस महाविद्यालय में 2 संगोष्ठियाँ 15-6-1976 से 30-6-1976 तक सोलह दिन की अवधि में आयोजित की गई थी जिनमें उड़ीसा के 54 और 46 महाविद्यालय अध्यापकों ने भाग लिया था। इन संगोष्ठियों का उद्देश्य नयी पाठ्यचर्या में परिकल्पित स्कूल स्तर पर विज्ञान की विषय वस्तु में और प्रणाली विज्ञान में प्रतिनिधियों को अनुस्थापित करना था जिससे कि वे अपने-अपने राज्यों के स्कूल अध्यापकों को स्वयं अनुस्थापित कर सकें।
3. दस-वर्षीय स्कूल पाठ्यचर्या के विशेष सन्दर्भ में कार्यानुभव पर एक कार्यशाला का आयोजन इस महाविद्यालय द्वारा कोहिमा (नागालैण्ड) में 20-9-1976 से 25-9-1976 तक 6 दिन के लिए किया गया था और इसमें 20 अध्यापकों ने भाग लिया था। यह कार्य नागालैण्ड सरकार के अनुरोध पर नयी शिक्षा पद्धति में स्कूल अध्यापकों को अनुस्थापित करने के लिए किया गया था।
4. उड़ीसा के प्रारम्भिक अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए अंग्रेजी शिक्षण पर एक संगोष्ठी का आयोजन इस महाविद्यालय द्वारा 11-10-1976 से 16-10-1976 तक 6 दिन के लिए किया गया था। 27 प्राथमिक अध्यापकों ने इसमें भाग लिया था। इसका आयोजन माध्यमिक प्रशिक्षण स्कूलों में अनुदेश में सुधार के लिए किया गया था।
5. माध्यमिक प्रशिक्षण स्कूलों के अध्यापक-प्रशिक्षकों और माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों हेतु कार्यानुभव में अभिविन्यास पाठ्यक्रम का आयोजन इस महाविद्यालय में 8-11-1976 से 13-11-1976 तक 6 दिन के लिए किया गया था। इस पाठ्यक्रम में 22 अध्यापकों ने भाग लिया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य माध्यमिक प्रशिक्षण स्कूलों और माध्यमिक स्कूलों में कार्यक्रमों की व्यवस्था करने के लिए विषय अध्यापकों को अभिप्रेरित करना था।
6. इस महाविद्यालय में नयी पाठ्यचर्या में +2 स्तर पर शिक्षण के लिए शैक्षिक सत्र 1977-78 से प्रारम्भ किए जाने के लिए स्नातकोत्तर पाठ्य-

क्रम के लिए जीव-विज्ञानों में पाठ्य-विवरण की रचना करने के लिए इस महाविद्यालय द्वारा कलकत्ता में दिनांक 17-10-1976 से 18-10-1976 तक दो दिन के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय प्रोफेसरों ने भाग लिया था।

(आ) सेवा-पूर्व प्रशिक्षण

इस महाविद्यालय ने निम्नलिखित पाठ्यक्रम प्रस्तुत किए हैं और 1976-77 के मध्य विद्यार्थियों की संख्या निम्नलिखित थी :

क्रम संख्या	पाठ्यक्रम	संख्या
1.	द्वितीय वर्ष बी० ए० बी० एड०	54
2.	द्वितीय वर्ष बी० एस० सी० बी० एड०	64
3.	तृतीय वर्ष बी० ए० बी० एड०	56
4.	तृतीय वर्ष बी० एस० सी० बी० एड०	71
5.	अन्तिम वर्ष बी० ए० बी० एड०	38
6.	अन्तिम वर्ष बी० एस० सी० बी० एड०	40
7.	बी० एड० (विज्ञान) माध्यमिक	75
8.	बी० एड० (कला) माध्यमिक	46
9.	बी० एड० (विज्ञान) प्रारम्भिक	10
10.	बी० एड० (कला) प्रारम्भिक	10
11.	एम० एड०	16
	कुल	480

परिषद् की कार्यकारी समिति के निर्णय का पालन करते हुए बी० एस०सी० बी० एड० और बी० ए० बी० एड० उपाधियाँ दिलाने के लिए चार-वर्षीय पाठ्यक्रमों में 1976-77 अवधि में कोई नया प्रवेश नहीं दिया गया।

(इ) सेवा-कालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

(1) ग्रीष्म स्कूल और पत्राचार पाठ्यक्रम

बी० एड० उपाधि दिलाने के लिए ग्रीष्म स्कूल व पत्राचार पाठ्यक्रम का कार्यक्रम इस महाविद्यालय में 1966 में शुरू किया गया था। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने इस कार्यक्रम का प्रावधान करके न केवल अप्रशिक्षित अध्यापकों की बहु-संख्या के प्रति अपनी अत्यधिक चिन्ता प्रस्तुत की है अपितु इस बहु-संख्या को कम करने के लिए एक प्रशंसनीय और प्रभावकारी योजना भी प्रस्तुत की है। इस पाठ्यक्रम का निरूपण व्यावसायिक शिक्षा और विषय-वस्तु व प्रणाली विज्ञान पाठ्यक्रम में सम्पर्क सूत्र की रचना के लिए किया गया था। ग्रीष्म स्कूल के

माध्यम से बी० एड० प्रशिक्षण की कुल अवधि लगभग 14 महीने होगी जिसमें 8 सप्ताहों के 2 ग्रीष्म सत्र सम्मिलित हैं, जिस अवधि में उम्मीदवार को एक आशु-अनुदेशात्मक कार्यक्रम के लिए इस महाविद्यालय के परिसर में ठहरना अभीष्ट है। ग्रीष्म सत्रों के मध्य दस महीने की अन्तर-अवधि का उपयोग पत्राचार पाठ्यक्रम और पर्यवेक्षित क्षेत्र अनुभवों, जिसमें व्यवहारिक शिक्षण भी सम्मिलित है, के लिए किया जाता है। 1976-77 वर्ष में इस पाठ्यक्रम में पंजीकरण की कुल संख्या 246 रही है।

बी० एड० (ग्रीष्म स्कूल/पत्राचार पाठ्यक्रम) के अध्ययनों के पाठ्यक्रमों को 1977-78 सत्र से संशोधित कर दिया गया है और तदनुसार कार्य-अनुभव बी० एड० (माध्यमिक) ग्रीष्म स्कूल/पत्राचार पाठ्यक्रम और बी० एड० प्रारंभिक ग्रीष्म स्कूल पत्राचार पाठ्यक्रम की कक्षाएं चालू हैं।

(2) उप-केन्द्रों को खोलना

इस महाविद्यालय के 2 उप-केन्द्र हैं—एक गंगटोक, सिक्किम में और दूसरा पोर्ट ब्लेयर में तथा तीसरा प्रस्ताव मिजोरम में ऐज़ल में खोलने का है। यहां विद्यार्थियों को बी० ई० (ग्रीष्म स्कूल/पत्राचार पाठ्यक्रम) परीक्षा में प्रवेश दिया जाता है। विद्यार्थियों की संख्या गंगटोक में 161 और पोर्ट-ब्लेयर में 225 थी। शिक्षा मंत्रालय के अनुरोध पर कार्य अभी प्रारम्भ किया ही गया है।

(ई) विकास कार्यक्रम

(1) पत्राचार व सम्पर्क पाठ्यक्रम

इस महाविद्यालय ने पूर्वी क्षेत्र में माध्यमिक प्रशिक्षण संस्थाओं के हाईस्कूल अध्यापकों और प्रारम्भिक अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिविन्यास के लिए पत्राचार व सम्पर्क पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया है। ये पाठ्यक्रम जनवरी 1977 में प्रारम्भ किए गए थे और ये निम्नलिखित विधाओं में हैं :

1. भौतिक विज्ञान
2. जीव विज्ञान
3. गणित
4. इतिहास और नागरिक शास्त्र
5. भूगोल और अर्थशास्त्र
6. अंग्रेजी
7. हिन्दी द्वितीय भाषा के रूप में
8. कला और संस्कृति

पाठ्यक्रम की अवधि पत्राचार द्वारा 6 मास शिक्षण की है, जिसके बाद 15 दिन का एक सम्पर्क कार्यक्रम होता है। इस पाठ्यक्रम के सम्पर्क भाग का प्रयोजन प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न विषय से संबद्ध विद्यार्थियों में कठिनाइयों का स्पष्टीकरण देना, उनको व्यावहारिक/प्रयोगात्मक अनुभव देना और 10-वर्षीय स्कूली पद्धति के अनुपालन से सम्बन्धित कुछ विशिष्ट नवाचारों और क्रिया-कलापों में उनको अनुस्थापित करना है।

जैसे कि पहले ही कहा जा चुका है, इस प्रकार का एक पाठ्यक्रम प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षणों के लिए निरूपित किया गया है। इस पाठ्यक्रम का प्रभाव अध्यापक व प्रशिक्षकों के विषय व प्रणाली विज्ञान के ज्ञान को समृद्ध करना है। जिसमें कक्षा 1 से 8 के अध्ययनों के पाठ्यक्रम का विशेष ध्यान दिया गया हो और उनको प्राथमिक शिक्षा की विशिष्ट समस्याओं और तकनीकों से परिचित कराना है। इसमें निम्नलिखित विधाएँ आती हैं—

अनिवार्य :

1. प्रारंभिक शिक्षा के सिद्धान्त
2. प्रारंभिक शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ
3. शिशु विकास और स्वास्थ्य शिक्षा
4. प्रारंभिक शिक्षा का गठन, प्रशिक्षण और पर्यवेक्षण
5. शिक्षण की अन्तर वस्तु व प्रणाली विज्ञान

वैकल्पिक (चार में से एक) शिक्षण की अन्तर वस्तु व प्रणाली विज्ञान :

1. हिन्दी मातृ भाषा के रूप में
2. सामाजिक अध्ययन
3. विज्ञान
4. प्रारंभिक गणित

4·4 क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर

1976-77 वर्ष में, इस महाविद्यालय ने अपने कार्यक्रमों, अध्ययन पाठ्यक्रमों, विस्तार और अनुसंधान कार्य-कलापों में अनवरत प्रगति जारी रखी। इसने अधिक सम्पर्क स्थापित किया और दक्षिण क्षेत्र के राज्य शिक्षा विभागों के साथ निकट सहभाग में अत्युत्तमता संवर्धन और श्रेष्ठ मानव के लिए कार्य किया।

मंत्रालय द्वारा सुझाए गए कार्यक्रमों के क्रियान्वयन हेतु जैसे कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने निश्चय किया था महाविद्यालय ने शिक्षा की नयी 10+2 पद्धति के अन्तर्गत दस-वर्षीय स्कूल पाठ्यचर्या के अनुपालन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। पाठ्यचर्या के प्रभावी अनुपालन के लिए अनुभव किया गया था कि राज्य शिक्षा विभाग और शिक्षा महाविद्यालय की संकाय के अधिकारियों को अभी विन्यसित किया जाए। सभी कार्यक्रम इस बात को ध्यान में रखकर निर्दिष्ट किया गया था। साथ ही इस वर्ष माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए आयोजित सभी सेवा-कालीन कार्यक्रम 10-वर्षीय स्कूली पाठ्यचर्या के साथ सम्बन्धित है।

(अ) पत्राचार व सम्पर्क कार्यक्रम

इस वर्ष सर्वाधिक महत्त्व का कार्यक्रम पत्राचार व सम्पर्क कार्यक्रम लागू करना था इस कार्यक्रम का उद्देश्य माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए पत्राचार व सम्पर्क कार्यक्रम, कला और संस्कृति, अंग्रेजी, हिन्दी, गणित, सामाजिक विज्ञान-1

सामाजिक विज्ञान-2, भौतिक विज्ञान और जीव-विज्ञानों के विषय क्षेत्रों में एक अन्तरवस्तु और प्रणाली विज्ञान को सम्पन्न करना है। पाण्डीचेरी सहित दक्षिण राज्यों के राज्य शिक्षा विभागों से अनुरोध किया गया था कि इस पाठ्यक्रम के लिए अध्यापकों का चयन करें और उनको इस पाठ्यक्रम में प्रतिनियुक्त करें।

(आ) विस्तार कार्यक्रम

(1) एक कार्यशाला कर्नाटक के माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए विज्ञान क्लब प्रवर्तकों हेतु आयोजित की गयी थी। सक्रिय रूप से उपलब्ध सामग्री से उपकरण सुधारने का प्रशिक्षण दिया गया था।

(2) मैसूर विश्वविद्यालय की "भरणि परियोजना" के अन्तर्गत हुंसर तालुक के आठ देहाती हाई स्कूलों में विज्ञान प्रशिक्षण का स्तर ऊँचा करने की दृष्टि से सम्बन्धित स्कूलों के प्रधानों और विज्ञान शिक्षकों का एक सम्मेलन इस महाविद्यालय में किया गया था।

(3) चार-वर्षीय बी० ए० एड० और बी० एस० सी० एड० अन्तर्वास के लिए सहकारी स्कूलों के प्रधान और अध्यापकों के दो अभिविन्यास सम्मेलन बेल्लारी (कर्नाटक) और पाण्डीचेरी में किए गए। एक-वर्षीय बी० एड० अन्तर्वास के लिए त्रिचुरापल्ली, कोयम्बातुर, त्रिवेन्द्रम, मरकारा व हैदराबाद में सम्मेलन किए गए।

(4) पाण्डीचेरी शिक्षा विभाग के अनुरोध पर इस वर्ष दो भाषण किए गए थे। इनमें से एक व्याकरण शिक्षण पर और दूसरा समकालीन अंग्रेजी प्रयोग पर था। इसके पश्चात् अंग्रेजी के शिक्षण पर एक सप्ताह तक सफल कार्यक्रम किए गए थे।

(5) नयी दस-वर्षीय स्कूली पाठ्यचर्या में मार्गदर्शन का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। मार्गदर्शन के महत्व में प्रधानाध्यापकों और अध्यापकों को अनुस्थापित करने की दृष्टि से तीन कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, तमिलनाडु के अनुरोध पर माध्यमिक स्कूलों के प्रधानों के लिए दो कार्यक्रम मद्रास और त्रिचुरापल्ली में आयोजित किए गए थे। स्कूलों के 30 प्रधानों ने प्रत्येक कार्यक्रम में भाग लिया। मैसूर नगर के माध्यमिक स्कूलों के लिए एक ऐसा ही कार्यक्रम इस महाविद्यालय में किया गया था।

(इ) सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम

(1) कर्नाटिक, तमिलनाडु और केरल के शिक्षा अधिकारियों और अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए 10-वर्षीय स्कूली पाठ्यचर्या पर तीन अभिविन्यास कार्यक्रम इस महाविद्यालय द्वारा सम्बन्धित राज्यों के क्षेत्र कार्यालयों के सहभाग में आयोजित किए गए थे

(2) इस महाविद्यालय द्वारा पाण्डीचेरी में पाण्डीचेरी संघक्षेत्र के शिक्षा अधिकारियों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस अभिविन्यास-कार्यक्रम में लगभग चालीस विद्यार्थियों ने भाग लिया था।

(3) गणित में अन्तर-वस्तु व प्रणाली विज्ञान पाठ्यक्रम पर एक कार्यशाला संसाधन व्यक्तियों और राज्य शिक्षा संस्थान के कर्मचारी वर्ग के लिये पूजापुर, त्रिवेन्द्रम और केरल में आयोजित की गई थी।

(ई) अनुसंधान परियोजनाएँ

(1) कक्षा 5, 6 और 7 के लिए उर्दू में श्रेणीगत सामग्री की तैयारी पर परियोजना

यह परियोजना एरिक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की वित्तीय सहायता से आयोजित की गयी थी। कर्नाटक के प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों के 13 चुने हुए उर्दू अध्यापकों ने 25 श्रेणीगत पाठ तैयार करने में 10 दिन कार्य किया। यह सामग्री छप चुकी है।

मैसूर नगर के उर्दू स्कूलों में प्रथम भाषा के रूप में उर्दू पढ़ाने के लिए साठ अध्यापकों को अपने-अपने स्कूलों में इस सामग्री का पूर्व-परीक्षण करने के लिए अनुस्थापित करने हेतु एक दिन की कार्यशाला आयोजित की गई थी। इस सामग्री का पूर्व-परीक्षण और मूल्यांकन किया जा चुका है।

(2) एस० एस० एल० सी० परीक्षा पर आधारित अंग्रेजी में लिखित अभिव्यंजना के त्रुटि-विश्लेषण पर परियोजना

इस महाविद्यालय के अंग्रेजी विभाग द्वारा यह परियोजना प्रारम्भ की गई है। यह आधार-सामग्री विश्लेषण के चरण में है। इसमें पर्याप्त समय लगेगा क्योंकि कई सौ उत्तर पुस्तिकाओं का विश्लेषण और सूचक तैयार किया जाना है। आशा की जाती है कि इस परियोजना का परिणाम उपचारी अनुदेशों हेतु सामग्री उत्पादन होगा और भाषा प्रयोगशाला के पाठों का निर्माण होगा।

(उ) डिमांस्ट्रेशन बहु-उद्देशीय हाई-स्कूल

यह स्कूल 10+2 पद्धति के अन्तर्गत केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की योजना में किया गया है। तद्नुसार सभी अंग्रेजी भाषा कक्षाएँ केन्द्रीय योजना में परिवर्तित हो गयी हैं, किन्तु स्टैण्डर्ड 6 और 7 में कन्नड़ माध्यम कक्षाएँ कर्नाटक राज्य माध्यमिक शिक्षा योजना के अन्तर्गत ही अभी आती हैं।

5

क्षेत्र-कार्यालय

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के 18 क्षेत्र कार्यालय हैं जिनमें से दो क्षेत्र कार्यालय अगरतला और इम्फाल—बिना क्षेत्र अधिकारियों के हैं। क्षेत्र सलाहकारों के पते **परिशिष्ट क** में दिए गए हैं।

1976-77 वर्ष में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की इन चौकियों ने राज्यों में निम्नलिखित कार्य-कलाप किये जिनका वर्णन राज्यानुसार दिया जा रहा है :

5.1 असम, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश

क्षेत्र कार्यालय ने राज्यों में 10+2 योजना के क्रियान्वयन में सहायता कार्य प्रारम्भ किया। इसने असम, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश के उच्च और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के प्रधानाध्यापक और प्रधानाचार्यों के लिए दो अभिविन्यास पाठ्यक्रमों का आयोजन किया। इसने तृतीय अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के लिए आधार-सामग्री के संग्रह में और स्कूलों से अलग हो गए लोगों के सम्बन्ध में सर्वेक्षण में भी राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की सहायता की। इसने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की राष्ट्रीय प्रतिभा खोज और राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजनाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार किया है। क्षेत्र कार्यालय क्षेत्र में अनवरत शिक्षा केन्द्रों की स्थापना के बारे में चिन्तित था। कुल मिलाकर चार केन्द्र, एक मणिपुर में और तीन नागालैण्ड में, पहले ही मान्य किए जा चुके हैं।

असम के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को इसके अध्यापक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा दो लाख छः हजार रुपये दिए गए थे। क्षेत्र कार्यालयों ने इस कार्य में उनकी सहायता की। क्षेत्र कार्यालय ने मिजोरम स्कूल शिक्षा बोर्ड की सहायता सामाजिक अध्ययन और कार्य-अनुभव में अभिविन्यास कार्यक्रमों के संगठन हेतु वित्तीय और शैक्षणिक सहायता प्रदान करने में की। प्राथमिक स्कूलों की अध्यापिकाओं और सामुदायिक नेतृत्व के लिए अन्य कार्यक्रम आयोजित किए गए थे और असम, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश के राज्यों को वित्तीय और शैक्षणिक सहायता दी गई थी।

क्षेत्र कार्यालय ने शैक्षिक विकास में समुदाय की सम्पन्नता, विज्ञान शिक्षण में सुधार और पाठ्यचर्या के नवीकरण को लेकर बनाए गए यूनिसेफ के कार्यक्रमों में उनके साथ सहभाग दिया।

5.2 आन्ध्र प्रदेश

शिक्षा मंत्रालय के लिए क्षेत्र कार्यालय ने आन्ध्र प्रदेश में प्राथमिक स्कूलों की एक निर्देशिका तैयार की, प्राथमिक स्तर पर अपव्यय और गति-हीनता के बारे में एक द्रुत सर्वेक्षण किया तथा कुछ और जानकारी संग्रह की यथा अध्यापकों की विभिन्न श्रेणियों के वेतन और भत्ते की संरचना के बारे में जानकारी और उर्दू माध्यम में प्रशिक्षक-अध्यापकों हेतु अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थाओं की स्थिति के बारे में भी जानकारी। क्षेत्र कार्यालय ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की पुस्तक "इंगलिश रीडर" भी स्कूलों को सीधे ही वितरित कर दी।

क्षेत्र कार्यालय 10+2 योजना के अनुपालन की दिशा में अध्यापकों के लिए कार्यशाला और अभिविन्यास पाठ्यक्रमों के आयोजन में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के साथ सहभाग करता रहा है।

क्षेत्र कार्यालय ने राज्य की यूनिसेफ सहायता प्रदत्त परियोजना संख्या 1, 2 और 3 में सहायता दी। क्षेत्र कार्यालय ने इण्डो-डच परियोजना में भी सहायता की जो 20 प्राथमिक स्कूलों में क्रियान्वित की जा रही है।

5.3 बिहार

क्षेत्र कार्यालय ने राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनियों की योजना में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की सहायता की।

इसने 10+2 योजना के लिए माध्यमिक स्कूलों हेतु एक पाठ्यचर्या के विकास में राज्य शिक्षा विभागों की सहायता की। इसने संगोष्ठियों और कार्यशालाओं की योजना में भी सहायता दी।

इसने राज्य की यूनिसेफ सहायता प्रदत्त परियोजना क्रमांक 1, 2 और 3 में उनके अनुपालन के विभिन्न चरणों में भी सहायता की।

5.4 दिल्ली

दिल्ली क्षेत्र कार्यालय ने गैर-विज्ञान विषय और कार्य-अनुभव में 29 ग्रीष्म संस्थानों का आयोजन किया, दिल्ली नगर निगम के स्कूल निरीक्षकों के लिए अभि-विन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किए, ग्रामीण विज्ञान अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए। इस ने 10+2 योजना के अनुपालन पर दिल्ली प्रशासन से शिक्षा मन्त्रालय के लिए आँकड़े जमा किए और संसाधन कार्मिकों के प्रशिक्षण और ग्रीष्म संस्थानों के आयोजन में शैक्षणिक मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता प्रदान की। इन दोनों क्षेत्रों में दिल्ली क्षेत्र कार्यालय बहुत सक्रिय रहा है।

5.5 गुजरात

शिक्षा मन्त्रालय की ओर से क्षेत्र कार्यालय ने निम्नलिखित जानकारी संग्र-हीत की :

(1) नियन्त्रित दर पर अभ्यास पुस्तिकाओं की सुलभता

(2) अरबी लिपि के साथ सिंधी भाषा प्रस्तुत करने वाले विद्यार्थियों की संख्या

(3) गुजरात में प्राथमिक और माध्यमिक अध्यापकों के भर्ती नियम और उनकी स्थिति

क्षेत्र कार्यालय ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा तैयार की गई सामग्री राज्य शिक्षा संस्थानों, राज्य पाठ्यपुस्तक बोर्डों, अध्यापक-प्रशिक्षण और अन्य संस्थाओं को दी। इसने राज्यों में राष्ट्रीय प्रतिभा खोज/राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षा का आयोजन करने में सहायता की।

इस कार्यालय ने अंग्रेजी, हिन्दी और सामाजिक विज्ञानों में प्रश्न-पत्र बनाने वालों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करने में सहायता की, इसने विस्तार-सेवाओं के निदेशकों और समन्वयकर्त्ताओं का एक तीन दिवसीय सम्मेलन 10+2 योजना के क्रियान्वयन हेतु किया। इसने अध्यापक शिक्षा पर एक चार-दिवसीय संगोष्ठी भी आयोजित की। इसने राज्य में यूनिसेफ सहायता प्रदत्त परियोजना संख्या 2 और 3 में सहायता दी।

5.6 हरियाणा, पंजाब और हिमाचल प्रदेश

क्षेत्रीय कार्यालय ने 10+2 योजना के अनुपालन पर एक सम्मेलन आयोजित किया। इसने सर्वेक्षण और आधार सामग्री व प्रक्रियन एकक के लिए आधार सामग्री संग्रह करने में सहायता की, और राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज/राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को तैयार करने हेतु अनुस्थापित करने के लिए विज्ञान अध्यापकों का एक कार्यक्रम आयोजित किया। इसने राज्यों में किए गए विभिन्न कार्यक्रमों में अध्यापक शिक्षा विभाग, शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, पाठ्यपुस्तक विभाग, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग, स्कूल शिक्षा विभाग और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों की सहायता की। शिक्षा मन्त्रालय के लिए क्षेत्र कार्यालय ने जानकारी का संग्रह किया। इसने अनवरत शिक्षा केन्द्रों के आयोजन की तैयारी की दिशा में भी कार्य किया।

क्षेत्र कार्यालय ने सेवाकालीन कार्यक्रमों के आयोजन हेतु राज्य शिक्षा संस्थान, चण्डीगढ़ से अनुरोध प्राप्त करने में और उनको राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् को पहुंचाने में सहायता दी। इसने राज्य की यूनिसेफ सहायता प्रदत्त परियोजना क्रमांक 2 और 3 में भी सहायता दी।

5.7 जम्मू और कश्मीर

क्षेत्र कार्यालयों ने 10+2 योजना को जन प्रचलित करने के लिए राज्य स्तर पर एक सम्मेलन का आयोजन किया। इसने श्रीनगर में लड़कियों के लिए एक राष्ट्रीय एकीकरण शिविर का आयोजन करने में सहायता दी। क्षेत्र कार्यालय ने राष्ट्रीय प्रतिभा खोज/राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना को जन-प्रसिद्ध किया। राज्य स्तर

पर एक विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया और एक अखिल भारतीय विज्ञान अध्यापक सम्मेलन भी आयोजित किया।

इसने प्रदर्शनी कार्यक्रम में भी सहायता दी।

5.8 कर्नाटक

क्षेत्र कार्यालय ने सम्मेलन स्तर पर क्षेत्र के अध्यापकों को 10+2 योजना समझने में सहायता दी। इसने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् की राष्ट्रीय प्रतिभा खोज/राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना को प्रचलित करने में भी सहायता प्रदान की।

इसने अनौपचारिक शिक्षा मूल्यांकन और प्रयोगात्मक अभिकरणों को सहायता प्रदान की। क्षेत्र कार्यालय ने राज्य की यूनिसेफ सहायता प्रदत्त परियोजना, क्रमांक 2 और 3 में भी सहायता दी।

5.9 केरल

क्षेत्र कार्यालय ने 10+2 योजना के अनुपालन की दिशा में अभिविन्यास पाठ्यक्रम प्रस्तुत करने में राज्य शिक्षा संस्थान की सहायता की। इसने विज्ञान, गणित और भूगोल में पाठ्यपुस्तकों का स्तर ऊँचा करने में भी राज्य शिक्षा विभाग को सहायता दी।

5.10 मध्य प्रदेश

क्षेत्र कार्यालय ने 10+2 योजना के अनुपालन के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया और राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज का प्रचार करने के लिए सहायता की। इसने राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज को अधिक सफल बनाने के लिए और अध्यापकों व विद्यार्थियों के मार्गदर्शन के लिए भाषणों का आयोजन व प्रकाशन किया।

कार्यालय ने प्रश्न-बैंकों और पाठ्यचर्या दर्शिकाओं के विकास में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को सहायता दी। इसने राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनियाँ आयोजित करने के अतिरिक्त राज्य शिक्षा संस्थान को आहार और शैक्षिक कार्यक्रमों में भी सहायता दी। क्षेत्र कार्यालय ने राज्य की यूनिसेफ सहायता प्रदत्त परियोजना क्रमांक 2 और 3 में सहायता की।

5.11 महाराष्ट्र

क्षेत्र कार्यालय ने 10+2 योजना के क्रियान्वयन में जनमत तैयार करने हेतु सहायता प्रदान की। इसमें प्राथमिक स्कूलों में अपव्यय और गति-हीनता के सर्वेक्षण हेतु आधार सामग्री संग्रह करने में सहायता की, अध्यापकों के वेतनमानों, सेवा स्थितियों और कार्यभार के सम्बन्ध में जानकारी एकत्र की, स्कूल के शिक्षा प्रसारणों के प्रभाव का निर्धारण किया और महाराष्ट्र और गोआ में अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थाओं

की एक निर्देशिका तैयार करने में सहायता की। इस कार्यालय ने राज्य की यूनिसेफ सहायता प्रदत्त परियोजना क्रमांक 1, 2 और 3 में सहायता प्रदान की।

5.12 उड़ीसा

इस क्षेत्र कार्यालय ने शिक्षा मंत्रालय को स्कूलों से अलग हो गये छात्रों के बारे में और प्राथमिक स्तर पर गति हीनता के बारे में जानकारी संग्रह करने मे सहायता प्रदान की और उनको प्राथमिक व मिडिल स्कूलों की सूची दी।

इस कार्यालय ने नयी दस-वर्षीय स्कूल पद्धति के बारे में अध्यापकों को अनुस्थापित करने और पद्धति को जन-प्रचलित करने में राज्य सरकार को सहायता दी। इसने राष्ट्रीय प्रतिभा खोज/राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज को प्रचलित करने में पूरी सहायता की। इसने क्षेत्र में प्रयोगात्मक परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध करने में विभिन्न स्कूलों की सहायता की। कार्यालय ने विज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में यूनिसेफ सहायता प्रदत्त परियोजना क्रमांक 1 को सहायता प्रदान की।

5.13 राजस्थान

इस कार्यालय ने राष्ट्रीय प्रतिभा खोज/राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना को प्रचलित करने में और "राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के राजस्थान में बढ़ते चरण" शीर्षक पुस्तिका तैयार करने में सहायता की। इसने प्रयोगात्मक परियोजना के लिए वित्तीय सहायता देने में योगदान किया। कार्यालय ने शिक्षा की नयी पद्धति को समझने में राज्य सरकार को सहायता दी। इसने अफगानिस्तान के प्राथमिक शिक्षा अध्यापकों को राज्य में शैक्षिक कार्यकलापों पर दृष्टिपात करने में सहायता प्रदान की।

5.14 तमिलनाडु

राज्य सरकार की सहायता से क्षेत्र कार्यालय ने 10+2 योजना के अनुपालन में विज्ञान और गणित के माध्यमिक स्कूल अध्यापकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। कार्यालय ने माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लाभ के लिए शैक्षणिक कार्यक्रमों का आयोजन करने में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की सहायता की। कार्यालय ने राज्य की यूनिसेफ सहायता प्रदत्त परियोजना क्रमांक 1 और 3 में सहायता की।

5.15 उत्तर प्रदेश

इस क्षेत्र कार्यालय ने 10+2 योजना के क्रियान्वयन हेतु कई संगोष्ठियों और अभिविन्यास कार्यक्रमों का आयोजन किया। इसने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के विभिन्न विभागों को उनके कार्यक्रमों में सहायता दी। इसने मथुरा जिले कें व्यवसायिक सर्वेक्षण को करने में सहायता दी।

इसने राष्ट्रीय प्रतिभा खोज/राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना हेतु विद्यार्थियों को मार्गदर्शन करने के लिए क्रमांकों को तैयार करने और अध्यापकों को अनुस्थापित करने में सहायता दी। कार्यालय ने विस्तार सेवा परियोजनाओं में भी सहायता प्रदान की। इसने यूनिसेफ सहायता प्रदत्त परियोजनाओं क्रमांक 1, 2 और 3 में सहायता दी।

5.16 पश्चिम बंगाल

इस क्षेत्र कार्यालय ने विज्ञान और कार्य-अनुभव शिक्षण पर अभिविन्यास संगोष्ठियाँ आयोजित कीं। इसने हिन्दी भाषा स्कूलों के प्रधानाचार्यों, प्रधानाध्यापकों की एक संगोष्ठी आयोजित की जिसमें नयी स्कूल पाठ्यचर्या से सम्बन्धित प्रश्नों का स्पष्टीकरण दिया गया।

क्षेत्र कार्यालय ने प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल अध्यापकों की भर्ती से सम्बन्धित सूचना संग्रह की और केन्द्रीय शिक्षा-मंत्रालय को दे दी। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों/एककों द्वारा माँगी गयी जानकारी भेजने के अतिरिक्त इस कार्यालय ने (विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं/व्यक्तियों में) राष्ट्रीय प्रतिभा खोज/राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज के फार्म वितरित किए और समय में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् पाठ्यपुस्तकें प्राप्त करने में विभिन्न स्कूलों और व्यक्तियों को सहायता प्रदान की। इसने विभिन्न स्कूलों से प्राप्त प्रयोगात्मक परियोजनाओं की जाँच-पड़ताल की और पुरस्कृत लोगों को अनुदान जारी किए।

6

आय व व्यय

परिषद् ने 1976-77 वर्ष में भारत सरकार से रु० 4,97,12,785.00 का अनुदान प्राप्त किया। इसी के साथ-साथ, अपने प्रकाशनों की बिक्री से रु० 68,57,539.00 और रु० 55,56,125.00 की विविध आय भी प्राप्त हुई थी।

परिषद् ने रु० 6,21,26,649.00 की कुल निधियों में से रु० 6,18,95,545.00 योजना और गैर-योजना शीर्षकों के अन्तर्गत खर्च किया।

इसके अतिरिक्त, रु० 2,53,456.00 की धनराशि भी "तृतीय अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण" पर खर्च की गई थी।

1976-77 की आय व व्यय (रु०)

प्राप्य		भुगतान	
अथ शेष	56,97,126	गैर-योजना व्यय	
भारत सरकार तथा अन्य एजेन्सियों से प्राप्त अनुदान		(अ) वेतन और भत्ते, कार्यक्रम आदि	4,21,15,592
(अ) भारत सरकार से मुख्य अनुदान	4,97,12,785	(ब) ऋण और अग्रिम	16,07,668
(ब) भारत सरकार व अन्य एजेन्सियों में प्राप्त विशिष्ट अनुदान	38,78,237	योजना व्यय	
आय		(अ) वेतन और भत्ते, कार्यक्रम आदि	1,97,79,953
(अ) प्रकाशनों आदि की बिक्री से आय	68,57,739	(ब) तृतीय अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण	2,53,456
(ब) अन्य आय	55,56,125	(स) विशिष्ट अनुदानों में से व्यय	33,17,062
भविष्य निधि और अनिवार्य जमा लेखा	85,62,145	भविष्य निधि और अनिवार्य जमा लेखा	74,87,479
जमा, अग्रिम, उचित और प्रेषित धन	2,17,39,071	जमा, अग्रिम, उचंत और प्रेषित धन	2,47,63,327
शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र	45,39,641	भारत सरकार को लौटाया गया शेष	55,117
		शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र	45,16,644
		अंतशेष	26,45,981
जोड़	10,65,42,869	जोड़	10,65,42,869

प रि शि ष्ट

परिशिष्ट—क

परिषद् के क्षेत्र सलाहकार

1. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
कन्नाचल
नवग्रह मार्ग
गौहाटी

2. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
गीतांजलि
टी० सी० नं० 15/1019
जगड़ी
त्रिवेन्द्रम

3. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
3-6/147-2 हिमायत नगर
हैदराबाद

4. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
बी-47, प्रभु मार्ग
तिलक नगर
जयपुर

5. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
ई-1/66 अरेरा कालोनी
भोपाल

6. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
555/ई-ममफोर्डगंज
इलाहाबाद

7. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
119, बुधेश्वरी कालोनी
भुवनेश्वर

8. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
714, नाईंथ क्रास
वेस्ट आफ कौर्ड रोड
राजाजी नगर
बंगलौर

9. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
1-बी, चन्द्र कालोनी
अहमदाबाद

10. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
नं० 5, हिन्दी प्रचार सभा स्ट्रीट
टी० नगर, मद्रास

11. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
285/10, कोरे गाँव पार्क
(बुंद गार्डन के पास)
पूना

12. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
मकान नं० 72/ई
(विद्या सिद्धि सदन)
रोड नं० 10/एच
राजेन्द्र नगर
पटना

13. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
17, रफी अहमद किदवई मार्ग
कलकत्ता

14. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
मकान नं० 23, सैक्टर-8 'ए'
चंडीगढ़

15. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
मकबूल मंजिल, फर्स्ट फ्लोर,
राज बाग, श्रीनगर

16. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
पी० जी० होस्टल, रा० शि० संस्थान
कैम्पस
नई दिल्ली

17. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
इम्फाल

18. क्षेत्र सलाहकार (रा०शै०अ०प्र०प०)
अगरतला

परिशिष्ट—ख

समितियों की संरचना

ख.1 परिषद्

(i) मंत्री, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय
अध्यक्ष—पदेन

1. प्रो० सैयद नुरुल हसन
केन्द्रीय मन्त्री
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

(ii) अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
—पदेन

2. प्रो० सतीशचन्द्र
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान-आयोग
बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली

(iii) सचिव, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय
—पदेन

3. श्री के० एन० चन्ना
सचिव, भारत सरकार
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

(iv) भारत सरकार द्वारा नामजद चार विश्वविद्यालयों के उपकुलपति, प्रत्येक क्षेत्र से एक

4. डा० सी० डी० एस० देवानेसन
उपकुलपति
नार्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी,
शिलांग

5. प्रो० आर० सी० मेहरोत्रा
उपकुलपति
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

6. प्रो० के० सच्चिदानन्द मूर्ति
उपकुलपति
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय
तिरुपति

7. श्री डी० ए० डमोलकर
उपकुलपति
पूना विश्वविद्यालय,
गणेशखंड, पूना

(v) राज्य/विधानांगों वाले संघ-राज्य-क्षेत्र के प्रतिनिधि जो वहां के शिक्षामंत्री (या उसके प्रतिनिधि) होंगे और दिल्ली के मामले में मुख्य कार्यकारी पार्षद (अथवा उसके प्रतिनिधि) होंगे ।

8. शिक्षामंत्री
आंध्र प्रदेश
हैदराबाद

9. शिक्षामंत्री
असम
शिलांग

10. शिक्षामंत्री
बिहार
पटना

11. शिक्षामंत्री
गुजरात
अहमदाबाद

12. शिक्षामंत्री
हरियाणा
चंडीगढ़

13. शिक्षामंत्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला

14. उपशिक्षामंत्री
जम्मू तथा कश्मीर
श्रीनगर

15. शिक्षामंत्री
केरल
त्रिवेन्द्रम

16. शिक्षामंत्री
मध्य प्रदेश
भोपाल

17. शिक्षामंत्री
महाराष्ट्र
बम्बई

18. शिक्षामंत्री
मणिपुर
इम्फाल

19. शिक्षामंत्री
मेघालय
शिलांग

20. शिक्षामंत्री
कर्नाटक
बंगलौर

21. शिक्षामंत्री
नागालैंड
कोहिमा

22. शिक्षामंत्री
उड़ीसा
भुवनेश्वर

23. शिक्षामंत्री
पंजाब
चंडीगढ़

24. शिक्षामंत्री
राजस्थान
जयपुर

25. शिक्षामंत्री
तमिलनाडु
मद्रास

26. शिक्षामंत्री
त्रिपुरा सरकार
अगरतला

27. शिक्षामंत्री
सिक्किम
गंगटोक

28. शिक्षामंत्री
उत्तर प्रदेश
लखनऊ

29. शिक्षामंत्री
पश्चिमी बंगाल
कलकत्ता

30. मुख्य कार्यकारी पार्षद
दिल्ली प्रशासन
दिल्ली

31. शिक्षामंत्री
मिजोरम
एजल

32. शिक्षामंत्री
गोआ, दमन और द्वीव
पणजी (गोआ)

33. शिक्षामंत्री
पांडीचेरी सरकार
पाण्डीचेरी

(vi) **कार्यकारी समिति के सभी सदस्य जो ऊपर शामिल नहीं हैं**

34. उपमन्त्री
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

35. प्रो० रईस अहमद
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

36. प्रो० एम० वी० माथुर
निदेशक
नेशनल स्टाफ कॉलेज फॉर ऐज्युकेशनल प्लानर्स एंड एडमिनिस्ट्रेटर्स
नई दिल्ली

37. प्रो० सी० एन० आर० राव
इण्डियन इंस्टीच्यूट आफ साइंस
बंगलौर

38. श्रीमती अनुताई बाघ
संचालिका
ग्राम बाल शिक्षा केन्द्र
विकासवाड़ी-कोसबाड़ हिल
तालुका-दहानू, जिला-थाना
(वाया-दहानू रोड स्टेशन पश्चिमी-रेलवे)
महाराष्ट्र

39. मास्टर ए० ए० कैफी
आर/ओ मालेरट्टा, कोकर मस्जिद
पो० आ० एस० आर० गंज
श्रीनगर

40. प्रो० शिब के० मित्र
संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

41. प्रो० ए० एन० बोस, डीन (समन्वय) और अध्यक्ष
कार्यशाला (वर्कशाप) विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

42. प्रो० आर० सी० दास, डीन (अकैडेमिक) और अध्यक्ष
अध्यापक शिक्षा विभाग
रा० शै० अ० और प्र० प०
नई दिल्ली

43. डा० के० पी० नायक
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भोपाल

44. श्रीमती जे० अंजनि दयानन्द
संयुक्त सचिव
शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

45. श्री जे० ए० कल्याणकृष्णन
वित्तीय सलाहकार
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् और शिक्षा एवं समाज कल्याण मन्त्रालय
नई दिल्ली

(vii) **भारत सरकार द्वारा नामजद ऐसे छः अन्य व्यक्ति जिन्हें भारत सरकार समय-समय पर नामजद करे। इनकी संख्या बारह से अधिक नहीं होगी और इनमें से कम-से-कम 4 स्कूल अध्यापक होंगे।**

46. श्री जगदीश मिस्र
जनरल सैक्रेटरी
अखिल भारतीय प्राथमिक स्कूल-अध्यापक संघ, प्रदर्शनी मार्ग
पटना

47. श्री जे० एस० सीगामणि
हैडमास्टर
सेंट पैट्रिक्स मिडिल स्कूल
मैलूर, टूटिकोरिन-2
जिला-तिरुनेल वेली (तमिलनाडु)

48. श्रीमती सईदा बेगम
अध्यापिका
गवरमैण्ट गर्ल्स हाई स्कूल
पम्पोर, जिला-अनन्तनाग
(जम्मू व कश्मीर)

49. श्री ए० एन० ठाकुर
प्रधानाचार्य
ठाकर्स हाई स्कूल
एलिसब्रिज
अहमदाबाद

50. महानिदेशक
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि भवन
नई दिल्ली

51. महानिदेशक, रोजगार और प्रशिक्षण
(प्रशिक्षण पक्ष)
श्रम मंत्रालय (डी० जी० ई० टी०)
श्रमशक्ति भवन
नई दिल्ली

52. डा० माल्कम आदिशेषैया
उपकुलपति, मद्रास विश्वविद्यालय
मद्रास

53. प्रो० ए० पी० जम्बूलिंगम
प्रिंसिपल, टैक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग इंस्टीच्यूट
अडयार, मद्रास

54. प्रो० सी० एस० झा
निदेशक
इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ टैक्नोलोजी
खड़गपुर

55. डा० (श्रीमती) एस० के० संधू,
निदेशक
केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो
(स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय)
टैम्पल लेन, कोटला रोड
नई दिल्ली

56. श्री पी० आर० चौहान
आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
नेहरू हाउस
बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली

57. प्रो० तापस मजूमदार
अध्यक्ष
जाकिर हुसैन सेन्टर फॉर ऐज्यूकेशनल स्टडीज
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

58. श्री वी० आर० द्रवीड़
सचिव
रा० शै० अ० और प्र० प० (सचिव)

ख. 2 कार्यकारी समिति

(i) **परिषद् का अध्यक्ष जो पदेन कार्यकारी समिति का अध्यक्ष होगा**

1. प्रो० सैयद नुरुल हसन
केन्द्रीय मंत्री
शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

(ii) **(अ) शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय में राज्यमंत्री जो पदेन कार्यकारी समिति का उपाध्यक्ष होगा**

2. —

(आ) शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय में उपमंत्री-अध्यक्ष, रा० शै० अ० और प्र० प० द्वारा मनोनीत

3. प्रो० डी० पी० यादव
उपमंत्री
शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

(इ) परिषद् के निदेशक

4. प्रो० रईस अहमद
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

(iii) **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष पदेन सदस्य**

5. प्रो० सतीशचन्द्र
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली

(iv) राष्ट्रीय शै० अ० और प्र० प० के अध्यक्ष द्वारा नामजद चार शिक्षाविद जो स्कूल शिक्षा में विशेष रुचि रखते हों, तथा जिनमें से दो स्कूल अध्यापक होंगे।

6. प्रो० एम० वी० माथुर
निदेशक
नेशनल स्टाफ कालेज फॉर ऐज्यूकेशनल प्लानर्स एंड एडमिनिस्ट्रेटर्स
नई दिल्ली

7. प्रो० सी० एन० आर० राव
इण्डियन इंस्टीच्यूट आफ साइंस
बंगलौर

8. श्रीमती अनुताई बाघ
संचालिका
ग्राम बाल शिक्षा केन्द्र,
तालुका-दहानू, जिला थाना
(वाया-दहानू रोड स्टेशन, पश्चिमी रेलवे)
महाराष्ट्र

9. मास्टर ए० ए० कैफी
आर/ओ मालेरट्टा, कोकर मस्जिद
पो० आ० एस० आर० गंज
श्रीनगर

(v) परिषद् के संयुक्त निदेशक

10. प्रो० एस० के० मित्र
संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

(vi) रा० शै० अ० प्र० प० के अध्यक्ष द्वारा नामजद परिषद् की संकाय के तीन सदस्य जिनमें से कम से कम दो प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष के स्तर के होंगे।

11. प्रो० ए० एन० बोस
अध्यक्ष
विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

12. डा० के० पी० नायक
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भोपाल

13. प्रोफेसर आर० सी० दास
अध्यक्ष
अध्यापक शिक्षा विभाग
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

(vii) शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय का प्रतिनिधि	14. श्रीमती जे० अंजनि दयानन्द संयुक्त सचिव शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय नई दिल्ली
8. वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि जो परिषद् का वित्त सलाहकार होगा	15. श्री जे० ए० कल्याणकृष्णन वित्त सलाहकार, रा० शै० अ० प्र० प० कमरा नं० 10'9 सी' शास्त्री भवन नई दिल्ली
	16. श्री बी० आर० द्रवीड़ सचिव राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली (सचिव)

ख-3 संस्थापन समिति

(i) निदेशक, रा० शै० अ० प्र० प०	1. प्रो० रईस अहमद (अध्यक्ष) निदेशक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली
(ii) संयुक्त निदेशक, रा० शै० अ० प्र० प०	2. डा० शिब के० मित्र संयुक्त निदेशक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली
(iii) अध्यक्ष द्वारा नामजद शिक्षा मंत्रालय का एक प्रतिनिधि	3. श्रीमती जे० अंजनि दयानन्द संयुक्त सचिव शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय नई दिल्ली
(iv) अध्यक्ष द्वारा नामजद चार शिक्षाविद, जिनमें से कम से कम एक वैज्ञानिक होगा	4. प्रो० बी० वेंकटरामन टी० आई० एफ० आर० होमी भाभा रोड बम्बई

5. प्रो० एम० वी० माथुर
निदेशक
नेशनल स्टाफ कालेज फॉर ऐज्यू-केशनल प्लानर्स एण्ड एडमिनिस्ट्रेटर्स
नई दिल्ली

6. प्रो० सं० वि० चन्द्रशेखर अय्या
59, फर्स्ट ब्लाक ईस्ट, जयनगर
बंगलौर

7. डा० एस० सलामत उल्लाह
कन्सलटैन्ट
रा० शै० अ० प्र० प०
नई दिल्ली

(v) अध्यक्ष द्वारा नामजद क्षे० शि० म० का एक प्रतिनिधि

8. प्रो० जी० बी० कानूनगो
प्रिंसिपल, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भुवनेश्वर

(vi) अध्यक्ष द्वारा नामजद रा० शि० सं०, दिल्ली का एक प्रतिनिधि

9. प्रो० (श्रीमती) पेरिन एच० मेहता
अध्यक्ष शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा आधार-विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

(vii) परिपद् के नियमित शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक कर्मचारी वर्ग में से एक-एक (कुल दो) प्रतिनिधि

10. प्रोफेसर आर० पी० सिंह
नीति, नियोजन एवं मूल्यांकन एकक
रा० शै० अ० और प्र० प०

11. श्री के० एम० जार्ज
अधीक्षक, भर्ती अनुभाग
रा० शै० अ० प्र० प०

(viii) वित्तीय सलाहकार, रा० शै० अ० प्र० प०

12. श्री जे० ए० कल्याणकृष्णन
वित्तीय सलाहकार (परिषद्)
कमरा नं० 109 'सी', शास्त्री भवन
नई दिल्ली

(ix) सचिव, रा० शै० अ० प्र० प०

13. श्री वी० आर० द्रवीड़
सचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (सदस्य संयोजक)

ख. 4 वित्त समिति

1. प्रो० रईस अहमद (अध्यक्ष)
   निदेशक
   राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
   प्रशिक्षण परिषद्
   नई दिल्ली

2. श्रीमती जे० अंजनि दयानन्द
   संयुक्त सचिव
   शिक्षा तथा समाज कल्याण मन्त्रालय
   नई दिल्ली

3. प्रो० एम० वी० माथुर
   निदेशक
   नेशनल स्टाफ कालेज फॉर ऐज्यू-
   केशनल प्लानर्स एंड एडमिनिस्ट्रेटर्स
   नई दिल्ली

4. प्रो० सी० एन० आर० राव
   इंडियन इंस्टीट्यूट आफ साइंस
   बंगलौर

5. श्री० जे० ए० कल्याणकृष्णन
   वित्त सलाहकार
   शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय
   और रा० शै० अ० प्र० प०
   कमरा न० 109 'सी'
   शास्त्री भवन
   नई दिल्ली

6. श्री वी० आर० द्रवीड़ (संयोजक)
   सचिव
   रा० शै० अ० और प्र० प०

ख. 5 भवन तथा निर्माण समिति

1. निदेशक, रा०शै०अ०प्र०प० (अध्यक्ष) पदेन — प्रो० रईस अहमद, निदेशक, रा० शै० अ० और प्र० प०

2. संयुक्त निदेशक रा० शौ० अ० और प्र० प०, पदेन	डा० शिब के० मित्र संयुक्त निदेशक, रा० शौ० अ० और प्र० प०
3. मुख्य इंजीनियर, केन्द्रीय लो० नि० विभाग अथवा उसके द्वारा मनोनीत व्यक्ति	श्री एन० लक्ष्मीग्राह सुपरिटैण्डिग सर्वेयर आफ वर्क्स (फूड) सी० पी० डब्ल्यू० डी०, इन्द्रप्रस्थ भवन, इन्द्रप्रस्थ ऐस्टेट, नई दिल्ली
4. वित्त मंत्रालय (वर्क्स) का एक प्रतिनिधि	श्री मेहरसिंह सहायक वित्त सलाहकार, वित्त मंत्रालय (वर्क्स) निर्माण भवन, नई दिल्ली
5. परिषद् का परामर्शी वास्तुक	श्री के० एम० सक्सेना ज्येष्ठ वास्तुक (सी) 1 के० लो० नि० विभाग, निर्माण भवन, नई दिल्ली
6. परिषद् का वित्त सलाहकार अथवा उसके द्वारा मनोनीत व्यक्ति	श्री जे० ए० कल्याणकृष्णन वित्त सलाहकार, रा०शौ०अ०प्र०प० कमरा नं० 109 'सी' शास्त्री भवन नई दिल्ली
7. शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय द्वारा मनोनीत व्यक्ति	श्रीमती जे० अंजनि दयानन्द संयुक्त सचिव, शिक्षा एवं स० क० मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली
8. प्रसिद्ध मुख्य इंजीनियर (प्रधान द्वारा मनोनीत)	श्री एच० यू० बिजलानी मुख्य इंजीनियर दिल्ली नगर निगम दिल्ली
9. प्रसिद्ध बिजली इंजीनियर (प्रधान द्वारा मनोनीत)	श्री आई० सी० सांगेर अतिरिक्त मुख्य इंजीनियर (डी) दिल्ली बिजली पूर्ति निगम लिंक हाउस नई दिल्ली

10. **समिति द्वारा मनोनीत कार्यकारी समिति का सदस्य**
    प्रो० एम० वी० माथुर
    निदेशक
    नेशनल स्टाफ कालेज फॉर ऐज्युकेशनल प्लानर्स एंड एडमिनिस्ट्रेटर्स
    नई दिल्ली

11. **सचिव, रा० शै० अ० और प्र० प० (सदस्य सचिव)**
    श्री बी० आर० द्रवीड
    सचिव, रा० शै० अ० और प्र० प०

ख. 6 कार्यक्रम सलाहकार समिति

1. **प्रो० रईस अहमद** (अध्यक्ष)
   निदेशक
   राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
   नई दिल्ली

2. **डा० शिब के० मित्र**
   संयुक्त निदेशक
   राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
   नई दिल्ली

3. **डा० एस० बी० अडावल**
   प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
   शिक्षा विभाग
   इलाहाबाद विश्वविद्यालय
   इलाहाबाद

4. **प्रो० आर० के० यादव**
   डीन
   शिक्षा-संकाय
   बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
   कामाछा, वाराणसी

5. **डा० एन० वेदमणि मेनुएल**
   प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग तथा डीन
   शिक्षा विभाग
   केरल विश्वविद्यालय
   दाईकाड, त्रिवेन्द्रम

6. **डा० ए० डब्ल्यू० ओक**
   अनुसंधान विभाग
   प्रेमकुंवर बाई विट्ठलदास दामोदर ठाकरसी
   महिला शिक्षा महाविद्यालय
   1, नाथीबाई ठाकरसी मार्ग
   बम्बई

7. **प्रो० (कु०) पिलोमेना एन्डरू**
   महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय
   शिक्षा विभाग
   पटना विश्वविद्यालय (परिसर)
   पटना

8. **श्री सी० गोपीनाथ राव**
   निदेशक
   राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
   आलिया स्कूल कम्पाउन्ड
   हैदराबाद

9. **श्री पी० सी० चौधुरी**
वाइस-प्रिंसिपल इंचार्ज
राज्य शिक्षा संस्थान
डाकघर—बाजीपुर
जिला—24 पुराना (प० बंगाल)
10. **श्री एस० डी० त्रिवेदी**
प्रिंसिपल, राज्य शिक्षा संस्थान
इलाहाबाद
11. **श्री जी० एन० पटेल**
निदेशक, राज्य शिक्षा संस्थान
रेलखड, अहमदाबाद
12. **श्री एल० के० रामबल**
प्रिंसिपल, राज्य शिक्षा संस्थान
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय
श्रीनगर
13. **अध्यक्ष**
स्कूल शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली
14. **डा० एल० आर० एन० श्रीवास्तव**
रीडर
स्कूल शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली
15. **अध्यक्ष**
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली
16. **प्रो० बी० शरण**
प्रोफेसर
विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली
17. **अध्यक्ष**
सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी
शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली
18. **प्रो० बी० एस० पारख**
प्रोफेसर
सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी
शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली
19. **अध्यक्ष**
अध्यापक शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली
20. **श्री बी० एन० पांडेय**
रीडर
अध्यापक शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली
21. **अध्यक्ष**
शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा आधार
विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली
22. **प्रो० सी० के० बसु**
प्रोफेसर
शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा
आधार विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

23. **अध्यक्ष**
    पाठ्यपुस्तक विभाग
    राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
    प्रशिक्षण परिषद्
    नई दिल्ली
24. **डा० के० जी० रस्तोगी**
    रीडर
    पाठ्यपुस्तक विभाग
    राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
    प्रशिक्षण परिषद्
    नई दिल्ली
25. **अध्यक्ष**
    शिक्षण साधन विभाग
    राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
    प्रशिक्षण परिषद्
    नई दिल्ली
26. **श्री शंकर नारायण**
    रीडर
    शिक्षण साधन विभाग
    राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
    प्रशिक्षण परिषद्
    नई दिल्ली
27. **अध्यक्ष**
    प्रकाशन विभाग
    राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
    प्रशिक्षण परिषद्
    नई दिल्ली
28. **कुमारी खुर्शीद वाडिया**
    सम्पादक
    प्रकाशन विभाग
    राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
    प्रशिक्षण परिषद्
    नई दिल्ली
29. **अध्यक्ष**
    वर्कशाप विभाग
    राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
    प्रशिक्षण परिषद्
    नई दिल्ली
30. **श्री पी० के० भट्टाचार्य**
    रीडर
    राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
    प्रशिक्षण परिषद्
    नई दिल्ली
31. **श्री वी० एन० वांचू**
    प्रिंसिपल
    क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
    अजमेर
32. **प्रो० पी० एन० दवे**
    प्रोफेसर
    क्षे० शि० म०
    अजमेर
33. **प्रिंसिपल (डा० के० पी० नायक)**
    क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
    भोपाल
34. **प्रो० जे० एस० राजपूत**
    प्रोफेसर विज्ञान
    क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
    भोपाल
35. **प्रिंसिपल (प्रो० जे० वी० कानूनगो)**
    क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
    भुवनेश्वर
36. **डॉ० श्रीमती जी० आर० घोष**
    प्रोफेसर (विज्ञान)
    क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
    भुवनेश्वर

37. प्रिंसिपल (श्री एस० एन० साहा)
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
मैसूर

38. प्रो० ए० के० शर्मा
प्रोफेसर-विज्ञान (रसायन)
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
मैसूर

39. प्रिंसिपल
शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र

40. डॉ० (श्रीमती) एस० शुक्ला
प्रोफेसर
शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र

परिशिष्ट—ग

परिषद् के 1976-77 में किए गए प्रमुख निर्णय

1. कार्यकारी समिति ने 28-5-1976 को हुई अपनी बैठक में अन्य पदों के साथ विशेष कार्य-अधिकारी के एक पद की सृष्टि का अनुमोदन कर दिया। विशेष कार्य-अधिकारी की रिपोर्ट प्राप्त होने पर कार्यकारी समिति पाठ्यपुस्तक उत्पादन के वाणिज्यीकरण के प्रश्न पर आगे विचार करेगी।

2. क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में वर्तमान पाठ्यक्रम के पुर्नगठन और नये पाठ्यक्रम के प्रारम्भ करने के लिए बनायी गयी समिति की सिफारिशों पर विचार करते हुए कार्यकारी समिति ने निर्णय लिया जो सारणी में आगे दिया गया है।

3. कार्यकारी समिति ने 30 दिसम्बर, 1976 को हुई अपनी बैठक में स्थायी आधार पर क्षेत्र कार्यालय की स्थापना का अनुमोदन कर दिया।

4. परिषद् द्वारा राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना के प्रश्न पर विचार करने के लिए स्थापित की गयी समीक्षा समिति की सिफारिशों को निम्नलिखित संशोधनों सहित स्वीकार कर लिया गया :

   (1) रिपोर्ट में सुझायी गयी परीक्षा बी० एस० सी० स्तर पर हो किंतु यह शिक्षा के 14वें वर्ष और 15वें वर्ष पर अर्थात् 10+2+3 की समाप्ति पर और 10+2+2 की समाप्ति पर ही होनी चाहिए।

   (2) उपर्युक्त पुर्नमान्यकरण सहित सभी छात्रवृत्तियाँ पी० एच० डी० स्तर तक अध्ययन के लिए उपलब्ध होनी चाहिए, किंतु इसमें अपवाद व्यवसायिक विषयों में छात्रवृत्तियों का होगा, जिनमें वे द्वितीय उपाधि प्राप्ति (सैकण्ड डिग्री) तक ही उपलब्ध रहेंगी।

   (3) यह भी निश्चय किया गया था कि विभिन्न स्तरों पर दी जाने वाली छात्रवृत्तियों की संख्या का निर्धारण उपलब्ध निधियों की अधिकतम उपयोजना के निकट बिंदु से किया जाना चाहिए।

5. इसी बैठक में समिति ने राज्यों में अध्यापकों की अनवरत शिक्षा के 100 केन्द्रों की स्थापना किए जाने का अनुमोदन भी कर दिया। इस योजना में परिषद् के विभिन्न विभागों के माध्यम से आयोजित किए जा रहे ग्रीष्म संस्थान कार्यक्रमों को सामान्यतया बदल देना प्रस्तावित है। उन केन्द्रों को अंशदायिता के आधार पर राज्यों के साथ सहभाग में चलाया जाएगा।

6. कार्यकारी समिति ने 30 दिसम्बर, 1976 को हुई अपनी बैठक में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय और क्षेत्र सलाह-

कारों के कार्यालय में स्नातकोत्तर अध्यापकों (पी० जी० टी०) की तरक्की के अवसरों पर विचार किया और स्थापना समिति की इन सिफारिशों को स्वीकार कर लिया कि प्रवक्ता के पद के संशोधित वेतनमानों के साथ लगाई गई संशोधित अर्हताओं (योग्यताओं) के कारण उच्चतर पद के लिए चुनाव केवल कुछ ही लोगों को लाभ पहुंचा सकता है। तदनुसार यह निश्चय किया गया था कि उनके अनुभव का लाभ उनमें से कुछ को रुपये 700 से 1300 के वेतनमान में सहायक क्षेत्र सलाहकार के रूप में चयन करके दिया जा सकता है और भर्ती नियमों को उपयुक्त रूप में संशोधित किया जा सकता है।

7. यूनेस्को अथवा इस जैसी विश्व संस्थाओं में विशेष कार्य पर अथवा विभिन्न देशों में शैक्षणिक कर्मचारी वर्ग की प्रति-नियुक्ति के सम्बन्ध में नीति पर भी विचार किया गया था और तद्नुसार यह निश्चय किया गया था कि जब एक पद पर कोई गैर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् कर्मचारी नियुक्त कर दिया जाता है तब उसको विदेशी कार्य अथवा भारत में प्रति-नियुक्ति पर नियुक्ति या पद पर पुर्नग्रहण अधिकार की अनुमति न दी जाए जब तक कि वह परिषद् में 3 वर्ष की स्थायी सेवा न कर ले। समिति ने यह भी निश्चय किया कि परिषद् के सेवारत कर्मचारियों को 5 वर्ष की अवधि समाप्त होने से पहले निरन्तर विदेशी अथवा भारतीय कार्य-भार स्वीकार करने की अनुमति नहीं दी जाए। साथ ही किसी भी कर्मचारी को 2 वर्ष से अधिक की अवधि के लिए विदेशी कार्यभार पर प्रति-नियुक्ति पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् से दूर रहने की सामान्य-तया अनुमति न दी जाए। इसमें अपवाद 3 महीने या उससे कम अल्पकालिक अवधि के लिए प्रति-नियुक्ति की होगी अन्यथा अध्यक्ष, राष्ट्रीय शैक्षिक अनु-संधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा छूट अपेक्षित होगी।

8. स्थापना समिति ने 10 सितम्बर, 1976 को हुई अपनी बैठक में परिषद् में प्रथम श्रेणी के पदों पर चुने जाने वाले द्वितीय श्रेणी अधिकारियों को स्वास्थ्य परीक्षा से छूट देने के मामले पर भी विचार किया और यह निश्चय किया कि कोई नई स्वास्थ्य परीक्षा नहीं करानी चाहिए बशर्ते ऐसे कर्मचारी पहले ही किसी उपयुक्त प्राधिकरण द्वारा स्वास्थ्य परीक्षा करवा चुके हों।

9. वित्त समिति ने दिनांक 5 अप्रैल, 1976 को हुई अपनी विशेष बैठक में शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र के लिए विभिन्न पदों की सृष्टि पर विचार किया। जहाँ तक 'ओपन स्कूल' के लिए परियोजना अधिकारी के पद का सम्बन्ध है यह निश्चय किया गया था कि इस पद को आन्तरिक समायोजना द्वारा भर लिया जाय। इसी प्रकार, उत्पादन अधिकारी और सम्पादक के पदों के लिए समिति ने निश्चय किया कि इन पदों की परिषद् के प्रकाशन विभाग में सृष्टि की जानी चाहिए और प्रौद्योगिकी शिक्षा केन्द्र का सभी मुद्रण कार्य उनको दे

देना चाहिए। समिति ने शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र के लिए प्रशासनिक पदों यथा अधीक्षक, आशुलिपिक का भी अनुमोदन किया।

10. वित्त समिति ने 8 सितम्बर, 1976 को अपनी बैठक में आई० आई० टी०, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से केन्द्रीय विद्यालय (कक्षा 6 से 12) की स्थापना पर भी विचार किया और इसका अनुमोदन कर दिया।

11. वित्त समिति ने अपनी दिनांक 5 अप्रैल 1976 की बैठक परिषद् में व्यावसायिक सहायकों और वरिष्ठ अनुसंधान सहायकों के पद प्रक्रम को दिल्ली में स्कूल अध्यापकों के उपयुक्त पद क्रम में परिवर्तन पर भी विचार किया और निर्णय दिया कि ऐसे पद स्नातकोत्तर अध्यापक (पी० जी० टी०) बदल दिए जाएं।

12. समिति ने परिषद् में स्टुवर्ड और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में अध्यापक (केयर-टेकर) के पद के वेतनमान के संयुक्तिकरण पर विचार किया और अनुमोदन किया।

13. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् में एक पत्राचार शिक्षा एकक स्थापित करने और विभिन्न पदों की सृष्टि का प्रस्ताव भी अनुमोदित किया गया।

14. क्षेत्रीय सलाहकारों की बढ़ती भूमिका और उनके कर्मचारियों की संख्या में बढ़ोत्तरी को देखते हुए वित्त समिति ने कार्यालय-सह-आवास स्थान की उच्चतम सीमा में बढ़ोत्तरी का अनुमोदन कर दिया। वित्त समिति ने क्षेत्र सलाहकारों को किसी भी एकाकी अनुमोदित शैक्षणिक कार्यक्रम के लिए 5 हजार रुपये तक और प्रयोगात्मक परियोजनाओं के लिए 500 रुपये तक वित्तीय शक्तियों के प्रत्यायोजन पर भी विचार किया और इसे अनुमोदित कर दिया। साथ ही समिति ने दिल्ली में क्षेत्र सलाहकार के पृथक एकक की स्थापना का और क्षेत्र सलाहकार दिल्ली को विशेष वेतन देने का भी अनुमोदन कर दिया।

15. क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए पत्राचार व सम्पर्क पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने और विभिन्न पदों की सृष्टि का प्रस्ताव भी अनुमोदित कर दिया।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय

वर्तमान पाठ्यक्रम (सेवा-कालीन)	अजमेर	भोपाल	भुवनेश्वर	मैसूर
1. चार-वर्षीय बी० एस० सी०, बी० एड०	इस वर्ष प्रवेश बन्द कर दिए जाएंगे			जारी है 60
2. चार-वर्षीय बी० ए०, बी० एड०	प्रवेश बन्द किया जाएगा			
3. एक-वर्षीय बी० एड०	भर्ती को 240 तक कम करना है	भर्ती को 200 तक कम करना है	भर्ती को 120 तक कम करना है	भर्ती को 120 तक पुनर्वितरित करना है
4. बी० एड/ग्रीष्म-स्कूल व पत्राचार पाठ्यक्रम	सभी चारों महाविद्यालयों में जारी रहेगा जिसमें प्रत्येक महाविद्यालय में 250 लोग भर्ती होंगे			
5. एम० एड	जारी रहेगा 10	जारी रहेगा 10	जारी रहेगा 10	—
6. एम० एस० सी० एड (दो-वर्षीय पाठ्यक्रम)	—	—	—	जारी रहेगा (10)
7. पी० यू० सी०	—	—	—	डिमॉन्स्ट्रेशन स्कूल में जारी रहेगा (120)
नए पाठ्यक्रम (सेवा-कालीन)				
1. एम० ए०, एम० सी०	महाविद्यालय प्रस्तावित पाठ्यक्रमों को जल्दी ही परिषद् के समक्ष प्रस्तुत कर दें।			
2. बी० एड० (प्रारम्भिक)	प्रारम्भ किया जाना है (28)	प्रारंभ किया जाना है (40)	प्रारंभ किया जाना है (20)	प्रारंभ किया जाना है (20)
3. बी० एड (प्रारम्भिक/ग्रीष्म स्कूल व पत्राचार पाठ्यक्रम)	शुरू करना है (100)	—	शुरू करना है (100)	—

4. बी० एड/डिप्लोमा व्यवसायिक	सभी महाविद्यालयों में शुरू करना है			
5. 2 व्यावसायिक पाठ्यक्रम (डिमौन्स्ट्रेशन बहुद्देशीय स्कूलों में प्रारम्भिक अध्यापक)	शुरू करना है (20)	शुरू करना है (20)	—	शुरू करना है (20)
सेवा-कालीन कार्यक्रम				
1. प्रारंभिक अध्यापक-प्रशिक्षक संपर्क व पत्राचार पाठ्यक्रम (10 मास 15 दिन)	चारों महाविद्यालयों में शुरू करना है			
2. प्रधान अध्यापक और पर्यवेक्षण-कर्मचारी वर्ग (15 दिन)	,,	,,	,,	,,
3. माध्यमिक स्कूल अध्यापक : संपर्क व पत्राचार पाठ्यक्रम	शुरू करना है 3000	शुरू करना है 3000	शुरू करना है 3000	शुरू करना है 3000
(6 मास + 15 दिन + कार्य-अनुभव के लिए 15 दिन)	(12 वर्गों के लिए प्रति वर्ग 250 की दर से)			

परिशिष्ट—घ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा 1976-77 की अवधि में सहायता प्रदत्त बाह्य अनुसंधान परियोजनाएँ :

क्र० सं०	अनुसंधान परियोजना का शीर्षक	दी गई अनुदान राशि (रुपयों में)
1.	देश के प्रशिक्षण महाविद्यालय आदि का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	4,000
2.	पश्चिम बंगाल के कुछ चुने हुए जिलों में क्षेत्र-कौशलों का सर्वेक्षण	20,000
3.	राजस्थान में प्राथमिक स्तर पर सेवा-पूर्व अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रभावकारिता का एक अध्ययन	7,000
4.	बड़ौदा के कमजोर वर्ग के विशेष सन्दर्भ में समाज के कमजोर वर्ग की शिक्षा की समस्या	10,000
5.	गुजरात में कक्षा 8 से 10 तक के छात्रों में श्रवण-बोध का अध्ययन	11,400
6.	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की बाल पुस्तकों में लड़कियों/महिलाओं का चित्रण	6,000
7.	राजस्थान में एक-अध्यापकीय स्कूल के काम करने की पद्धति और समस्याओं का अध्ययन	2,990
8.	नये हिन्दी पद्य में इसके शिक्षण की दृष्टि से संप्रेक्षण का निर्धारण	15,000
9.	अहमदाबाद के प्राथमिक स्कूल जाने वाले बच्चों की उपलब्धि-मानक का अध्ययन	4,500
10.	उत्तर प्रदेश में निर्दिष्ट जन-जातियों के विशेष सन्दर्भ में जन-जाति के बच्चों का एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन	8,900
11.	कार्यकर छुट्टियाँ	10,000
12.	शिक्षा में अनुसंधान और विकास कार्यक्रम	4,500
13.	आंकिक योग्यता के परीक्षण की संरचना	3,900
14.	प्रवेश-वृद्धि के लिए अपनाए गए कुछ उपायों की प्रभावकारिता का अध्ययन	6,000
15.	रीवाँ जिले में माध्यमिक और विद्यालय स्तरों पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक अनुकूलता, सामाजिक अभिलाषा और निष्पादन का एक अध्ययन	7,000

16.	प्राथमिक स्कूल में शिक्षा की पुनः स्थापना-मार्गदर्शी अध्ययन	9,000
17.	स्कूल पद्धति की दक्षता का एक अध्ययन	6,000
18.	द्वितीय भाषा के रूप में बंगला शिक्षण	11,000
19.	+2 स्तर पर व्यवसायिक शिक्षा के विकास के लिए व्यवसाय कल्पना की आधार सामग्री के संकलन हेतु एकक की स्थापना	25,000
20.	उच्च स्कूल हेतु द्रविड़ में श्रेणीबद्ध व्याकरण	20,000
21.	मानसिक रूप से पिछड़े विकलांग बच्चों के लिए पाठ्यचर्या का विकास	6,000
22.	औरंगाबाद के विद्यार्थियों और माता-पिता की अभि-वृत्ति	3,365
23.	स्कूल विषयों के लिए शिक्षण प्रणालियों में प्रभावकारिता का विकास	4,600
24.	भाषिक गलती आदि का निदान	7,500
25.	कार्य समायोजन का मनोवैज्ञानिक अध्ययन	5,000
26.	प्राथमिक शिक्षा के व्यापकीकरण में अध्यापिकाओं की भूमिका	4,000
27.	शीघ्र प्राथमिक शिक्षा पर अनुसंधान	17,400
28.	साधन समाविष्ट स्कूली विज्ञान शिक्षा और परिणाम के मध्य सम्बन्धों के अन्वेषण का अध्ययन	2,000
29.	किशोरावस्था आदि के सम्बन्ध में पितृ अभिरुचि के साथ प्रतिमान का अध्ययन	7,000
30.	सीमा क्षेत्र में माध्यमिक स्कूलों की समस्या	500
	जोड़	2,49,555

परिशिष्ट—ङ

परिषद् द्वारा 1976-77 अवधि में व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को दिया गया अनुदान

क्रमसंख्या	व्यावसायिक संगठन	रकम (रुपयों में)
1.	सीटू कौंसिल ऑफ ऐज्यूकेशनल रिसर्च, मद्रास	3,000
2.	भारतीय गणितीय अध्यापक संघ, मद्रास	5,000
3.	गणितीय शिक्षण सुधार संघ, कलकत्ता	850
4.	राष्ट्रीय पितृ-अध्यापक संघ, नई दिल्ली	2,400
5.	ग्राम उद्योग मंडल, नई दिल्ली	10,000
6.	भारतीय भौतिकी संघ, बम्बई	3,000
7.	भारतीय विद्यालय-पूर्व शिक्षा संघ, नई दिल्ली	1,900
8.	अखिल भारतीय विज्ञान अध्यापक संघ, नई दिल्ली	6,343
9.	भारतीय कार्यक्रमित अवबोधन संघ, नई दिल्ली	4,500
10.	आल इण्डिया फेडरेशन ऑफ ऐज्यूकेशनल एसोसिएशन, नई दिल्ली	5,000
11.	राष्ट्रीय पितृ-अध्यापक संघ, नई दिल्ली	3,500
	कुल	45,493

परिशिष्ट—च

अन्तर्राष्ट्रीय और विनिमय कार्यक्रमों में प्रतिभागिता

(अ) द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के अन्तर्गत परिषद् के अधिकारियों की विदेश में प्रति-नियुक्ति

1. डा० एस० ए० हुसैन, प्रवक्ता उर्दू, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल ने 16 फरवरी से 3 जून, 1976 तक कार्य-अनुभव के क्षेत्र में अध्ययन हेतु ईरान का भ्रमण किया।
2. श्री एस० ए० कुरैशी, प्रवक्ता कृषि, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर ने 16 फरवरी से 3 जून, 1976 तक कार्य-अनुभव के क्षेत्र में अध्ययन हेतु ईरान का भ्रमण किया।
3. श्रीमती रक्षा सैनी, प्रवक्ता स्कूल शिक्षा विभाग ने 4 मई से 15 मई, 1976 तक रूस में प्रवर्तक कार्य के केन्द्रों का अध्ययन करने हेतु रूस का भ्रमण किया।
4. प्रो० ए० के० शर्मा, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर ने 12 मई से 31 मई, 1976 तक अध्यापन के क्षेत्र में अध्ययन हेतु यूगोस्लाविया का भ्रमण किया।
5. श्री एस० सी० चौधरी, रीडर, कार्य अनुभव और शिक्षा व्यवसायीकरण एकक ने 31 मई से 13 जून, 1976 तक कार्य-अनुभव और शिक्षा व्यवसायिक के क्षेत्र में अध्ययन हेतु जर्मन गणतंत्रवादी महासंघ का भ्रमण किया।
6. श्री टी० जी० सत्यनारायणन्, प्रधान अध्यापक, डिमॉन्स्ट्रेशन, बहु-उद्देशीय स्कूल (क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर) ने 8 दिसम्बर, 1976 से 15 दिन के लिए यूगोस्लाविया के शिक्षा प्रणाली के अध्ययन हेतु यूगोस्लाविया का भ्रमण किया।

(आ) विदेशी नागरिकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

परिषद् द्वारा अफगानिस्तान से आये 28 प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के समूह के लिए 20 फरवरी से 31 मार्च, 1977 तक एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

1. इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भारत में प्राथमिक शिक्षा और उसमें किए गए विकास के विभिन्न पक्षों से प्रशिक्षार्थियों को परिचित कराना था। यह कार्यक्रम विदेश कार्य-मंत्रालय के आई० टी० ई० सी० कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित किया गया था।

2. परिषद् ने 2 भुटानी लड़कियों कुमारी सोनम ल्हामू और पेम शोधन के लिए एक पूर्व प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। यह पाठ्यक्रम 19 जुलाई, 1976 से शुरू हुआ था और 32 सप्ताह की अवधि के लिए था।
3. परिषद् ने 16 अक्टूबर, 1977 से 15 जनवरी, 1977 तक दो नेपाली अध्यापकों के लिए एक तीन मास के अध्ययन पाठ्यक्रम प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

(इ) उच्च प्रशिक्षण हेतु परिषद् अधिकारियों की विदेश में प्रति-नियुक्ति

1. डा० एल० सी० सिंह, रीडर, अध्यापक शिक्षा विभाग को यूनाइटेड किंगडम सरकार के अल्पकालीन कामन वैल्थ शिक्षा फैलोशिप योजना के अन्तर्गत अप्रैल 1976 में 3 महीने की अवधि के लिए कार्य-क्रमित अवबोधन के क्षेत्र में अध्ययन हेतु यूनाइटेड किंगडम में प्रति-नियुक्ति किया गया था।
2. श्री के० जे० खुराना, रीडर, विज्ञान एवं शिक्षा विभाग को यूनाइटेड किंगडम सरकार के कामन वैल्थ शिक्षा फैलोशिप कार्यक्रम के अन्तर्गत अप्रैल 1976 से 3 मार्च की अवधि के लिए पर्यावरण अध्ययनों के क्षेत्र में प्रशिक्षण हेतु प्रति-नियुक्त किया गया था।
3. प्रो० एम० एम० एस० अरोड़ा, प्रो० गणित, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग ने कामन वैल्थ शिक्षा फैलोशिप योजना के अन्तर्गत यूनाइटेड किंगडम में नव-गणित-अध्यापन के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त किया।
4. कुमारी इन्दु सेठ, प्रवक्ता शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र 12 अगस्त से 30 सितम्बर, 1976 तक टोकियो में यूनेस्को के जापानी राष्ट्रीय आयोग द्वारा आयोजित शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में उपस्थित रहने के लिए प्रति-नियुक्त किया गया।
5. डा० वी० जी० गुप्ता, प्रवक्ता क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर, युनाइटेड किंगडम सरकार की कामन वैल्थ शिक्षा फैलोशिप योजना के अन्तर्गत 14 सितम्बर, 1976 से जून 29, 1977 तक यूनाइटेड किंगडम में शैक्षिक प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रम में उपस्थित रहे।
6. डा० एम० एस० सेमर, प्रवक्ता क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर को युनाइटेड किंगडम सरकार की कामन वैल्थ शिक्षा फैलोशिप योजना के अन्तर्गत 21 सितम्बर, 1976 से 31 अगस्त, 1977 तक गणित शिक्षण के क्षेत्र में प्रशिक्षण हेतु यूनाइटेड किंगडम में प्रति-नियुक्त किया गया था।
7. श्रीमती वी० गुप्ता, स्नातकोत्तर अध्यापक, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय अजमेर, यूनाइटेड किंगडम सरकार के कामन वैल्थ शिक्षा फैलोशिप कार्यक्रम के अन्तर्गत यूनाइटेड किंगड़म ने 22 सितम्बर, 1976 से 25 जून, 1977 तक

जीव-विज्ञान में विशेषता प्राप्त करने हेतु विज्ञान शिक्षा की एसोसियेटशिप पाठ्यक्रम में उपस्थित रहीं।

8. डा० वी० एन० पी० श्रीवास्तव, प्रवक्ता क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर को यूनाइटेड किंगडम सरकार की कामन वैल्थ शिक्षा फैलोशिप योजना के अन्तर्गत 27 सितम्बर, 1976 से एक शैक्षणिक वर्ग के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रशिक्षण हेतु यूनाइटेड किंगडम में प्रति-नियुक्त किया गया था।

9. कुमारी पी० आर० ललिता, प्रवक्ता क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर को यूनाइटेड किंगडम सरकार की कामन वैल्थ शिक्षा फैलोशिप योजना के अन्तर्गत 4 अक्टूबर, 1976 से 1 जुलाई, 1977 तक विज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षण हेतु प्रति-नियुक्त किया गया था।

10. डा० आई० एस० शर्मा, प्रवक्ता पाठ्यपुस्तक विभाग को कामन वैल्थ शिक्षा योजना के अन्तर्गत 5 अक्टूबर, 1976 से एक शैक्षणिक वर्ष के लिए पाठ्यचर्या विकास में एसोसियेटशिप दिलाने के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में उपस्थित रहने के लिए यूनाइटेड किंगडम में प्रति-नियुक्त किया गया था।

11. डा० एम० आर० चिलाना, प्रवक्ता क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर को कामन वैल्थ फैलोशिप योजना के अन्तर्गत 4 अक्टूबर, 1976 से एक शैक्षणिक वर्ष के लिए कामन वैल्थ और ओवरसीज शैक्षिक प्रशासन में डिप्लोमा हेतु यूनाइटेड किंगडम में प्रति-नियुक्त किया गया था।

(ई) अन्तर्राष्ट्रीय विचार-गोष्ठियों/कार्यशालाओं/सम्मेलनों में भाग लेने के लिए परिषद् के अधिकारियों की प्रति-नियुक्ति

1. प्रो० (श्रीमती) स्नेह शुक्ला, (कन्सलटैन्ट) परामर्शदाता, शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र को स्काटलेंड में दिनांक 5 अप्रैल से 8 अप्रैल, 1976 तक कार्यक्रमित अवबोधन और शैक्षिक प्रौद्योगिकी के संघ द्वारा आयोजित "इण्डीविजुअलाइज्ड लरनिंग" पर सम्मेलन में उपस्थित रहने के लिए प्रति-नियुक्त किया गया था।

2. प्रो० (श्रीमती) स्नेह शुक्ला, परामर्शदाता, शिक्षा प्रौद्योगिकी केन्द्र को 9 अप्रैल से 13 अप्रैल, 1976 तक मिल्टन कैन्स, ओपन यूनिवर्सिटी, लदंन में शैक्षिक दूरदर्शन और रेडियो में मूल्यांकन और अनुसंधान के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में उपस्थित रहने के लिए भी प्रति-नियुक्त किया गया था।

3. प्रो० (श्रीमती) परीन एच० मेहता, अध्यक्ष, शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग को 11 से 15 अप्रैल, 1976 से वुर्जवर्ग, जर्मनी में निदर्शन में उन्नति हेतु 7वीं गोलमेज सम्मेलन में उपस्थित रहने के लिए प्रति-नियुक्त किया गया था।

4. प्रो० एम० एम० चौधरी, अध्यक्ष, शिक्षण साधन विभाग को 2 से 6 मई, 1976 तक तेहरान में एशियाई प्रसारण यूनियन द्वारा शैक्षिक प्रसारण पर आयोजित यूनियन क्षेत्रीय कार्यशाला में उपस्थित रहने के लिए प्रति-नियुक्त किया गया था।
5. प्रो० रईस अहमद, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, न्यूयार्क में इण्डो० यू० एस० आयोग की बैठक में उपस्थित रहे और उन्होंने वहाँ की शैक्षिक संस्थाओं का 3 मई से 9 मई, 1976 तक भ्रमण किया।
6. प्रो० रईस अहमद, निदेशक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, लन्दन में 10 मई से 15 मई, 1976 तक शैक्षिक अनुसंधान के सम्बन्ध में कामन-वैल्थ बैठक में उपस्थित रहे।
7. प्रो० एच० एन० पण्डित, अध्यक्ष, नीति-नियोजन एवं मूल्यांकन एकक ने 30 मई से 13 जून, 1976 तक यूनाइटेड किंगडम में ओपन यूनिवर्सिटी सिस्टम का अध्ययन करने हेतु वहाँ का भ्रमण किया।
8. डा० पी० डी० भटनागर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर, जून 1976 में कोलाइड सस्पेन्स सांइस के 50वें सम्मेलन में और विश्वविद्यालय अध्यापन के दूसरे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में हीडलवर्ग, जर्मनी में उपस्थित रहे।
9. डा० शिब कुमार मित्रा, संयुक्त निदेशक, 29 जून से 6 जुलाई, 1976 तक थिलिस (रूस) में कार्य-क्रमित अवबोधन के मनोवैज्ञानिक आधार पर यूनेस्को के परि-संवाद में उपस्थित रहे।
10. प्रो० रईस अहमद, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् ने 7 जुलाई से 19 अगस्त, 1976 तक महाविद्यालय के निदेशक के रूप में सैद्धान्तिक भौतिकी के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र द्वारा आयोजित टरटीयरी-स्तरीय भौतिकी शिक्षा पर अन्तर्राष्ट्रीय ग्रीष्म महाविद्यालय में भाग लिया।
11. प्रो० डी० एस० रावत, अध्यक्ष स्कूल शिक्षा विभाग 17 से 19 अगस्त, 1976 तक सिंगापुर में पठन पर हुई छठी विश्व काँग्रेस में उपस्थित रहे।
12. डा० एल० सी० सिंह, रीडर, अध्यापक शिक्षा विभाग को 12 जुलाई से 16 जुलाई, 1976 तक टीलवर्ग यूनिवर्सिटी, हालैंण्ड में क्रास साँस्कृतिक अनुसंधान पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में उपस्थित रहने के लिए प्रति-नियुक्त किया गया था।
13. प्रो० ए० एन० बोस, अध्यक्ष, विज्ञान व गणित शिक्षा विभाग 20 से 26 जुलाई, 1976 तक सिंगापुर में आयोजित एशिया में विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिक्षा में उप-नीतियों और समस्याओं पर यूनेस्कों की क्षेत्रीय बैठक में उपस्थित रहे।
14. प्रो० एम० एम० एस० अरोड़ा, प्रो० गणित, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग को एक गणित अनुदेश पर अन्तर्राष्ट्रीय आयोग द्वारा आयोजित

तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय गणित शिक्षा काँग्रेस में भाग लेने के लिए प्रति-नियुक्त किया गया था। यह काँग्रेस कार्लसरूहे, पश्चिम जर्मनी में अगस्त 16 से 21, 1976 तक हुई थी।

15. डा० के० पी नायक, प्रधानाचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल को परिषद् द्वारा नौवीसाड, यूगोस्लाविया में दिनांक 14 से 16 सितम्बर, 1976 तक "राष्ट्रीय शिक्षा और शिक्षण में समानता" पर आयोजित संगोष्ठी में भाग लेने के लिए प्रति-नियुक्त किया गया था। यह संगोष्ठी यूनेस्को के यूगोस्लाविया आयोग द्वारा आयोजित की गई थी।

16. श्री रमेशचन्द, रीडर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग को जनसंख्या शिक्षा और शैक्षिक योजना के जनसंख्या पक्षों में सामूहिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के चरण-2 में उपस्थित रहने के लिए प्रति-नियुक्त किया गया था। यह पाठ्यक्रम एशिया में शिक्षा हेतु यूनेस्को के क्षेत्रीय कार्यालय, बैंकाक द्वारा 13 सितम्बर से 1 अक्टूबर, 1976 तक बैंकाक में आयोजित किया गया था।

17. श्री डब्ल्यू० ए० सिद्दीकी, प्रवक्ता क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर को एशिया में कार्य अभिविन्यसित शिक्षा हेतु पाठ्यचर्या विकास पर क्षेत्रीय फील्ड आपरेशनल सेमीनार में उपस्थित रहने के लिए प्रति-नियुक्त किया गया था। यह संगोष्ठी जापान की शैक्षिक अनुसंधान की राष्ट्रीय संस्थान द्वारा विकास हेतु शैक्षिक नवाचार के एशियाई केन्द्र के प्रति सहभाग में टोक्यो में 11 सितम्बर से 7 अक्टूबर, 1976 तक आयोजित की गई थी।

18. श्री एस० एल० गजवानी, रीडर स्कूल शिक्षा विभाग को एशिया में नैतिक शिक्षा हेतु पाठ्यचर्या विकास की द्वितीय क्षेत्रीय कार्यशाला में उपस्थित रहने के लिए प्रति-नियुक्त किया गया था। यह कार्यशाला एशिया में शैक्षिक अध्ययन हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान केन्द्र संस्थान द्वारा टोक्यो में 12 नवम्बर से 10 दिसम्बर, 1976 तक आयोजित की गयी थी।

19. श्री पी० के० भट्टाचार्य, रीडर प्रौद्योगिकी, कार्यशाला विभाग को कम कीमत स्कूल विज्ञान उपस्कर पर कामनवैल्थ क्षेत्रीय संगोष्ठी में उपस्थित रहने के लिए प्रति-नियुक्त किया गया था। यह संगोष्ठी कामन-वैल्थ सैक्ट्रीयेट, लंदन द्वारा नसाऊ, बाहमा में 15 से 26, नवम्बर 1976 तक हुई थी।

20. प्रो० पी० एन० दवे, प्रो० शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर को प्राथमिक स्तर पर स्कूल शिक्षा के वैकल्पिक उपागमों पर क्षेत्रीय संगोष्ठी में उपस्थित रहने के लिए प्रति-नियुक्त किया गया था। यह संगोष्ठी एशिया में शिक्षा हेतु यूनेस्को के क्षेत्रीय कार्यालय बैंकाक द्वारा मनीला में 6 से 14, दिसम्बर, 1976 तक आयोजित की गई थी।

21. प्रो० जी० एस० श्रीकान्तिया, अध्यक्ष पुस्तकालय और प्रलेखन एकक को शैक्षिक नवाचार हेतु प्रलेखन और सूचना समर्थन पर क्षेत्रीय संगोष्ठी में उपस्थित होने के लिए प्रति-नियुक्त किया गया था। यह संगोष्ठी एशिया में शिक्षा हेतु यूनेस्कों के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा बैंकाक में 15 से 21 फरवरी, 1977 तक हुई थी।

22. प्रो० एम० एम० चौधरी, अध्यक्ष, शिक्षण साधन विभाग को 28 से 31 मार्च, 1977 तक शैक्षिक प्रौद्योगिकी और कार्य-क्रमित अवबोधन के साहचर्य पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में उपस्थित रहने के लिए प्रति-नियुक्त किया गया था।

(उ) परिषद् के वे अधिकारी जो विशेष कार्यों के लिए विदेश यात्रा पर गए

1. डा० (श्रीमती) आर० मुरलीधरन, रीडर, शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग को अति-शैशव शिक्षा में प्रशिक्षण संगोष्ठी आयोजित करने के लिए 12 जुलाई, 1976 से दो मास के लिए परामर्शदाता (कन्सल्टेंट) के रूप में नालंदा में प्रति-नियुक्त किया गया था।

2. श्री एस० ए० कुरैशी, प्रवक्ता कृषि, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर को 6 नवम्बर 1976 से दो वर्ष की अवधि के लिए अवासा जूनियर कालेज में प्रोफेसर के रूप में विशेष कार्य हेतु अदिस अबाबा, इथोपिया में प्रति-नियुक्त किया गया था।

(ऊ) विदेश से आए परिषद् के अतिथि

1. परिषद् ने दिनाँक 18 अप्रैल से 1 मई, 1976 तक श्रीलंका से पाँच वैज्ञानिकों के दल को विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भारतीय संस्थाओं में भ्रमण का आयोजन किया।

2. श्री मोहम्मद आरीफ यादगारी, शिक्षा मंत्रालय काबुल, अफगानिस्तान की पाठ्यपुस्तक निदेशालय और पाठ्यचर्या में विज्ञान विशेषज्ञ पाठ्यचर्या सुधार में एक साप्ताहिक प्रेक्षणात्मक प्रशिक्षण में दिनाँक 23 मई से 4 जून, 1976 तक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के भ्रमण पर पधारे।

3. लीड्स विश्वविद्यालय, यूनाइटेड किंगडम के डा० आर० ओ० इराडेल 17 जनवरी, 1977 को परिषद् में पधारे।

4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने इण्डो-अफगान सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अन्तर्गत 19 अगस्त, 1976 से 15 अगस्त, 1976 तक दस अफगानी कर्मचारियों के एक दल के लिए शैक्षिक मूल्यांकन के क्षेत्र में एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया।

5. परिषद् ने दिनांक 6 से 11 दिसम्बर, 1976 तक भारत में व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा के कार्यक्रम का अध्ययन करने के लिए दो इरानी विशेषज्ञों मि० अलीफ असगान सैयादी और श्रीमती फ्रैंक अबीबी के एक अध्ययन-दौरे का आयोजन किया।

6. श्री पी० जे० गछाथी, शिक्षा मंत्रालय, केनया में स्थायी सचिव 10 फरवरी, 1977 को परिषद् में पधारे। उनके साथ शिक्षा उप-निदेशक श्री जे० एम० जी० महोरो आये थे।

7. यूनेस्को कार्यालय, बैंकाक के डा० ओगुन्नीयी, कु० डब्लू० रोकिका और डा० ए० जी० बेत्सकीय फरवरी, 1977 में परिषद् में पधारे।

8. शिक्षा में प्रशिक्षण के क्षेत्र में सहयोग/साहचर्य की सम्भावनाओं पर विचार-विमर्श करने के लिए श्री अलैक्जण्डर स्टीवैन्सन, उप-निदेशक और पुर्नरचना एवं विकास के अन्तर्राष्ट्रीय बैंक की आर्थिक-विकास संस्थान में ओवरसीज़ कार्यक्रम समन्वयकर्ता 17 फरवरी, 1977 को परिषद् में पधारे।

9. प्रो० अया अबुबाकर, उप-कुलपति अहमदे बैले यूनिवर्सिटी, ज़ारिया, नाइ-जीरिया, 1 से 13 मार्च, 1977 के मध्य भारत भ्रमण के अवसर पर परिषद् में पधारे।

10. विकास अध्ययन संस्थान, ससैक्स विश्वविद्यालय के डा० जौन आक्सैनहम, 5 से 10 मार्च, 1977 के मध्य भारत भ्रमण के अवसर पर परिषद् में पधारे।

11. आस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के डा० आरनोल्ड ई० रौस 11 मार्च, 1977 को परिषद् में पधारे और उन्होंने विज्ञान और गणित के क्षेत्र में विभिन्न गति-विधियों पर विचार-विमर्श किया।

12. डा० स्टीवर्ट टीन्समैन, शिक्षा अटैची यू० एस० स्थायी प्रतिनिधि अपीड, अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक रिपोर्टिंग सेवा आदि जैसे सहकारी-तन्तुजाल की स्थापना में यूनेस्को गतिविधियों का अध्ययन करने हेतु 15 मार्च, 1977 को परिषद् में पधारे।

परिशिष्ट—छ

1976-77 में निम्नलिखित शीर्षक की पुस्तकें प्रकाशित की गयीं (पुनः पुनर्मुद्रण का द्योतक है)

1. अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकें
   1. लैट अस लर्न इंग्लिश बुक 1 (एस० एस०) (पुनः)
   2. लैट अस लर्न इंग्लिश बुक 2 (एस० एस०) (पुनः)
   3. लैट अस लर्न इंग्लिश बुक 3 (एस० एस०) (पुनः)
   4. इंग्लिश रीडर बुक 1 (एस० एस०) (पुनः)
   5. इंग्लिश रीडर बुक 3 (एस० एस०) (पुनः)

2. विज्ञान पाठ्यपुस्तकें
   1. विज्ञान आओ करके सीखें पार्ट 3 (पुनः)
   2. विज्ञान आओ करके सीखें पार्ट 4 (पुनः)
   3. रसायन विज्ञान पार्ट 1 (पुनः)
   4. कैमिस्ट्री पार्ट 1 (पुनः)
   5. बायलौजी पार्ट 1 (पुनः)
   6. जीव विज्ञान 9-10 (पुनः)
   7. कैमिस्ट्री 9-10 (पुनः)
   8. साइंस इज डूइंग फॉर क्लास-4 (पुनः)
   9. फिजिक्स 9-10 (पुनः)
   10. साइंस इज डूइंग फॉर क्लास-5 (पुनः)
   11. लाइफ साइंसेज 9-10 (पुनः)
   12. भौतिकी भाग 1 (पुनः)
   13. रसायन विज्ञान 9-10 (पुनः)
   14. फिजिक्स पार्ट 3 (पुनः)
   15. कैमिस्ट्री पार्ट 1 (पुनः)
   16. जीव विज्ञान पार्ट 1 (पुनः)
   17. जीव विज्ञान पार्ट 2 (पुनः)
   18. जीव विज्ञान पार्ट 3 (पुनः)
   19. भौतिकी 9-10 (पुनः)
   20. भौतिकी भाग 3 (पुनः)
   21. फिजिक्स पार्ट 2 (पुनः)

3. गणित पाठ्यपुस्तकें

1. अर्थमैटिक-अलजबरा पार्ट-2 (पुनः)
2. अर्थमैटिक-अलजबरा पार्ट 3 (पुनः)
3. मैथेमैटिक्स पार्ट 2, 9-10 (पुनः)
4. गणित पार्ट 1, 9-10 (पुनः)
5. इनसाइट इनटु मैथेमैटिक्स बुक 1 (पुनः)
6. इनसाइट इनटु मैथेमैटिक्स बुक 2 (पुनः)
7. इनसाइट इनटु मैथेमैटिक्स बुक 5 (पुनः)
8. मैथेमैटिक्स पार्ट 1 (पुनः)
9. गणित पार्ट 2 (पुनः)
10. रेखागणित भाग 1 (पुनः)
11. रेखागणित भाग 3 (पुनः)
12. ज्यौमैट्री पार्ट 2 (पुनः)
13. ज्योमैट्री पार्ट 3 (पुनः)

4. सामाजिक विज्ञान

1. इंडिपैंडेंट इंडिया (पुनः)
2. माडर्न इंडिया (उर्दू)
3. मध्यकालीन भारत (पुनः)
4. मिडीवियल इंडिया (पुनः)
5. यूरोप एण्ड इंडिया (पुनः)
6. सामाजिक अध्ययन—हमारा देश भारत 1 (पुनः)
7. इण्डिया ऑन दी मूव (पुनः)
8. भारत विकास की ओर (पुनः)
9. अफ्रीका और एशिया (पुनः)
10. मैन एण्ड एनवारनमैंट
11. मनुष्य और वातावरण
12. आस्ट्रेलिया और अमरीका (पुनः)
13. अफ्रीका एन्ड एशिया (पुनः)
14. माडर्न इण्डिया (पुनः)
15. यूरोप एण्ड इण्डिया (उर्दू)
16. शासन और संविधान (पुनः)
17. आधुनिक भारत कक्षा 10 के लिए (पुनः)
18. मानव समाज का इतिहास (पुनः)
19. कदीम हिन्दुस्तान (उर्दू)
20. यूरोप और भारत (पुनः)
21. आवर कन्ट्री इंडिया बुक 1

5. हिन्दी पाठ्यपुस्तकें
    1. राष्ट्र भारती भाग 1 (पुनः)
    2. राष्ट्र भारती भाग 2 (पुनः)
    3. राष्ट्र भारती भाग 3 (पुनः)
    4. काव्य-भारती (पुनः)
    5. कहानी संकलन (पुनः)
    6. आओ पढ़ें और सीखें—मेरी चौथी पुस्तक
    7. आओ पढ़ें और खोजें (पुनः)

6. अंग्रेजी वर्कबुक
    1. वर्कबुक टु लैट अस लर्न इंग्लिश बुक 1 (एस० एस०)
    2. वर्कबुक टु लैट अस लर्न इंग्लिश बुक 2 (एस० एस०)
    3. वर्कबुक टु लैट अस लर्न इंग्लिश बुक 3 (एस० एस०)
    4. वर्कबुक टु इंग्लिश रीडर बुक 1 (एस० एस०)
    5. वर्कबुक टु इंग्लिश रीडर बुक 2 (एस० एस०)
    6. वर्कबुक टु इंग्लिश रीडर बुक 3 (एस० एस०)

7. इंग्लिश टीचर्स गाइड
    1. टीचर्स गाइड फॉर इंग्लिश रीडर बुक 2 (जी० एस०)
    2. टीचर्स गाइड फॉर इंग्लिश रीडर बुक 5 (एस० एस०)

8. हिन्दी वर्कबुक (अभ्यास पुस्तिकाएँ)
    1. मेरी अभ्यास पुस्तिका बुक 1
    2. मेरी अभ्यास पुस्तिका बुक 3
    3. मेरी अभ्यास पुस्तिका (रानी, मदन, अमर)

9. सप्लीमेंटरी रीडर्स
    1. दि माइक्रोब्स
    2. मिर्जा ग़ालिब
    3. संत तुकाराम
    4. कानून संबंधी व्यवसाय
    5. हमारा स्वास्थ्य रक्षक
    6. आर्किटैक्ट, सिविल इंजीनियर और अन्य कर्मचारी
    7. यातायात के कर्मचारी
    8. लिपिक वर्ग के व्यवसाय
    9. भारत की कथाएं
    10. जन जातीय वीरों का जीवन-चरित्र

10. रिपोर्ट, रिसर्च मोनोग्राफ्स और अन्य प्रकाशन

1. एन० सी० ई० आर० टी० ऐन्युएल रिपोर्ट 1974-75
2. रा० शै० अ० प्र० प०, वार्षिक रिपोर्ट 1974-75
3. प्राइमरी टीचर करिकुलम
4. दस-वर्षीय स्कूल पाठ्यचर्या
5. उच्चतर माध्यमिक शिक्षा और इसका व्यवसायीकरण
6. भारतीय शिक्षा में मार्गदर्शन और परामर्श
7. आडिट रिपोर्ट 1973-74
8. फील्ड स्टडीज़ इन सोशोलौजी ऑफ़ ऐज्यूकेशन—रिपोर्ट ऑन मैसूर
9. फील्ड स्टडीज़ इन सोशोलौजी ऑफ़ ऐज्यूकेशन—रिपोर्ट ऑन महाराष्ट्र
10. करिकुलम फौर दि टैन इयर (उर्दू)
11. शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार (संशोधित संस्करण)
12. युवकों के लिए स्कूल के बाहर क्रिया कलाप
13. उच्चतर माध्यमिक शिक्षा और इसका व्यवसायीकरण
14. कक्षा 3-5 के लिए पाठ्य-विवरण
15. कक्षा 9-10 के लिए पाठ्य-विवरण
16. कक्षा 6-8 के लिए पाठ्य-विवरण
17. मातृभाषा में पाठ्यपुस्तकों का निरूपण और मूल्यांकन
18. आडिट रिपोर्ट 1973-74 (हिन्दी)
19. स्ट्रक्चर एण्ड वर्किंग आफ़ साइंस माडल्स
20. नेशनल साइंस ऐग्ज़हीबीशन फॉर चिल्डरन 1976
21. यूनेस्को फोल्डर
22. मानव अधिकारों की विश्व घोषणा
23. सामाजिक परिवर्तन के लिए प्राथमिक शिक्षा
24. भारत में स्कूली पाठ्यचर्या में भाषाओं की स्थिति
25. दि करिकुलम फ़ॉर दि टैन इयर स्कूल (पुन:)
26. प्राथमिक शिक्षा की कुछ प्रवृत्तियां पक्ष
27. प्राथमिक शिक्षा के कुछ विशेष पक्ष
28. पाठ्य-पुस्तक पाण्डुलिपियों की योजना
29. अध्यापक शिक्षा—समस्या और परिप्रेक्ष्य—एक उपागम पत्र
30. शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार
31. राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा योजना—सूचना विवरणिका

32. भारत में शिक्षा में नवाचार—सेमिनार रिपोर्ट
33. भारत में शिक्षा में नवाचार—एक सूची
34. की नोट ऐड्रेस बाइ प्रो० रईस अहमद
35. ईथोलौजी एंड ऐज्यूकेशन – एन० आई० ई० लेक्चर सीरीज़
36. तरुण साहित्य सूची
37. नान-फरमल ऐज्यूकेशन फॉर ड्रौप आउट चिल्डरन एंड रूलर डिवलपमेंट
38. प्राथमिक स्तर पर अध्यापक शिक्षा का राष्ट्रीय सर्वेक्षण
39. पूर्व-प्रामिक अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या